दुनिया के सर्वहारा तथा तमाम
मेहनतकश जनता और उत्पीड़ित
राष्ट्रीयताओं की जनता एक हो!

लाल चिनगारी

वर्ष–13 अंक–35 अक्टूबर–दिसम्बर, 2017

मुखपत्र

बिहार–झारखण्ड
स्पेशल एरिया कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी
(माओवादी)

महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर एक कविता

आज से सौ वर्ष पहले
जमीन पर उतरा था
मार्क्सवाद के जनक
महान मार्क्स-एंगेल्स का सपना
लाखों-करोड़ों मजदूर-किसानों का सपना
शोषित-उत्पीड़ित वर्ग का सपना।

दुनिया के महान नेता व शिक्षक
कामरेड लेनिन-स्तालिन के कुशल नेतृत्व ने
पूरा किया था महान मार्क्स-एंगेल्स का सपना
संघर्षों की आग में तपी पार्टी
बोल्शेविक पार्टी के सही नेतृत्व ने
पूरा किया था मजदूर-किसानों का सपना
लाखों बहादूर साथियों की शहादत के बदौलत
पूरा किया था शोषित-उत्पीड़ितों का सपना।

सदियों से दबी-कुचली रूसी जनता ने
पहले उखाड़ा रूसी जारशाही को
और संपन्न किया बुर्जुआ क्रांति
फिर बिना थके व आराम किए
कूद पड़े समाजवादी क्रांति के संग्राम में
और आखिरकार, 7 नवंबर, 1917 को
रूस में फहरा दिया लाल झंडा।

महान रूसी समाजवादी क्रांति ने
मजदूर-किसानों को सौंप दी सत्ता
दुनिया में पहली बार हुआ था ऐसा
जब किसी देश की बागडोर हो
वहां के शोषित-उत्पीड़ितों के हाथों में।
पूरी दुनिया में मच गयी खलबली
कांप उठे दुनिया के साम्राज्यवादी
दुबक गये रूस के सामंत व पूंजीवादी
कल तक जिसे बता रहे थे ये
कपोल-कल्पित व अव्यवहारिक सपना
वही था अब उनकी मौत का सपना।

महान रूसी समाजवादी क्रांति ने
खींच दी पूरे विश्व में एक लकीर
पूरी दुनिया में शुरु हो गई लड़ाई
शोषण को मिटाने की लड़ाई
समाजवाद को लाने की लड़ाई
शोषणरहित समाज स्थापना की लड़ाई
ठीक 22 साल बाद यानी 1949 में
अर्द्ध-औपनिवेशिक व अर्द्ध-सामंती चीन में
महान कामरेड माओ के कुशल नेतृत्व में
सफल हुई दीर्घकालीन जनयुद्ध की लड़ाई।

आज जब मना रहे हैं हम
महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ
तो लड़ रहे हैं हम भी
अपने देश में दीर्घकालीन जनयुद्ध
महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्तालिन-माओ
दिखा रहे हैं हमें सही रास्ता
सही बोल्शेविक पार्टी भाकपा (माओवादी)
कर रही है लड़ाई का नेतृत्व
सत्ता के सबसे खूंखार पंजों से टकराते हुए
हमारे भी हजारों साथियों ने दी है कुर्बानी
स्थापित किया है हमने जनताना सरकार
लेकिन आज भी अधूरा है हमारा सपना।

रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ पर
हम और हमारी पार्टी ले रही है संकल्प
अपने देश में हम भी पूरा करेंगे
महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्तालिन-माओ का सपना
लड़ते रहेंगे तबतक, जबतक पूरा न हो जाता सपना।।

लाल चिनगारी

वर्ष-13, अंक: 35
अक्टूबर-दिसम्बर, 2017

विषय सूची:

1. सम्पादकीय 1
2. ऐ लाल फरेरे तेरी कसम 12
3. मास्को समारोह में कामरेड माओ का भाषण 13
4. कार्यकर्त्ताओं के बारे में 17
5. चीनी डॉक्टर की कहानी 22
6. नक्सलबाड़ी की 50वीं... 25
7. इक्कीसवीं सदी की गाय... 29
8. जीएसटी: प्रतिगामी कर... 34
9. एओबी प्रभारी का साक्षात्कार 41
10. कानूनी किताबें उनकी... 45
11. कहानी 50
12. कविताएं 52
13. बीजे सैक द्वारा जारी बुकलेट 57
14. पीएलजीए की महत्वपूर्ण कार्रवाइयों की रिपोर्ट 61

सहयोग राशि - 20 रूपये

सम्पादकीय

महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर रूसी क्रांति में निहित सारतत्वों की विश्वजनीन सच्चाई को सदा बुलंद रखें और अपने देश की विशिष्टता के अनुसार उसे व्यवहार में लागू करें!

(महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की इआरबी सचिव कामरेड किसान के आह्वान को ही हम इस अंक के संपादकीय के रूप में दे रहे हैं, इस लेख में महान रूसी समाजवादी क्रांति का इतिहास तो है ही, साथ में रूसी क्रांति के ऐतिहासिक सबक, रूसी क्रांति की धारावाहिकता के अभिन्न अंश के रूप में ही चीनी क्रांति व रूसी व चीनी क्रांति की धारावाहिकता के अभिन्न अंश के रूप में ही हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी भारतीय क्रांति के बारे में भी तथ्यपूर्ण जानकारियां है। साथ-ही-साथ वर्त्तमान समय में हमारे देश के ज्वलंत मुद्दों को भी रेखांकित किया गया है। अत: लाल चिनगारी संपादकमंडल आप तमाम पार्टी सदस्य, पीएलजीए सदस्य, संयुक्त मोर्चा के सदस्य व तमाम पाठकों से अपील करता है कि इस आह्वान का व्यक्तिगत व सामूहिक अध्ययन करें तथा महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ को पूरे उत्साह के साथ 7 नवंबर से 13 नवंबर, 2017 तक मनाएं।

- संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

विदित है कि 1917 के 7 नवम्बर रूस तथा दुनिया के मजदूर-किसान व मेहनतकश अवाम के लिए एक ऐसा दिन के बतौर सामने आया, जिस दिन वे प्रत्येक वर्ष वर्ग शोषण व वर्ग अत्याचार से मुक्ति मार्ग की ओर एक कदम अग्रगति के रूप में खुशियां मनाने के साथ-साथ एक शोषणविहीन समाज की स्थापना की शपथ भी लेते हैं। इसे और सुस्पष्ट कर कहने से रूसी क्रांति को वे पूंजीवाद के सीमाहीन शोषण व प्रचंड जुल्म से मुक्ति की ओर अग्रसर होने के रास्ते में एक मील का पत्थर जैसा विजय के रूप में देखते हैं। वाकई में जब से समाज में वर्गों का उदय हुआ और वर्ग संघर्ष की शुरुआत हुई, तब से दास समाज में दास-मालिक के खिलाफ दास विद्रोह और सामंती समाज में भू-स्वामियों के खिलाफ बुर्जुआ क्रांति की बात जगजाहिर है। पर, दास विद्रोह हो या बुर्जुआ क्रांति- ये सब के जरिए समाज-व्यवस्था में जरूर बदलाव आया, मगर पुराने शोषक लोग ही नए रुपों में शोषक ही बने रहे। उदाहरणस्वरुप, दास विद्रोह के बाद दास मालिक लोग ही सामंती समाज में

भू-स्वामी में बदल गये और दास लोग बदल गये भू-दास में। फिर, सामंती समाज में जब बुर्जुआ क्रांति के जरिए बुर्जुआ व्यवस्था स्थापित हुई, उसमें भी पुराने शोषक वर्ग ही रंग बदल कर पूंजीपति वर्ग बन गए और भू-दास लोग मजदूर बन गये यानी पुराना विद्रोह या क्रांति के जरिए समाज-व्यवस्था में बुनियादी बदलाव जरुर आया, पर शोषक वर्ग शोषक ही और शोषित वर्ग शोषित ही रह गए। सच कहा जाए तो उक्त विद्रोह व क्रांति के जरिए वर्गों के बीच आपसी संबंध में व रूपों में कुछ बदलाव आने के बावजूद अंतर्वस्तु में कोई बुनियादी गुणात्मक बदलाव नहीं आया। लिहाजा कहा जा सकता है कि रूसी नवम्बर क्रांति ही दुनिया की सबसे पहली ऐसी क्रांति है, जिससे पुराने शोषक-शासक वर्गों का तख्ता उलट कर मजदूर वर्ग का तथा मजदूर- किसान-मेहनतकशों का राज स्थापित हुआ। अत: इसे मील का पत्थर अथवा प्रमाण-चिन्ह या प्रमाणांक (Hall mark) या वर्ग संघर्ष के इतिहास में प्रचंड गुणात्मक विशिष्टताओं से परिपूर्ण एक विशेष घटना इत्यादि के रूप में वर्णन भी किया गया है। का. माओ ने कहा, ''अक्टूबर समाजवादी क्रांति ने न केवल रूस के इतिहास में बल्कि विश्व के इतिहास में भी एक नए युग का सूत्रपात किया है'' (अंतरविरोध के बारे में- का. माओ)। पुन: माओ ने रूसी क्रांति की 40वीं वर्षगांठ पर 1957 के 6 नवम्बर को रूस में यू.एस.एस.आर. के सुप्रीम सोवियत (जिसमें सोवियत यूनियन और तमाम राष्ट्रीयता के सोवियत शामिल थीं) के सामने एक भाषण में कहा, ''जैसेकि हमारे क्रांतिकारी शिक्षक का. लेनिन ने इस बात को दर्शाया है कि 40 वर्षों पहले सोवियत जनता द्वारा संचालित महान रूसी क्रांति विश्व इतिहास में एक नया युग की शुरूआत की है. ..... इतिहास में अनेकों प्रकार की क्रांतियां देखी गयीं। पर, अक्टूबर समाजवादी क्रांति के साथ तुलना करने लायक एक भी नहीं है। विगत हजारों वर्षों से समूचे विश्व के श्रमजीवी जनता और प्रगतिशील ताकतें (मानवता) एक ऐसा समाज की स्थापना की बात व सपने संजोये हुए थे, जहां मानव द्वारा मानव पर शोषण नहीं रहेगा। इस सपने का कार्यान्वयन तब-ही संभव हुआ, जब दुनिया के एक-चौथाई क्षेत्र में पहली बार अक्टूबर क्रांति सफल हुई।''

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के जरिए ही सबसे पहले महान मार्क्स-एंगेल्स ने पूंजीवाद का ध्वस्त होने व समाजवाद की स्थापना होने की अनिवार्यता की बात कही

दुनिया के मजदूर-किसान-मेहनतकश जनता सहित आम जनता इस बात से अवगत हैं कि पूंजीवाद को ध्वस्त कर समाजवाद की स्थापना होना अनिवार्य है, का सिद्धांत महान मार्क्स ने ही सबसे पहले सामने लाया था। जैसाकि कम्युनिस्ट घोषणापत्र में हम पाते हैं कि ''बुर्जुआ वर्ग सर्वोपरि अपनी कब्र खोद देनेवालों को ही पैदा करता है। उनका पतन और सर्वहारा की विजय, दोनों समान रूप से अवश्यंभावी हैं।'' कम्युनिस्ट घोषणापत्र ने हमें सिखाया है कि, ''कम्युनिस्टों का तात्कालिक लक्ष्य वही है, जो अन्य सभी सर्वहारा पार्टियों का है अर्थात सर्वहारा का एक वर्ग के रूप में गठन, बुर्जुआ प्रभुत्व का तख्ता उलटना, सर्वहारा द्वारा राजनीतिक सत्ता का जीता जाना'' [मार्क्स-एंगेल्स- कम्युनिस्ट घोषणापत्र]।

यद्यपि महान मार्क्स-एंगेल्स ने दुनिया के सामने इस ऐतिहासिक सिद्धांत को लाया। पर, उस सिद्धांत को व्यवहार में कार्यान्वित कर पाने के लिए यानी बुर्जुआ प्रभुत्व का तख्ता उलटकर सर्वहारा द्वारा राजनीतिक सत्ता का जीता जाने के लिए 1917 तक इंतजार करना पड़ा। हालांकि, 1871 में पेरिस कम्यून के सर्वहारा वर्ग ने राजनीतिक सत्ता हथियाने के लिए पहली बार वीरतापूर्ण संघर्ष किया था। मगर, पूंजीपति वर्ग के सशस्त्र दमन के परिणामस्वरुप उसमें हार खानी पड़ी।

दरअसल महान मार्क्स-एंगेल्स के ऐतिहासिक सिद्धांत का व्यावहारिक रूप के तौर पर कहा जा सकता है कि सर्वहारा क्रांति, जो मानव इतिहास की सबसे महान क्रांति है और निजी मिल्कियत की जगह सार्वजनिक मिल्कियत की स्थापना करती है तथा तमाम शोषण के व्यवस्थाओं और तमाम शोषक वर्गों को उन्मूलन कर देती है। यह बिलकुल स्वाभाविक है कि ऐसी भूकम्पकारी क्रांति को गंभीर और भीषण वर्ग-संघर्षों से गुजरना पड़े तथा अनिवार्य रूप से एक ऐसा लम्बा और टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता तय करना पड़े, जिसमें जगह-जगह असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

का. लेनिन ने भी एक बार कहा था:

-अगर हम इस मामले पर इसके सारतत्व की दृष्टि से विचार करें, तो क्या इतिहास में कभी ऐसा भी हुआ है कि किसी नयी उत्पादन प्रणाली ने लम्बे समय तक एक के बाद एक असफलता का मुंह देखे बिना, गलतियां किये बिना और ठोकरें खाए बिना फौरन अपनी जड़ें जमा ली हों? (लेनिन- एक महान शुरुआत)

रूसी क्रांति का इतिहास भी टेढ़-मेढ़ा व उतार-चढ़ाव की तीन क्रांतियों के दौर से गुजरा

जाहिर है कि महान लेनिन व स्तालिन और उनकी प्रत्यक्ष देख-रेख में संचालित सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के नेतृत्व में 1917 के 7 नवम्बर (पुराने कैलेंडर के अनुसार 25 अक्टूबर) की समाजवादी क्रांति सफल हुई। पर, एक ही चोट या कोशिश में यह समाजवादी क्रांति विजय हासिल नहीं कर सकी। बल्कि, तीन क्रांतियों से गुजरते हुए ही 1917 की समाजवादी क्रांति सफल हुई। ये तीन क्रांतियां थीं: 1905 की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति, फरवरी 1917 की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति और नवम्बर 1917 की समाजवादी क्रांति।

पर, पहली 1905 की रूसी क्रांति का अंत पराजय में हुआ। जिन कारणों से यह पराजय हुई, उसे गहराई से समझना

हमारे लिए बहुत जरुरी है, क्योंकि हम भी भारतीय क्रांति के मौजूदा दौर में उतार-चढ़ाव, पीछे हटना, धक्का खाना आदि का सामना कर रहे हैं। जो भी हो, पहली रूसी क्रांति की पराजय के मूल कारणों को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) ने समीक्षा करते हुए जिन बातों को सामने लाया, संक्षेप में वे हैं:

1. क्रांति में जारशाही के खिलाफ अभी मजदूरों और किसानों का पक्का सहयोग कायम नहीं हुआ था।
2. किसानों का काफी बड़ा हिस्सा जारशाही का खात्मा करने के लिए मजदूरों से सहयोग करने में अनिच्छुक था। उसका असर फौज के व्यवहार पर भी पड़ा। फौज में ज्यादातर सिपाहियों की वर्दी पहने हुए किसानों के बेटे थे। जार की फौज के कई दस्तों में असंतोष और विद्रोह फूट पड़ा, लेकिन अधिकांश सैनिकों ने अभी भी मजदूरों की हड़तालें और विद्रोह दबाने में जार की मदद की।
3. मजदूरों की कार्रवाई भी काफी सुगठित नहीं थी। क्रांतिकारी संघर्ष में वे 1901 में ज्यादा सक्रिय रूप से हिस्सा लेने लगे, लेकिन उस समय तक मजदूर वर्ग का हिरावल काफी कमजोर हो चुका था।
4. मजदूर वर्ग क्रांति की पहली और प्रमुख शक्ति था। लेकिन मजदूर वर्ग की पार्टी की कतारों में आवश्यक एकता और दृढ़ता का अभाव था। रू.सा.ज.म.पा. -मजदूर वर्ग की पार्टी-दो गुटों में बंटी हुई थी: बोल्शेविक और मेंशेविक। बोल्शेविक सुसंगत क्रांतिकारी लाइन में चलते थे। उन्होंने जारशाही का खात्मा करने के लिए मजदूरों का आह्वान किया था। मेंशेविकों ने अपनी समझौतापरस्त कार्यनीति से क्रांति में बाधा डाली, मजदूरों के बड़ी तादाद के मन में उलझन पैदा कर दी और मजदूर वर्ग में बाधा डाली। इसलिए, मजदूरों ने क्रांति में हमेशा एकजुट होकर काम नहीं किया। अभी खुद अपनी कतारों में एकता नहीं होने की वजह से मजदूर वर्ग क्रांति का सच्चा नेता नहीं बन सका।
5. निरंकुश जारशाही को 1905 की क्रांति का दमन करने में पश्चिमी यूरोप के साम्राज्यवादियों से मदद मिली।
6. सितम्बर 1905 में, जापान से शांति-संधि हो जाने पर जार को काफी मदद मिली। संधि होने से जार का पाया मजबूत हुआ।

अब, दूसरी क्रांति पर नजर डाली जाए:

दूसरी क्रांति तो फरवरी 1917 में हुई, जिसके जरिए जारशाही का पतन हुआ तथा मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतों का निर्माण हुआ और साथ ही साथ अस्थायी सरकार का निर्माण हुआ तथा दोहरी सत्ता का उभार आयी। इस तरह फरवरी की पूंजीवादी-जनवादी क्रांति की जीत हुई। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) ने दिखाया है कि ''क्रांति की जीत इसलिए हुई कि इसका हिरावल मजदूर वर्ग था। फौजी वर्दी पहने हुए और 'शांति' रोटी और आजादी मांगते हुए, लाखों किसानों के आंदोलन का मजदूर वर्ग ने नेतृत्व दिया। सर्वहारा वर्ग के दृढ़ नेतृत्व ने ही क्रांति की सफलता निश्चित कर दी।''

क्रांति के प्रारम्भिक दिनों में का. लेनिन ने लिखा था:

''क्रांति मजदूरों ने की थी। मजदूरों ने वीरता दिखाई; उन्होंने अपना खून बहाया; अपने साथ मेहनतकश और गरीब जनता को बहा ले गये।''

पहली क्रांति ने, 1905 की क्रांति ने, दूसरी क्रांति फरवरी 1917 की क्रांति की तुरंत कामयाबी के लिए रास्ता साफ कर दिया था।

का. लेनिन ने लिखा:

1905-1907 के तीन वर्षों में ही सोवियतें बन गयीं। विजयी क्रांति को मजदूर और फौजी प्रतिनिधियों की सोवियतों के समर्थन का आधार मिला। जिन मजदूरों और सैनिकों ने विद्रोह किया, उन्होंने मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतें बना लीं। 1905 की क्रांति ने दिखला दिया कि सोवियतें सशस्त्र विद्रोह का साधन थीं, और साथ ही एक नयी क्रांतिकारी सत्ता का बीज थीं। आम मजदूर जनता के मन में सोवियतों की बात जीवित रहीं और जैसे ही जारशाही का तख्ता उलटा गया, वैसे ही उसे अमल में ले आयी। अंतर इतना था कि 1905 में सिर्फ मजदूर प्रतिनिधियों की सोवियतें बनी थीं, जबकि फरवरी 1917 में बोल्शेविकों की पहलकदमी पर मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतें बनीं।

मगर, सोवियत की कार्यकारिणी समिति के समाजवादी-क्रांतिकारी और मेंशेविक नेताओं ने सत्ता पूंजीवादियों को सौंप दी। फिर भी, जब मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों ने यह सब जाना, तो उसके बहुमत ने, बकायदा बोल्शेविकों के विरोध के बावजूद, समाजवादी-क्रांतिकारी और मेंशेविक नेताओं के काम को पास कर दिया।

इस तरह रूस में एक नयी राज्यसत्ता पैदा हुई, जिसमें लेनिन के शब्दों में, ''पूंजीपतियों और पूंजीपति बन जाने वाले जमींदारों'' के प्रतिनिधि शामिल थे।

लेकिन पूंजीवादी हुकूमत के साथ-साथ, एक दूसरी सत्ता मौजूद थी-मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत। सोवियत में सैनिक प्रतिनिधि ज्यादातर किसान थे, जो युद्ध के लिए भर्ती किये गये थे। मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत जारशाही के खिलाफ मजदूरों और किसानों के सहयोग की संस्था थी और इसके साथ ही उनकी सत्ता की संस्था थी, मजदूर वर्ग और किसानों के अधिनायकत्व की

सत्ता थी।

इसका फल यह हुआ कि दो सत्ताएं, दो अधिनायकत्व विचित्र ढंग से आपस में गुंथ गये: पूंजीपतियों का अधि नायकत्व, जिसकी प्रतिनिधि अस्थायी सरकार थी और मजदूरों और किसानों का अधिनायकत्व, जिसकी प्रतिनिधिमजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियत थी। इसका नतीजा निकला दोहरी-सत्ता।

अब, तीसरी क्रांति यानी रूसी नवंबर समाजवादी क्रांति पर नजर डाली जाए:

पहले यह हमें याद रखना चाहिए कि पहला विश्वयुद्ध 1914 से 1918 तक चला और रूसी समाजवादी क्रांति 1917 के नवम्बर में सफल हुई। किस प्रक्रिया के जरिए रूसी नवम्बर क्रांति सफल हुई, उसके बारे में कहा जा सकता है कि 1917 के 3 अप्रैल की रात को का. लेनिन ने एक भाषण दिया, जिसमें उन्होंने समाजवादी क्रांति की विजय के लिए लड़ने के लिए आम जनता का आह्वान किया। 'समाजवादी क्रांति जिंदाबाद'- इन शब्दों के साथ का. लेनिन ने अपना यह भाषण खत्म किया। इसी समय का. लेनिन ने युद्ध और क्रांति के विषय पर बोल्शेविकों की एक मीटिंग में रिपोर्ट दी और उसके बाद मेंशेविकों और बोल्शेविकों की एक मिली-जुली मीटिंग में रिपोर्ट की सैद्धांतिक स्थापनाओं (थीसीस) को दोहराया। ये का. लेनिन की मशहूर अप्रैल थीसीस थी, जिससे पार्टी और सर्वहारा वर्ग को पूंजीवादी क्रांति से समाजवादी क्रांति की तरफ बढ़ने के लिए एक स्पष्ट क्रांतिकारी नीति मिली।

नवंबर 1917 से फरवरी 1918 तक, देश के विशाल प्रदेशों में सोवियत क्रांति इतनी तेजी से फैली कि का. लेनिन ने उसे सोवियत सत्ता का 'विजय' यात्रा कहा।

महान नवंबर समाजवादी क्रांति की विजय हुई:

रूस में समाजवादी क्रांति की इस अपेक्षाकृत आसान विजय के कई कारण थे। नीचे संक्षेप में लिखे हुए मुख्य कारण ध्यान देने योग्य हैं:

(1) नवंबर क्रांति का दुश्मन अपेक्षाकृत ऐसा कमजोर, ऐसा असंगठित और राजनीतिक रूप से ऐसा अनुभवहीन था जैसे कि रूसी पूंजीपति। रूसी पूंजीपति आर्थिक रूप से अब भी कमजोर थे और पूरी तरह सरकारी ठेकों पर निर्भर थे। उनमें राजनीतिक आत्मनिर्भरता और पहलकदमी इतनी नहीं थी कि परिस्थिति से निकलने का रास्ता ढूंढ़ सके। मसलन, बड़े पैमाने पर राजनीतिक गुटबंदी और राजनीतिक दगाबाजी में उन्हें फ्रांसीसी पूंजीपतियों का सा तजुर्बा नहीं था और नहीं अंग्रेज पूंजीपतियों की तरह उन्होंने विशद रूप से सोचे हुए चतुर समझौता करने की शिक्षा पायी थी। फरवरी क्रांति ने जार का तख्ता उलट दिया था और सत्ता खुद पूंजीपतियों के हाथ में आ गयी थी लेकिन बुनियादी तौर से घृणित जार की नीति पर ही चलने के सिवा उन्हें और कुछ न सूझ पड़ा। जार की तरह, उन्होंने 'विजय तक युद्ध करने' का समर्थन किया, हालांकि युद्ध चलाना देश की शक्ति से परे था और जनता तथा फौज दोनों युद्ध से बुरी तरह से चूर हो चुके थे। जार की तरह कुल मिलाकर वे भी बड़ी जागीरी जमीन बनाये रखने के पक्ष में थे, हालांकि जमीन की कमी और जमींदारों के जुए के बोझ से किसान मर रहे थे। जहां तक उनकी मजदूर नीति का संबंध था, वे मजदूर वर्ग से नफरत करने में जार का भी कान काट चुके थे। उन्होंने कारखानेदार के जुए को बनाये रखने और मजबूत करने की कोशिश नहीं की, बल्कि उन्होंने बड़े पैमाने पर तालेबंदी करके उसे असहनीय बना दिया।

कोई ताज्जुब नहीं कि जनता ने जार की नीति और पूंजीपतियों की नीति में बुनियादी भेद नहीं देखा और जो घृणा उसके दिल में जार के लिए थी वही पूंजीपतियों की अस्थायी सरकार के लिए हो गयी।

जब तक समाजवादी-क्रांतिकारियों और मेंशेविक पार्टियों का थोड़ा-बहुत असर जनता पर था, तब तक पूंजीपति उन्हें पर्दे की तरह इस्तेमाल कर सकते थे और अपनी सत्ता कायम रख सकते थे। लेकिन, जब मेंशेविकों और समाजवादी-क्रांतिकारियों ने जाहिर कर दिया कि वे साम्राज्यवादी पूंजीपतियों के दलाल हैं और इस तरह जनता में उन्होंने अपना असर खो दिया, तब पूंजीपतियों और उनकी अस्थायी सरकार का कोई मददगार नहीं रहा।

(2) नवंबर क्रांति का नेतृत्व रूस के मजदूर वर्ग जैसे क्रांतिकारी वर्ग ने किया। यह ऐसा वर्ग था जो संघर्ष की आंच में तप चुका था, जो थोड़ी ही अवधि में दो क्रांतियों से गुजर चुका था और तीसरी क्रांति के शुरू होने से पहले शांति, जमीन, स्वाधीनता और समाजवाद के लिए संघर्ष में जनता का नायक माना जा चुका था। अगर क्रांति का नेता रूस के मजदूर वर्ग जैसा न होता, ऐसा नेता जिसने जनता का विश्वास पा लिया था, तो मजदूरों और किसानों की मैत्री न होती और इस तरह की मैत्री के बिना नवंबर क्रांति की विजय असम्भव होती।

(3) रूस के मजदूर वर्ग को क्रांति में गरीब किसानों जैसा समर्थ साथी मिला, जो किसान जनता का भारी बहुसंख्यक भाग था। सर्वहारा और गरीब किसानों

की मैत्री दृढ़ हुई। मजदूर वर्ग और गरीब किसानों की इस मैत्री के कायम होने से, मध्यम किसानों की गति निश्चित हो गयी। ये मध्यम किसान बहुत दिन तक ढुलमुल रहे थे और नवंबर विद्रोह के शुरू होने से पहले ही पूरी तरह क्रांति की तरफ आये थे और उन्होंने गरीब किसानों से नाता जोड़ा था। कहना न होगा कि इस मैत्री के बिना नवंबर क्रांति में विजय न होती।

(4) मजदूर वर्ग का नेतृत्व राजनीतिक संघर्षों में तपी और परखी हुई सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) जैसी पार्टी ने किया था। यह पार्टी इतनी साहसी पार्टी थी कि निर्णायक हमले में जनता का नेतृत्व कर सके। शांति के लिए आम जनवादी आंदोलन, जागीरी जमीन छीनने के लिए किसानों का जनवादी आंदोलन, राष्ट्रीय स्वाधीनता और राष्ट्रीय समानता के लिए उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं का आंदोलन और पूंजीपतियों का तख्ता उलटने के लिए और सर्वहारा अधिनायकत्व कायम करने के लिए सर्वहारा वर्ग का समाजवादी आंदोलन-इन सबको ऐसी ही पार्टी एक सामान्य क्रांतिकारी धारा में मिला सकती थी।

इसमें संदेह नहीं कि इन विभिन्न क्रांतिकारी धाराओं के एक ही सामान्य शक्तिशाली क्रांतिकारी धारा में मिलने से रूस में पूंजीवाद की तकदीर का फैसला कर दिया।

(5) नवंबर क्रांति ऐसे समय आरम्भ हुई जबकि साम्राज्यवादी युद्ध अभी जोरों पर था, जबकि प्रमुख पूंजीवादी राज्य दो विरोधी खेमें में बंटे हुए थे और जब परस्पर युद्ध में फंसे रहने और एक-दूसरे की जड़ें काटने में लगे रहने से, वे 'रूसी मामलों' में सफलता से दखल नहीं दे सकते थे और सक्रिय रूप से नवंबर क्रांति का विरोध नहीं कर सकते थे।

नवंबर समाजवादी क्रांति ने सर्वहारा अधिनायकत्व कायम किया और विशाल देश की हुकूमत का काम मजदूर वर्ग को सौंप दिया। इस तरह से उसे शासक वर्ग बना दिया।

इस तरह नवंबर 1917 की रूसी समाजवादी क्रांति ने मनुष्य जाति के इतिहास में एक नया युग, सर्वहारा क्रांतियों के युग आरम्भ किया।

रूसी क्रांति के ऐतिहासिक सबक

रूसी क्रांति के ऐतिहासिक सबकों के संबंध में दो/चार बातें इस प्रकार हैं:

(1) सर्वहारा क्रांति की विजय, सर्वहारा अधिनायकत्व की विजय सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी के बिना असम्भव है। सिर्फ नयी तरह की पार्टी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी (अभी मा-ले-माओवादी पार्टी), सामाजिक क्रांति की पार्टी, पूंजीपतियों के खिलाफ निर्णायक युद्ध के लिए सर्वहारा को तैयार कर सकने वाली और सर्वहारा क्रांति की विजय संगठित कर सकने वाली पार्टी ही ऐसी पार्टी हो सकती है;

(2) मजदूर वर्ग की पार्टी वर्ग नेता की अपनी भूमिका तब तक पूरी नहीं कर सकती, जब तक कि वह मजदूर आंदोलन के आगे बढ़े हुए सिद्धांत, (अभी मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी) सिद्धांत में माहिर नहीं होती।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धांत समाज के विकास का विज्ञान है, मजदूर-किसान व मेहनतकशों के आंदोलन का विज्ञान है। विज्ञान की हैसियत से, यह एक जगह स्थिर नहीं रहता, न रह सकता है बल्कि विकास होता है और अपने को पूर्ण बनाता है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवदी सिद्धांत कठमुल्लापन नहीं है, बल्कि काम करने के लिए एक मार्गदर्शक है;

(3) पार्टी मजदूर वर्ग की भूमिका पूरी नहीं कर सकती यदि सफलता से बदहवास होकर उसमें घमंड आ जाये, वह अपने काम में दोष न देखे, अपनी गलतियां मानने से और समय रहते खुलकर और ईमानदारी से उन्हें सुधारने से डरे। पार्टी अजेय होती है यदि वह आलोचना और आत्मालोचना से न डरे, यदि वह अपने काम में गलतियों से सबक लेकर कार्यकर्ताओं को सिखाये-पढ़ाये और यदि वह समय रहते अपनी गलतियों को सुधारना जाने, जब तक मजदूर वर्ग की पार्टी अपनी ही कतारों के अवसरवादियों के खिलाफ लगातार कड़ा संघर्ष नहीं करती, जब तक अपने ही भीतर के समर्पणवादियों को कुचल नहीं देती, तब तक वह अपनी कतारों में एकता और अनुशासन कायम नहीं रख सकती। हकीकत में बोल्शेविक पार्टी के आंतरिक जीवन के विकास का इतिहास पार्टी के भीतर अवसरवादी गुटों के खिलाफ अर्थवादियों, मेंशेविकों, त्रास्तकीवादियों, बुखारिनपंथियों के खिलाफ संघर्ष का इतिहास है।

(4) (क) रूसी क्रांति के पहले कामरेड लेनिन के सामने बतौर एक नमूना पेरिस कम्यून 1871 का विद्रोह था, जो शहरों पर कब्जा जमाकर ही शुरू हुआ था। उसी अनुभव से सबक लेकर कामरेड लेनिन ने रूसी क्रांति के मार्ग के रूप में बगावत का मार्ग अपनाया।

(ख) अतः कहा जा सकता है कि रूसी क्रांति बगावत के जरिए सफल हुई। जिसका अर्थ है पहले शत्रु का अड्डा स्थल शहर पर कब्जा जमाकर बाद में गांवों (देहातों) पर कब्जा जमाना।

पर, रूसी क्रांति के महान नेता पहले का. लेनिन और बाद में का. स्तालिन की मृत्यु के बाद रूसी समाजवाद भी टिक नहीं सका। जो अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के लिए बहुत-ही दुखद घटना है। कारण निम्न रूप है:

विदित है कि 21 जनवरी, 1924 में महान लेनिन की मृत्यु हुई। उनकी मृत्यु के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन रूस देश में समाजवाद की अग्रगति का जिम्मा का. स्तालिन के कंधे पर आ पड़ा, जो का. स्तालिन के कुशल नेतृत्व ने बखूबी निभाए। जबकि का. स्तालिन के सामने समाजवादी निर्माण-कार्य का कोई पूर्व अनुभव नहीं था। उन्होंने न केवल रूस में समाजवादी निर्माण कार्य को आगे बढ़या, बल्कि साथ-ही-साथ विश्व सर्वहारा तथा कम्युनिस्ट आंदोलन में भी नेतृत्व दिया। का. स्तालिन के नेतृत्व में ही रूसी लाल सेना की अभूतपूर्व साहसिक जवाबी कार्यवाही के जरिए दूसरे विश्वयुद्ध के चरम फासीवादी ताकतों के सरगना हिटलर को बुरी तरह से परास्त किया गया और तमाम फासीवादी ताकतों का कमर तोड़ दिया गया। पर, 01 मार्च, 1953 को का. स्तालिन की मृत्यु के बाद पार्टी में छिपे हुए चरम संशोधनवादी व गद्दार ख्रुश्चेव गुट द्वारा पार्टी व सत्ता पर कब्जा जमा लिया गया और रूसी समाजवाद को पहले पूंजीवाद और बाद में सामाजिक साम्राज्यवाद में बदल दिया। इस तरह से दुनिया के सर्वहारा वर्ग व उत्पीड़ित राष्ट्र व जनता के सामने एक नकारात्मक अनुभव रखा। जिससे महान माओ ने सबक लेकर चीन में समाजवाद को आगे बढ़ाया। रूसी समाजवादी निर्माण कार्य में जो भी भूल व त्रुटि रह गयी थी उसे सुधार कर और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति की शुरूआत व संचालन कर चीन में सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को और मजबूत बनाया गया तथा गद्दार संशोधनवादी व पूंजीवाद के राहगीरों को पार्टी से निकाल-बाहर कर दिया गया। पर, 09 सितम्बर, 1976 में का. माओ की मृत्यु के साथ-साथ समाजवाद का गद्दार देङ-गुट के नेतृत्व में पार्टी व सत्ता पर कब्जा जमा लिया गया और चीन को पहले पूंजीवाद में और अभी साम्राज्यवाद में बदल दिया गया। इस तरह से दुनिया के सर्वहारा वर्ग व उत्पीड़ित जनता के सामने रूस के अधःपतन के बाद समाजवादी चीन के अधःपतन ने और एक नकारात्मक उदाहरण पेश किया। अब दुनिया के किसी भी देश में समाजवादी व्यवस्था का अस्तित्व नहीं है और इन दो नकारात्मक अनुभवों से सबक लेकर समाजवाद को और आगे बढ़ाने व मजबूत बनाने का काम का जिम्मा सच्चे कम्युनिस्टों के कंधे पर आ पड़ा। इस महत्वपूर्ण काम को सही तौर पर निभाने के लिए दुनिया के कम्युनिस्टों को खुद को तैयार करना-ही होगा और इसलिए महान माओ द्वारा चीन में समाजवाद को मजबूत बनाने हेतु जो भी नीतियों को सूत्रबद्ध किया गया उसे गहराई से अध्ययन करना पड़ेगा और व्यवहार में ले जाना होगा। समाजवाद की जीत की दिशा भी स्पष्ट तौर पर आगे बढ़ाने के लिए सारे कुछ को तैयार करना होगा।

रूसी समाजवादी क्रांति के विश्वजनीन तात्पर्य को आत्मसात करें

खूब संक्षेप में कहने से महान रूसी समाजवादी क्रांति का तात्पर्य निम्नरूप है:

(1) विदित है कि वर्ग विभाजित समाज उद्‌भव के बाद समूची दुनिया के सामाजिक विकास का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास रहा है। इस इतिहास के अंदर महान रूसी नवंबर समाजवादी क्रांति एक युगांतकारी घटना है! क्यों यह युगांतकारी घटना है? क्योंकि रूसी समाजवादी क्रांति के जरिए पूर्व में हुए तमाम विद्रोह व क्रांति के साथ एक सुस्पष्ट विभाजन रेखा भी खींची गयी। जैसे, रूसी क्रांति के पहले मानव समाज में जितने भी विद्रोह या क्रांतियां हुई, महान माओ के अनुसार, वे सब पुरानी बुर्जुआ जनवादी क्रांति का हिस्सा थी, जिसका मूल मकसद था बुर्जुआ वर्ग के नेतृत्व में बुर्जुआ समाज या पूंजीवादी समाज की स्थापना करना और बुर्जुआ वर्ग मजदूर-किसान को लामबंद कर सशस्त्र उपायों में बुर्जुआ क्रांति के जरिए खुद के वर्ग स्वार्थ में ही सामंती समाज को चकनाचूर करते हुए बुर्जुआ या पूंजीवादी समाज की स्थापना करते थे। पर, उसने देख लिया कि पूंजीवादी समाज स्थापित होने के बाद मजदूर-किसान चुपचाप नहीं बैठे रहे। बल्कि, आगे आकर 1917 में रूसी समाजवादी क्रांति के जरिए बुर्जुआ या पूंजीपति वर्ग को ही उखाड़ फेंका और मजदूर राज की स्थापना कर लिया। इससे आतंकित होकर बुर्जुआ वर्ग 1917 के बाद से और कहीं भी बुर्जुआ क्रांति का झण्डा नहीं लहराये यानी बुर्जुआ वर्ग बुर्जुआ क्रांति का जिम्मा और नहीं निभाया। अब यानी 1917 के बाद से बुर्जुआ क्रांति के जरिए सामंतवाद को कब्र में डालने का जिम्मा मजदूर वर्ग के कंधे पर-ही आ पड़ा। जिसे राष्ट्रीय व जनवादी क्रांति यानी नई जनवादी क्रांति के रूप में कामरेड माओ ने परिभाषित किया और महान रूसी क्रांति के बाद जितनी भी क्रांतियां हुई तथा हो रही हैं, वे सब के सब सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में विश्व सर्वहारा क्रांति का हिस्सा बन गया है। और विश्व सर्वहारा क्रांति की दो धाराएं हैं, पहला समाजवादी क्रांति और दूसरा है नई जनवादी क्रांति।

समाजवादी क्रांति का मूल मकसद है मजदूर वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन समाजवादी समाज और नई जनवादी क्रांति का मूल मकसद है मजदूर वर्ग के नेतृत्व में 90 प्रतिशत जनता का जनवादी अधिनायकत्व के अधीन नई जनवादी समाज की स्थापना करना और बाद में नई जनवादी समाज को आगे बढ़ाते हुए सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन समाजवादी समाज की स्थापना करना;

(2) क्रांति की मूल बात है राजसत्ता पर कब्जा जमाना, जो बहुत ही तात्पर्यपूर्ण है। जिसे हमें हरगिज नहीं भूलना चाहिए।

रूसी क्रांति की धारावाहिकता के अभिन्न अंश के रूप में ही चीनी क्रांति और रूसी व चीनी क्रांति की धारावाहिकता के अभिन्न अंश के रूप में ही जारी भारतीय क्रांति

हमें मालूम है कि साम्राज्यवाद के युग में सर्वहारा क्रांतियों के अनुभवों का निचोड़ निकालते हुए चीन की विशेषताएं और क्रांतिकारी युद्ध के बारे में माओ ने कहा, ''सशस्त्र बल द्वारा राजसत्ता छीनना, युद्ध द्वारा मसले को सुलझाना, क्रांति का केन्द्रीय कार्य और सर्वोच्च रूप है। क्रांति का यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी उसूल सर्वत्र लागू होता है, चीन पर और अन्य सभी देशों पर लागू होता है। लेकिन उसूल एक ही होने पर भी जब सर्वहारा वर्ग की पार्टी उसे अमल में लाती है, तो वह अलग-अलग परिस्थितियों के अनुरूप उसकी अभिव्यक्ति के अलग-अलग तरीके अपनाती है। पूंजीवादी देश, जब वे फासिस्टवादी नहीं होते अथवा युद्ध में उलझे नहीं होते तो वे अपने देश के भीतर पूंजीवादी-लोकशाही पर (सामंतशाही पर नहीं) अमल करते हैं; अपने वैदेशिक संबंधों में वे दूसरे राष्ट्रों के उत्पीड़न का शिकार नहीं होते बल्कि खुद दूसरे राष्ट्रों का उत्पीड़न करते हैं। उनकी इन विशेषताओं के कारण पूंजीवादी देशों के सर्वहारा वर्ग की पार्टी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह दीर्घकालीन कानूनी संघर्ष के जरिए मजदूरों को शिक्षित करे तथा अपनी शक्ति का संचय करे और पूंजीवाद का तख्ता अंतिम रूप से उखाड़ फेंकने के लिए तैयारी करे। उक्त देशों में मसला यह है कि दीर्घकाल तक कानूनी संघर्ष चलाया जाय, पार्लियामेंट को एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया जाय, आर्थिक व राजनीतिक हड़तालें की जाएं, ट्रेड यूनियनों को संगठित किया जाए और मजदूरों को शिक्षित किया जाए। उन देशों में संगठन का रूप कानूनी होता है और संघर्ष का रूप रक्तपातहीन (गैर-फौजी)। युद्ध के मसले के बारे में, पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां अपने खुद के मुल्कों द्वारा छेड़े गए साम्राज्यवादी युद्धों का विरोध करती हैं; अगर इस प्रकार के युद्ध हो तो इन कम्युनिस्ट पार्टियों की नीति ऐसी होती है जो अपने देश की प्रतिक्रियावादी सरकारों को पराजित करने में सहायक हो। जो युद्ध वे करना चाहती हैं, वह गृहयुद्ध होता है जिसकी वे तैयारी कर रही है। लेकिन यह बगावत और युद्ध तबतक नहीं छेड़ना चाहिए जब तक पूंजीपति वर्ग वास्तव में असहाय नहीं हो जाता, जब तक सर्वहारा वर्ग का बहुसंख्यक जन-समुदाय सशस्त्र विद्रोह करने और युद्ध चलाने के लिए संकल्पबद्ध नहीं हो जाता, तथा जब तक किसान जन-समुदाय स्वेच्छा से सर्वहारा वर्ग को मदद नहीं देता और जब इस प्रकार की बगावत और युद्ध का समय आ जाएगा, तो पहला कदम यह होगा कि शहरों पर कब्जा कर लिया जाए और फिर देहातों की तरफ बढ़ा जाए, न कि इसके विपरीत कदम उठाया जाए। पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों ने ऐसा ही किया है तथा रूस की नवंबर क्रांति ने इस बात को सही साबित कर दिया है। लेकिन चीन एक भिन्न प्रकार का देश है। चीन की विशेषता यह है कि वह एक स्वाधीन जनवादी देश नहीं है, बल्कि अर्द्ध-औपनिवेशिक और अर्द्ध-सामंती देश है; अंदरूनी तौर पर चीन में लोकशाही का अभाव है और वह सामंती उत्पीड़न का शिकार है तथा उसके वैदेशिक सम्बंधों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता का अभाव है और वह साम्राज्यवादी उत्पीड़न का शिकार है। इस प्रकार यहां न तो इस्तेमाल करने के लिए कोई पार्लियामेंट है और न मजदूरों को हड़ताल के लिए संगठित करने के लिए कोई कानूनी अधिकार ही। बुनियादी तौर पर, यहां कम्युनिस्ट पार्टी के सामने न तो यह कार्य है कि वह बगावत अथवा युद्ध शुरू करने से पहले एक लम्बे अरसे तक कानूनी संघर्षों के दौर से गुजरे और न यह कि पहले शहरों पर कब्जा कर लिया जाए और फिर देहातों पर अधिकार किया जाए। उसके सामने जो कार्य है वह इसके एकदम उल्टा है।'' (उद्धरण- माओ के 'युद्ध और रणनीति की समस्याएं' नामक लेख से) इस रूप से दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए ही 1949 में महान माओ के नेतृत्व में चीनी क्रांति सफल हुई।

अनुभव हमें सिखाया है कि महान रूसी नवंबर समाजवादी क्रांति अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग और जनता के क्रांतिकारी संघर्षों की अनिवार्य परिणति थी तथा महान चीनी क्रांति उसी प्रक्रिया की धारावाहिकता थी। हमारे देश भारत में दीर्घकाल से चली आ रही कम्युनिस्ट आंदोलन (सन् 1921 में देश से बाहर और 1925 में देश के अंदर गठित भाकपा) के अंदर जो संशोधनवादी धारा हावी रह रही थी, उसमें गुणात्मक रूप से भिन्न एक प्रक्रिया यानी विच्छेद व छलांग की प्रक्रिया के जरिए सन् 1967 के मई में बतौर एक वज्रघोष ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष ने जबरदस्त चोट पहुंचाया, जिसके परिणामस्वरूप घोर संशोधनवादी सी. पी. आई. व सी. पी. एम. से सच्चे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी राजनीतिक-सांगठनिक तौर पर अपना पिंड छुड़ाने में समर्थ हुए। हकीकत में नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष ने संसदवादी-सुधारवादी-संशोधनवादी लाइन व कार्यवही पर एक

प्रचंड व निर्णायक विभाजन रेखा खींची व भारतीय क्रांति के सही मार्ग सशस्त्र कृषि क्रांति तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध के मार्ग को प्रशस्त किया, जिसकी सच्ची क्रांतिकारी विरासत हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) ही है। अब हमारी भारतीय क्रांति भी अंतरराष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग और जनता के क्रांतिकारी संघर्षों का अभिन्न अंग है। अत: भारतीय क्रांति का भी केन्द्रीय कार्य सशस्त्र बल द्वारा राजनीतिक सत्ता पर कब्जा जमाना है। भारत में भी सर्वहारा वर्ग की पार्टी यानी हमारी पार्टी के लिए विश्व समाजवादी क्रांति के अनुभवों का, खासकर रूस और चीन की दो महान क्रांतियों के अनुभवों का अध्ययन करना नितांत अनिवार्य है।

चूंकि, भारत एक अर्द्ध-औपनिवेशिक व अर्द्ध-सामंती देश है, इसलिए यहां क्रांति के लिए जो तरीका अपनाना होगा, वह है, ''यदि कोई देश किसी साम्राज्यवादी शक्ति या शक्तियों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शासित हो और एक ऐसा अर्द्ध-सामंती देश हो, जहां की जनता को कोई आजादी या जनवादी अधिकार नहीं हो, वहां सर्वहारा वर्ग की पार्टी बिलकुल शुरू से ही जनता को सशस्त्र संघर्ष के लिए जागृत और गोलबंद करती है। क्रांति के मुख्य शक्ति, किसानों पर निर्भर करती है, पिछड़े हुए क्षेत्रों को अपने कामकाज का मुख्य केन्द्र बनाती है, जनसेना और जनमिलिशिया का निर्माण करती है, विस्तीर्ण देहाती क्षेत्रों में निर्भरयोग्य, मजबूत और आत्मनिर्भर आधार क्षेत्रों या मुक्त इलाकों की स्थापना करती है, दीर्घकालीन लोकयुद्ध के दौर से उनका निरंतर विस्तार करती है और प्रतिक्रियावादियों की राजसत्ता पर निर्णायक व विध्वंसक प्रहार करने के जरिए शहरों को घेरकर उनपर अंतिम रूप से कब्जा जमा लेती है तथा समूचे देश में जनता की राजनीतिक सत्ता व राज्य-व्यवस्था की स्थापना करती है।''

भारत में लम्बे समय से चली आ रही विभिन्न रूपों की संशोधनवादी लाइन व कार्यक्रम की पृष्ठभूमि में संसदीय चुनाव पर हमारा एक सही दृष्टिकोण व उस अनुसार कार्यक्रम होना बहुत जरूरी है। इस पर हमारी पार्टी की रणनीति-कार्यनीति दस्तावेज में लिखित अंश के अंतर्वस्तु को गहराई से आत्मसात करना चाहिए और उस अनुसार स्लोगन व कार्यक्रमों को भी तैयार करना चाहिए। हमें याद रखना है कि चुनाव में भाग लेना या बहिष्कार करने का सवाल अवश्य-ही कार्यनीति से संबंध रखता है। लेकिन ख्रुश्चेव संशोधनवाद के उद्‌भव के बाद, जब संसदीय रास्ता और और चुनाव में भागीदारी आधुनिक संशोधनवाद की रणनीति बन गई है, तब इस पहलू के मद्देनजर हम इस सवाल को महज कार्यनीतिक मामला कहकर नजरअंदाज नहीं कर सकते। साथ ही ''अभी पार्टी पहाड़-जंगल इलाके के थोड़ी-सी जगह के अंदर सिमट कर रह गयी है'', ''बहुत सारी जगहों या प्रांतों में पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था हावी हो गयी है'', ''संसदीय व्यवस्था या चुनाव पर जनता में मोह है''- इत्यादि तर्कें तथा दलीलें बेबुनियाद हैं और भारत की ठोस जमीनी वास्तविकताओं से इनका कोई लेना-देना नहीं है।

हमारे देश में ''अब तक के ऐतिहासिक अनुभव ने सिर्फ यही साबित किया है कि जिन्होंने चुनाव में भाग लिया, उनमें से अधिकांश या तो संशोधनवादी हो गये हैं या उन्होंने क्रांतिकारी सशस्त्र संघर्ष को कानूनी और शांतिपूर्ण मार्गों पर भटका दिया। अत: निष्कर्ष के बतौर हम यह कह सकते हैं कि चुनावों का बहिष्कार हालांकि कार्यनीति का सवाल है, पर भारतवर्ष की ठोस परिस्थितियों में यह रणनीति का महत्व प्राप्त कर लेता है क्योंकि चुनावों में भागीदारी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति से बिलकुल ही मेल नहीं खाती।''

अत: खूब संक्षेप में कहने से हमें अवश्य-ही भारत की नई जनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए सशस्त्र कृषि-क्रांति तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते पर अडिग रहना होगा।

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ पर शपथ लें, भारतीय नई जनवादी क्रांति को सफल करें एवं अपने फौरी, प्रधान व केन्द्रीय कर्तव्य पर अडिग रहें!

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ मनाने के दो तरीके होते हैं- एक पेटी-बुर्जुआ संशोधनवादी तरीका और दूसरा क्रांतिकारी तरीका। संशोधनवादी तरीका का मतलब केवल दिखावे के रूप में रूसी क्रांति का और का. लेनिन-स्तालिन का जयगान करना, कुछ लम्बा-चौड़ा भाषण देना, पर व्यवहार में उसे कतई लागू नहीं करना और क्रांतिकारी तरीका का मतलब है केवल दिखावे के रूप में नहीं बल्कि रूसी क्रांति के तात्पर्य को यानी क्रांति के जरिए सत्ता पर काबिज होने का कर्तव्य को अपने-अपने देश की विशेषता के अनुसार आगे बढ़ाने की शपथ लेना। रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ हमारी पार्टी के साथ-साथ संशोधनवादी पार्टियां भी मनाएंगे। हमें यह याद रखना होगा कि महान कामरेड मार्क्स के सिखाए सार-तत्व यानी पुराने राज्य को बल के जरिए ध्वस्त करते हुए सर्वहारा की तानाशाही के तहत समाजवाद का निर्माण कर एक वर्गविहीन समाज यानी साम्यवाद की तरफ आगे बढ़ना होगा और अपने देश भारत की परिस्थिति के अनुसार सर्वप्रथम हमें नव-जनवादी क्रांति को पूरा करना होगा। मार्क्सवाद की इस सार को, जिसे उसके सही अर्थ में कामरेड लेनिन और कामरेड स्तालिन के नेतृत्व में रूस में पहली बार लागू किया गया, दुनिया की सभी संशोधनवादी व नव-संशोधनवादी ताकतें नकारते हैं और इस तरह मार्क्सवाद के खिलाफ पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के हित में जंग लड़ते हैं। ये ताकतें आज हर देश में मौजूद हैं और मजदूर वर्ग को क्रांतिकारी राह पर आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश करते हैं। हमारे देश में भी संशोधनवादी भाकपा, माकपा व नव-संशोधनवादी माले नामधारी अवसरवादी ताकतें महान कामरेड मार्क्स की इस बुनियादी सीख को मान्यता नहीं देती है। एक पल के लिए

भी हमें यह नहीं भूलना होगा कि सभी तरह के अवसरवाद के खिलाफ एक निरंतर समझौताहीन संघर्ष के बिना पार्टी के कतारों और जनता को एकताबद्ध कर दुश्मन के खिलाफ लड़ाई में स्पष्टता और साहस के साथ आगे बढ़ना असंभव है। इसलिए हमें अवश्य-ही संशोधनवादी तौर-तरीके का कड़ा विरोध करना होगा और क्रांतिकारी तौर-तरीके के अनुसार रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ मनाना होगा।

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर हमें भी यही शपथ लेनी चाहिए कि भारतीय क्रांति की मौजूदा चुनौतियों का तथा मोदी सरकार की हर फासीवादी नीति व कार्यवाहियों का साहस के साथ मुकाबला कर एक नया जनवादी भारत का निर्माण करना और समाजवाद-साम्यवाद की स्थापना के लिए पुरजोर कोशिश करना होगा।

जाहिर है कि भारत में केन्द्रीय सत्ता में आसीन ब्राह्मणीय हिन्दुत्ववादी फासीवादी आरएसएस-बीजेपी के नरेन्द्र मोदी का शासनकाल का तीन वर्ष पार हो गया। सरकारी व कॉरपोरेट नियंत्रित प्रचार यंत्र रेडियो, टीवी, पत्र-पत्रिका इत्यादि सारे कुछ के जरिए एक के बाद एक मोदी सरकार की उपलब्धियों को गिनाया जा रहा है। लगता है कि अब भारत में गरीबी नहीं है, नौकरी का अभाव नहीं है, तमाम अभाव-विषमता खत्म होकर सभी प्रकार की समानता आ गयी है, सकल घरेलु उत्पाद में भारी वृद्धि आ गयी है, अब विश्व में सबसे तेज गति से विकास करनेवाली अर्थव्यवस्था के रूप में भारत उभर आया है, भ्रष्टाचार नहीं है, नोटबंदी के जरिए कालेधन पर अंकुश लगाया गया, सब का विकास हो गया और अच्छे दिन भी आ गया। नारियों के साथ छेड़खानी, बलात्कार, यौन उत्पीड़न इत्यादि नारी यातनाएं बहुत कम हो गयी हैं, जाति भावना, भेद-भाव व धार्मिक अल्पसंख्यकों को हर अधिकार दिया गया, 'मेक इन इंडिया', 'मैनुफैक्चरिंग हब', 'स्टार्ट अप इंडिया' इत्यादि स्लोगन भारत के विकास में मदद पहुंचा रहा है, डिजिटल इंडिया, नगद रहित अर्थव्यवस्था का कार्यक्रम में बहुत तेजी आयी है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का शान बढ़ा है, अमेरिका के साथ हर मामले में घनिष्टता व सहयोग बढ़ा है, भारत भी किसी से कम नहीं की समझ बढ़ रही है, केवल भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए माओवाद या माओवादी ही सबसे ज्यादा खतरा बना हुआ है- इत्यादि।

पर, हकीकत में, पूरे भारत का सही चित्र ठीक इसके विपरीत है। जैसे- गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर बनते जा रहा है तथा गरीब व अमीरों के बीच की खाई बहुत अधिक हो गयी है। खासकर, 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही एक प्रतिशत अमीरों की सम्पत्ति 49 प्रतिशत से बढ़कर 2016 में 58. 4 प्रतिशत हो गयी। 2016 में देश के सबसे धनी 10 प्रतिशत अमीरों के पास देश के कुल सम्पत्ति में हिस्सा 80.7 प्रतिशत था। यानी बाकी 90 प्रतिशत आबादी के पास केवल 19.3 प्रतिशत सम्पत्ति ही है। (स्रोत:- क्रेडिट सुईस ग्लोबल वेल्थ डेटा बेस) विदेशों में जमा काले धनों को 100 दिनों के अंदर लाने की मोदी की घोषणा अब 1050 दिन पार हो जाने के बाद भी उस ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा जा सका है यानी उसकी घोषणा टांय-टांय फिस्स हो गयी।

देश में नौकरी मिलने के अवसर में चिंताजनक कमी आई है। मुद्रास्फीति की दर में भी वृद्धि हुई है और महंगाई रोज दिन बढ़ती ही जा रही है। फिर, मोदी का 'मेक इन इंडिया' व 'मैनुफैक्चरिंग हब' का नारा असल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन देना और 'डिजिटल इंडिया' का नारा भी असल में पूरे प्रशासन तंत्र को डिजिटलाइज्ड करना है, ताकि पूरे प्रशासन तंत्र पर उनका नियंत्रण बरकरार व मजबूत हो सके। मोदी सरकार कई मजदूर विरोधी व किसान विरोधी कानून लायी है। जिससे लाखों मजदूर नौकरीहीन हालत में आ गये हैं और व्यापक किसान आत्महत्या के लिए मजबूर हो गये हैं। किसानों को अपने फसल का उचित समर्थन मूल्य न मिल पाने के कारण वे सड़क पर उतरने को मजबूर हो रहे हैं और आंदोलनरत किसानों की जायज मांगों का जवाब भी सरकार लाठी और गोली से दे रही है। देश की बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों की खुली लूट के लिए देशी-विदेशी पूंजीपतियों को खुला आमंत्रण देकर यहां की लाखों एकड़ जमीन उन्हें देने का समझौता कर चुकी है, जिससे करोड़ों जनता अपनी जमीन से विस्थापित होने के कगार पर हैं। इसी तरह एक तरफ 'बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ' का ढोल पीटा जा रहा है, तो दूसरी तरफ अपने इज्जत-अधिकार के लिए सड़क पर उतरी बेटियों के उपर पुलिस की लाठियां बरस रही है। वहीं क्रांतिकारी आंदोलन के क्षेत्र में तो बेटियों के साथ इनके अर्द्ध-सैनिक बल यौन उत्पीड़न से लेकर बलात्कार व सामूहिक बलात्कार तक कर रहे हैं। शिक्षा के अंधाधुंध निजीकरण, फीसवृद्धि की खिलाफत व इस छात्र विरोधी सरकार का विरोध करनेवाले प्रत्येक छात्र-छात्राओं पर 'देशद्रोही' का तमगा लगा दिया जा रहा है।

साम्राज्यवादी और दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों के हितों के लिए पूरे देश को एक ही एकीकृत बाजार के रूप में ढालने के लिए परोक्ष कर नीति को सुधार कर वस्तु सेवा कर (GST) को सामने लायी गयी है। भ्रष्टाचार को उन्मूलन करने की धोखेबाजी प्रचार के साथ बड़े नोटों को रद्द कर लोगों के पास मौजूद पूरे पैसे को बैंकों में जमा कराया गया। इससे किसानों, छोटे व्यापारियों और छोटे पूंजीपतियों को झटका लगा। इससे कृषि, औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों को धक्का लगा। लोगों को अपने शेष व बचत पैसों को स्वतंत्र रूप से विनिमय करने का मौका न देकर उनके सभी पैसे बैंकों में जमा कराकर, इसके जरिए साम्राज्यवाद और दलाल पूंजीपतियों को फायदा पहुंचाते हुए डिजिटलीकरण, नगदरहित अर्थव्यवस्था

(Cashless economy) स्थापित करने के लिए की जाने वाली कोशिशें आगामी दिनों में देश के मध्यम वर्ग सहित सभी तबकों पर अंतरराष्ट्रीय वित्तीय पूंजी और दलाल नौकरशाही पूंजी के हमले और बढ़ने के आसार है।

देश के आर्थिक तौर पर विकसित होने की लफ्फाजी मोदी सरकार द्वारा करने के बावजूद देश में औद्योगिक क्षेत्र और उत्पादन क्षेत्र (manufacturing) में मंदी की स्थिति पैदा होने के कारण बेरोजगारी, दैनिक जरूरत के चीजों की महंगाई और कृषि संकट बढ़कर इस 'विकास' का खोखलापन का भण्डाफोड़ कर रहा है।

देश में दिन-ब-दिन तेज होने वाले अंतरविरोधों के कारण उभरती सामाजिक अशांति पर अंकुश लगाने के लिए मोदी सरकार कुछ और फासीवादी कानूनें सामने ला सकती है। इसी तरह विभिन्न नाम देकर हिन्दू फासीवादी गिरोहों को भी गठित करने और जनता पर गैरकानूनी एवं फासीवादी हमले तेज करने के आसार हैं।

देश के अंदर कश्मीर की जनता को सभी अधिकार व आजादी से वंचित कर एक बंदी शिविर का जीवन गुजर-बसर करने के लिए तथा बंदूक के साये में जीवन बिताने के लिए मजबूर किया गया है। ऐसाकि अत्याचार का स्वरूप इतना भयंकर है कि सेना द्वारा जीप गाड़ी में कश्मीरी युवक को बांधकर घुमाये जाने की चरम कुकृत्य चलाया जा रहा है। पूर्वोत्तर भारत के समूचे राष्ट्रीयता की जनता का आत्म-निर्णय का अधिकार प्राप्त करने के लिए जारी आंदोलनों पर निर्मम दमनात्मक अभियान चलाया जा रहा है तथा उक्त आंदोलन को बूटों तले रौंदा जा रहा है। ऐसाकि विरोध करने वाले मीडिया के लोगों को भी बख्शा नहीं जा रहा है। उनके द्वारा उठाया जा रहा प्रतिवाद या प्रतिरोधी आवाज को दबाने खातिर विभिन्न तरीके की धमकी व मुकदमा लाद दिया जा रहा है।

फिर, गो-रक्षा के नाम पर गो-मांस रखने व खाने के आरोप लगाकर मुस्लिमों को पीटते-पीटते हत्या करने, घायल करने की घटना तो बे-रोक टोक जारी है और उत्तर-प्रदेश में कट्टर मुस्लिम विरोधी योगी आदित्यनाथ की सरकार के आगमन के बाद धार्मिक अल्पसंख्यक मुस्लिम जनता पर हर तरह का जुल्म-अत्याचार, दबाव, धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करने पर विभिन्न प्रकार के पाबंदी लगा दिया गया है तथा गो-मांस सहित सभी प्रकार के मांस बिक्री पर प्रतिबंध और तमाम बूचरखाना बंद कर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया, ऐसाकि पशु खरीद-बिक्री पर भी पाबंदी लगायी गयी। लोगों को यह बताया जा रहा है कि उन्हें क्या खाना व क्या पहनना चाहिए। अन्यान्य धार्मिक अल्पसंख्यकों पर भी विभिन्न प्रकार का दबाव व पाबंदी लगायी जा रही है। जिससे गरीब तबके के एक हिस्सा का रोजगार बंद हो गया है। दलितों पर अत्याचारों में कई गुना इजाफा हुआ है। सहारनपुर के दलितों पर अत्याचार इसकी ताजा मिसाल है।

मोदी सरकार के आने के बाद भारत की विस्तारवादी भूमिका को और व्यापक रूप से बढ़ा दिया गया है। पड़ोसी देशों के साथ पारस्परिक संबंध में और ज्यादा खटास आयी है। अमरीकी साम्राज्यवादी महाशक्ति द्वारा चीन को घेरने की नीति को आगे बढ़ाने के स्वार्थ में ही मोदी सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजना व कार्यक्रम अपनाया गया है। फिलहाल, प्रधानमंत्री मोदी द्वारा असम के ब्रह्मपुत्र नदी पर 9 किलोमीटर सेतु का उद्घाटन दरअसल अरुणाचल के साथ द्रुत कॉन्टैक्ट स्थापित करना है ताकि अमेरिका की 'चीन को घेरो' की योजना को आगे बढ़ाया जा सके। दरअसल भारत के राजनीतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-सामरिक-विदेश नीति-शासन प्रणाली सभी क्षेत्रों में फासीवादी नीति व तौर-तरीके अपनाया जा रहा है। सच कहा जाये तो पूरे भारत में पुलिस व बंदूक का राज चल रहा है।

हमारा कर्त्तव्य

कामरेडो, मोदी सरकार द्वारा माओवादी पार्टी व माओवादी आंदोलन को पूरी तरह कुचल डालने की योजना, निश्चित रूप से मोदी सरकार का एक प्रमुख काम के बतौर उजागर हुआ है। लेकिन, यह केवल भारत की किसी एक पार्टी की सरकार का अपना मनमौजी निर्णय नहीं है और ऐसा हो भी नहीं सकता है। क्योंकि भारत की तमाम शासक पार्टियां साम्राज्यवाद के दलाल हैं। इसलिए किसी भी पार्टी या किसी भी रंग की सरकार क्यों न हो उसे साम्राज्यवाद खासकर अमरीकी साम्राज्यवाद का निर्देशन-अनुसार एलआईसी पॉलिसी (कम तीव्रता वाला युद्ध) के विभिन्न पहलुओं को पूरी तरह लागू करना पड़ता है। वैसा-ही यूपीए जमाने में हुआ है और अभी एनडीए जमाने में भी हो रहा है। इसलिए यह केवल मोदी सरकार गद्दी पर बैठने के बाद ही सरकार का प्रमुख काम बन गया- ऐसा नहीं है। अगर हमलोग यूपीए-1 व यूपीए-2 सरकार के जमाने पर एक बार नजर दौड़ाते हैं, तो हम देख पाते हैं कि यूपीए-1 और यूपीए-2 दोनों ने ही माओवादी पार्टी व माओवादी आंदोलन को ही 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' बताकर हमारी पार्टी व आंदोलन को खत्म करने के काम को सबसे प्रमुख काम के बतौर चलाया था। 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' का पहला व दूसरा चरण उसी सरकार का जमाना था। मगर परिणाम क्या निकला? इतिहास गवाह देता है कि वे उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने में लगभग विफल रही। उल्टे, माओवादी पार्टी व आंदोलन की जड़ जनता के अंदर तक चली गयी है और हजारों कामरेडों की शहादतों के कारण हुए भारी नुकसान झेलने के बावजूद पार्टी अनेकों अनुभव व सबक लेकर मजबूत हुई है।

अब ब्राह्मणीय हिन्दुत्ववादी-फासीवादी मोदी सरकार द्वारा

अमरीकी साम्राज्यवाद सहित अन्य तमाम साम्राज्यवादियों व प्रतिक्रियावादियों से हर प्रकार की मदद लेकर ही क्रांतिकारी आंदोलन को पूरी तरह रौंद डालने के लिए 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे चरण की योजना को लागू किया जा रहा है। 'घेरा डालो-विनाश करो' अभियान हो या किसी भी प्रकार के दमनात्मक अभियान, सरेंडर पॉलिसी हो या मनोवैज्ञानिक लड़ाई के बतौर दुष्प्रचार चलाने की पॉलिसी, चाहे विभिन्न प्रकार के तथाकथित सुधार कार्यक्रम हो या तथाकथित विकास का ढोल पीटने का कार्यक्रम- सभी में मोदी सरकार द्वारा आमूल-चूल बदलाव लाया गया है। मोदी सरकार गद्दी पर बैठते न बैठते ही माओवादियों को उखाड़ फेंकने की घोषणा की और ज्यादा संख्या में अर्द्ध-सैनिक बलों के बटालियन बनाकर माओवादी इलाके में तैनाती की जा रही है। फिर 'काँटा से काँटा निकालने' की चरम प्रतिक्रियावादी नीति के तहत कहीं 'बस्तारिया बटालियन' तो कहीं 'पहाड़ी बटालियन' या 'स्थानीय आदिवासी बटालियन' का गठन कर 'आदिवासियों को आदिवासियों के खिलाफ लड़वाने' जैसी प्रतिक्रियावादी एलआईसी पॉलिसी को बहुत वफादारी के साथ लागू किया जा रहा है।

दूसरा घृणित तरीके के बतौर यूपीए सरकार द्वारा अपनायी गयी सरेण्डर या आत्मसमर्पण पॉलिसी को उसके कथनानुसार ''और लुभावना'' बनाने के लिए पहले की अपेक्षा बहुत ज्यादा रूपए मिलने का लोभ-लालच दिया जा रहा है। कामरेड व कार्यकर्ताओं के घर-परिवार के लोगों पर आत्मसमर्पण करवाने का दबाव दिया जा रहा है और न करने पर जुल्म सहना होगा व जेलखाना में सड़ना होगा की धमकी भी दी जा रही है तथा बुरी तरह से कुर्की-जब्ती की कार्रवाई चलाई जा रही है।

उपरोक्त तमाम क्रांति-विरोधी पॉलिसियों का मुकाबला करने के लिए हमारा पहला व प्रधान काम है, सीसी से एसी व जन संगठनों के नेतृत्व तक रक्षा करना, पार्टी को और बोल्शेवीकरण करना तथा दुश्मन के चौतरफा हमले का मुकाबला चौमुखी जवाबी हमला के जरिए करने के लिए पूरी पार्टी कतार व लड़ाकू जनता को हर प्रकार से शिक्षित-दीक्षित करना व न्यूनतम रूप से प्रतिरोधी कार्रवाई चला सके, इसलिए प्रशिक्षण देना ताकि जवाबी हमले को सही मायने में जनयुद्ध के रूप में बदल दिया जा सके। हमें अवश्य-ही राजनीतिक-सांगठनिक व सैनिक तैयारियों के काम को एक अभियान के बतौर आगे बढ़ाना होगा, सैनिक हमले का जवाबी प्रतिरोधी लड़ाई, दुष्प्रचार का जवाबी प्रचार अभियान व ज्वलंत जन-समस्याओं को लेकर जन-आंदोलन का निर्माण आदि के लिए हमें जी-तोड़ प्रयास चलाना होगा। साथ ही साथ तमाम प्रगतिशील-जनवादी शक्तियों सहित ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी शक्तियों के खिलाफ तमाम मित्र शक्तियों से मिलकर आंदोलन के निर्माण के लिए प्रयास करते रहना होगा। अखिल भारतीय स्तर पर यथासंभव शीघ्र एक संयुक्त मोर्चा या विशाल मंच का गठन कर देश की जनता के सामने रखने की जरुरत है।

कामरेडो, भारतीय क्रांति की अग्रगति के अगले दौर को भारी चुनौतीभरी परिस्थिति का सफलतापूर्वक मुकाबला करके ही हम आगे बढ़ा सकते हैं। इसलिए हमें हर प्रकार की चुनौती का मुकाबला करने हेतु सभी प्रकार की तैयारियों को पूरी करनी होगी। इसका मतलब है, उल्लिखित जितने किस्म की कर्त्तव्यों की बातों का जिक्र किया गया है, उसे पूरी तरह से कार्यान्वित करना हमारा फौरी व अहम् कर्त्तव्य है।

ऐसा करके ही हम क्रांति के तीन जादुई हथियार यानी पार्टी, जनसेना व संयुक्त मोर्चा को निर्माण व लगातार मजबूती प्रदान कर सकते हैं। हमें याद रखना है कि पार्टी को सही अर्थ में बोल्शेवीकरण किये बिना एक कदम भी हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। आवें, हर प्रकार की कमी-कमजोरी को केवल कथनी में ही नहीं, करनी में दूर हटाने के लिए संकल्पबद्ध हो जाएं और पार्टी की अन्दरूनी एकता को आंख की पुतली जैसी रक्षा करते हुए उसे और मजबूत बनाएं तथा हर प्रकार के संशोधनवाद, चाहे 'वाम' संशोधनवाद हो या दक्षिण, उसे परास्त करते हुए पार्टी की सही लाइन, नीति व कार्यशैली का दृढ़तापूर्वक अनुसरण करें।

निस्संदेह, रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा, कठिन व जटिल है, पर मालेमा व पार्टी लाइन पर अडिग रहने से हम सारी बाधाओं को लांघते हुए भारत की नई जनवादी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए 'गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध' में बदल डालो, 'पीएलजीए को पीएलए' में बदल डालो' और 'गुरिल्ला जोन को आधार क्षेत्रों' में बदल डालो जैसे अहम् व फौरी कर्त्तव्य को तेज गति से आगे बढ़ा सकते हैं।

आवें, महान शहीदों के अधूरे कार्यों व सपने को पूरा करने हेतु साहस के साथ वर्गयुद्ध के मैदान में कूद पड़ें।

इतिहास गवाह है कि अन्तिम जीत जनता की ही होगी। रात के अंधकार के बाद भोर की लाल किरण दिखाई पड़ेगी ही। भारतीय क्रांति सफल होगी ही यानी पहले नव जनवादी क्रांति और इसके तुरन्त बाद समाजवादी क्रांति भी सफल होगी ही।

रूसी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ का तात्पर्य को सही मायने में केवल भारत की नई जनवादी क्रांति में तेजी लाकर व उसे सफल बनाकर ही तथा क्रांति का अगला कदम समाजवादी समाज की स्थापना की ओर आगे बढ़ाकर ही सही रूप से मनाया जा सकता है। यही पार्टी का आह्वान है।

अमर शहीद कामरेड डुमका सोरेन उर्फ नारायण उर्फ जौहर को शत्-शत् लाल सलाम!

कामरेड डुमका सोरेन उर्फ नारायण उर्फ जौहर का जन्म गिरिडीह जिला के पीरटांड़ थाना (अभी मधुबन थाना) के डेगापहाड़ी गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। ये दो भाई और एक बहन थे। इन तीनों में बहन बड़ी है, बहन के बाद दूसरी संतान कामरेड नारायण ही थे। इनके पिता की कई वर्ष पहले ही कैंसर बीमारी से मृत्यु हो गई थी। पिता की जब मृत्यु हुई, तब नारायण सन्याल की उम्र बहुत ही कम था। पिताजी की मृत्यु हो जाने के बाद खेती-बारी के काम से लेकर घर गृहस्थी के सभी काम का बोझ इनके ऊपर ही आ पड़ा। कम उम्र में ही इनकी शादी हो गई थी। अभी इनकी छः संतान हैं, इनमें चार लड़की और दो लड़का है। इनका उम्र 40 वर्ष था। ये छोटे उम्र से ही खेती-गृहस्थी के काम के साथ-साथ सामाजिक कामों के प्रति भी विशेष रूचि रखते थे एवं आदिवासी जनता के ऊपर शोषकों (दिकुओं) द्वारा हो रहे शोषण-जुल्म व अत्याचार के खिलाफ गुस्सा व घृणा करते थे। पर, ये करें तो क्या करें, इनके सामने उस समय दिशा देने वाला वैसा कोई संगठन नहीं था। इस कारणवश गुस्सा को पीकर चुपचाप रह जाते, हालांकि वे बहुत ही शांत व्यक्ति थे।

अमर शहीद कामरेड नारायण

का. डुमका सोरेन उर्फ नारायण उर्फ जौहर का पार्टी से सम्पर्क 1990-91 में हुआ, उसी समय उनके गांव में तत्कालीन माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र (एमसीसी) के नेतृत्वकारी कामरेड पहुंचे थे। क्रांतिकारी राजनीतिक बात-विचार सुनकर वे प्रभावित हुए। इसके बाद से जब भी उनके गांव कामरेड लोग जाते, तो सबसे पहले उनसे भेंट करने का. नारायण आते थे और साथी लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था करने में लग जाते थे। इस तरह से का. नारायण का राजनीतिक समझदारी गहराते गया। उनके गांव डेगापहाड़ी में पार्टी का जनता के साथ गहरा सम्बंध बना तथा गांव स्तर में क्रांतिकारी किसान कमेटी, महिला संगठन तथा आत्मरक्षा दल का भी गठन हुआ। 1994-95 में इनके गांव में क्रांतिकारी किसान कमेटी का गठन होने के साथ ही इनको भी क्रांतिकारी किसान कमेटी गांव कमेटी में शामिल किया गया। इस तरह से इनके गांव में कमेटी गठन होने के साथ ही साथ वे इलाका में स्थानीय स्तर में पार्टी संगठन के काम-काज को आगे बढ़ाने में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना शुरू कर दिये। इनके काम-काज व लगनशीलता को देखकर पार्टी द्वारा इनको राजनीतिक-सैद्धांतिक विचारों से लैस करते हुए अधिक महत्वपूर्ण काम का जिम्मा दिया जाने लगा और का. नारायण भी उस जिम्मा को काफी सक्रियता के साथ पालन करने लगे। उन्होंने अपने काम में योग्यता हासिल करने के साथ-साथ पार्टी के जिम्मा को ईमानदारीपूर्वक पालन करना, पार्टी की सम्पत्ति की रक्षा करने हेतु दिलोजान से काम करना, पार्टी के सम्पत्ति की रख-रखाव में गोपनीयता का कड़ाई से पालन करना आदि महत्वपूर्ण काम उन्होंने किया। बाद के दिनों में, 1998-99 में का. नारायण पूर्ण पेशेवर होकर आगे बढ़कर राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक काम को जिम्मेदारी के साथ कर रहे थे। इनके काम-काज को देखते हुए 2005-06 में इन्हें एरिया कमेटी में लिया गया, आगे चलकर 2015 में इनको सबजोन का स्तर दिया गया। वर्त्तमान में, इलाके में ही एक एलजीएस फारमेशन में ये काम कर रहे थे।

9 जून, 2017 को ग्राम ढोलकट्टा (पारसनाथ पहाड़) में कामरेड डुमका सोरेन (नारायण/जौहर) पुलिस के साथ वीरतपूर्वक लड़ते हुए शहीद हो गये। वे शोषक-शासक वर्ग के राजसत्ता को ध्वस्त कर जनता का राज यानी नई जनवादी राज्य-व्यवस्था कायम करने हेतु शोषक-शासक वर्ग के भाड़े के सेवक/रक्षक पुलिस के साथ लड़ते हुए खून के आखिरी बूंद तक संघर्ष किये और अपने अमूल्य प्राण को न्योछावर कर दिये।

जैसाकि का. माओ ने कहा है, ''जहां कहीं भी संघर्ष होता है, वहां कुर्बानी देनी ही पड़ती है और मृत्यु एक आम घटना बन जाती है।'' कामरेड नारायण शोषित-उत्पीड़ित मेहनतकश जनता के स्वार्थ में शोषक-शासक वर्गों की सत्ता के खिलाफ संघर्ष करते हुए शानदार बलिदान दिये हैं। आवें, हम कामरेड नारायण के अधूरे काम को पूरा करने के लिए संकल्प लें। शोषकों के सत्ता को ध्वस्त कर जनता की सत्ता यानी नई जनवादी व्यवस्था कायम करने के संघर्ष को मजबूती के साथ विस्तार करना तथा अंतिम मंजिल तक बढ़ाकर ले जाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मास्को समारोह में कामरेड माओ का भाषण

(रूसी समाजवदी क्रांति की 40वीं वर्षगांठ के मौके पर तत्कालीन सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा मास्को में 6 नवंबर, 1957 को आयोजित समारोह में चीन के तत्कालीन राष्ट्रपति व चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड माओ ने भी हिस्सा लिया था और समारोह को संबोधित भी किया था। कामरेड माओ के भाषण को बाद में कई पत्रिकाओं के साथ-साथ 'पीपुल्स चाइना' पत्रिका के 01 दिसम्बर, 1957 के अंक में भी प्रकाशित किया गया था। जब अभी हमारी पार्टी रूसी समाजवादी क्रांति की शताब्दी समारोह पूरे उत्साह के साथ मना रही है, तो ऐसे मौके पर कामरेड माओ के इस भाषण को पढ़ना बहुत ही जरूरी है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए कामरेड माओ के भाषण का हिन्दी अनुवाद हम यहां दे रहे हैं। -संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

प्यारे साथियो,

अक्टूबर समाजवादी क्रांति की 40वीं वर्षगांठ के मौके पर, मुझे खुद और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय कमेटी, राष्ट्रीय जन कांग्रेस और चीनी लोक गणराज्य की राज्य परिषद का प्रतिनिधित्व कर रहे चीनी प्रतिनिधिमंडल के अन्य सदस्यों और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और सम्पूर्ण जनता को सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, सरकार और तमाम जनता तथा यहां उपस्थित सभी साथियों और दोस्तों को गरमजोशी भरी बिरादराना मुबारकबाद पेश करने का सम्मान प्राप्त हुआ है। (तालियां)

जैसाकि हमारे क्रांतिकारी शिक्षक लेनिन बार-बार संकेत दिये थे, 40 साल पहले सोवियत जनता द्वारा की गयी महान क्रांति ने विश्व इतिहास में नये युग की शुरूआत की है। ऐतिहासिक तौर पर कई तरह की क्रांतियां हुई हैं, पर कोई भी अक्टूबर समाजवादी क्रांति के मुकाबले की नहीं है।

हजारों सालों से मेहनतकश जनता और प्रगतिशील मानवता ने ऐसी दुनिया का ख्वाब देखा, जिसमें मानव द्वारा मानव का शोषण न हो। यह ख्वाब धरती के धरातल के छठें हिस्से पर इतिहास में पहली बार अक्टूबर क्रांति द्वारा कार्यान्वित किया गया था। यह क्रांति सिद्ध करती है कि भू-स्वामियों और बुर्जुआ के बिना जनता योजनाबद्ध तरीके से एक आजाद और खुशी भरा नया जीवन बिताने के लिए पूरी तरह से सक्षम है। यह वह भी सिद्ध करती है कि एक बार साम्राज्यवादी उत्पीड़न को खत्म कर देने से दुनिया के विभिन्न देश आपस में मैत्रीपूर्ण ढंग से रहने के लिए पूरी तरह योग्य है।

पिछले 40 सालों में सोवियत जनता एक कठिन पथ तय कर चुकी है। साम्राज्यवादियों ने दुनिया के पहले सोवियत गणतंत्र को नेस्तानाबूद करने की हर संभव कोशिश की। सोवियत संघ के दुश्मन एक समय उससे ज्यादा मजबूत लग रहे थे और दो बार उस पर हथियारबंद हमले भी किये, पर साहसी सोवियत जनता ने अपनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में आक्रमणकारियों के इन हमलों को पूरी तरह चकनाचूर कर दिया। (तालियां)

सोवियत संघ अजेय रहा है क्योंकि इस देश में समाजवादी व्यवस्था ने पूँजीवादी व्यवस्था को हटाया है और सर्वहारा की तानाशाही ने शोषक वर्गों की तानाशाही को हटाया है। यह ऐसा देश है, जो अपनी सामाजिक उत्पादक शक्तियों को उस रफ्तार से विकसित करता है, जिन्हें पूँजीवादी देश करने में नाकाबिल है और यह एक ऐसा देश है, जो सही में सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयतावाद का व्यवहार करता है, ईमानदारी से राष्ट्रीय उत्पीड़न का विरोध करता है और अपने-आपको मुक्त करवाने में उत्पीड़ित देशों की मदद करता है। ऐसे देश को अपनी खुद की सम्पूर्ण जनता का और दुनिया के दूसरे सभी देशों की जनता का जोशीला समर्थन हासिल होता है। सोवियत संघ को इन दोनों प्रकार का समर्थन उस दर्जे तक हासिल है, जितना इतिहास में किसी देश को हासिल नहीं हुआ।

पिछले 40 साल में सोवियत संघ का चेहरा पूरी तरह बदल चुका है। क्रांति से पहले सोवियत संघ आर्थिक और तकनीकी तौर पर तुलनात्मक रूप से पिछड़ा हुआ था। आजकल सोवियत संघ दुनिया के पहले दर्जे की औद्योगिक शक्ति बन चुका है। सोवियत संघ की जनता का जीवन स्तर निरंतर बढ़ते क्रम पर है। सोवियत संघ में शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संस्थानों के विकास का पैमाना पूँजीवादी देशों को मात देता है। सोवियत संघ ने दुनिया का सबसे पहला परमाणु बिजली घर स्थापित किया, यात्री जेट वायुयानों और अंतरमहाद्वीपी रॉकेट का पहला बैच तैयार किया और दुनिया का पहला और दूसरा मानव निर्मित उपग्रह प्रक्षेपित किया। पूरी दुनिया स्वीकार करती है कि सोवियत संघ द्वारा दो अवसरों पर मानव निर्मित उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण ने मानव द्वारा सृष्टि पर जीत के नये युग के दरवाजे खोल दिये हैं। न सिर्फ सोवियत जनता बल्कि पूरी दुनिया का सर्वहारा और पूरी मानवता इस पर गर्व महसूस करती है। (तालियां) सिर्फ कुछ एक प्रतिक्रियावादी ही नाखुश हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा व्यावहारिक कार्यों

को निपटाने में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सृजनात्मक प्रयोग ने सोवियत जनता के निर्माण कार्यों में अखंडित सफलता को सुनिश्चित किया। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 20वीं कांग्रेस द्वारा सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण के लिए प्रस्तुत किया गया चुनौतीपूर्ण कार्यक्रम इसका अच्छा उदाहरण है। व्यक्ति पूजा को हराने, खेती-बारी को विकास करने, उद्योग व निर्माण में प्रशासन को पुनः संगठित करने, संघीय-गणराज्य और स्थानीय संगठनों की शक्तियों को विस्तारित करने, पार्टी विरोधी गुट का विरोध करने, पार्टी में एकता मजबूत करने, पार्टी, सोवियत सेना व नौसेना में राजनीतिक कार्य को सुधारने के सोवियत पार्टी द्वारा लिए गये एहतियात, निःसंदेह सभी संस्थानों के सुदृढ़ीकरण और विकास को और आगे बढ़ायेगा।

दुनिया भर के लोगों ने सोवियत जनता द्वारा हासिल की गयी सफलताओं में अपने खुद के भविष्य को देखना शुरू कर दिया है। वस्तुतः सोवियत संघ का रास्ता, अक्टूबर क्रांति का रास्ता, पूरी मानवता की प्रगति के लिए एक साझा रौशन रास्ता है। (तालियां) दुनिया भर की जनता अक्टूबर क्रांति की 40वीं वर्षगांठ गरमजोशी से मना रही है, क्योंकि पिछले 40 साल के इतिहास ने उन्हें विश्वस्त कर दिया है कि निश्चित ही सर्वहारा बुर्जुआ को, समाजवाद पूँजीवाद को और उत्पीड़ित देश साम्राज्यवाद को हरायेंगे। बेशक जनता को मुश्किलों और टेढ़े-मेढ़े रास्तों का अभी भी सामना करना होगा। पर 36 साल पहले भी लेनिन ने बहुत ही अच्छा कहा था: ''महत्वपूर्ण बात यह है कि शुरूआत हो गयी है, रास्ता खुल गया है और पथ रौशन हो गया है।'' (तालियां)

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा नेतृत्व की गयी जन क्रांति हमेशा अक्टूबर क्रांति द्वारा शुरू की गयी विश्व समाजवादी क्रांति का हिस्सा रही है। चीनी क्रांति की अपनी खुद की राष्ट्रीय विशिष्टताएं हैं और इन्हें ध्यान में रखना पूर्णतः जरूरी है। पर हमने अपनी क्रांति में और समाजवादी निर्माण में सोवियत संघ की जनता और कम्युनिस्ट पार्टी के समृद्ध अनुभवों का पूरा-पूरा इस्तेमाल किया है। चीनी जनता अक्टूबर क्रांति और सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण के अनुभवों को पाकर खुशनसीब है। जिन्होंने उसे कम गलतियां करने, कई गलतियों से बचने और अपने कार्य को सहज पूरा करने के काबिल बनाया। भले ही वह अभी भी कई मुश्किलों का सामना कर रही हैं।

यह स्पष्ट है कि अक्टूबर क्रांति के बाद अगर किसी देश का सर्वहारा क्रांतिकारी रूसी क्रांति, सोवियत संघ के सामाजवादी निर्माण और सर्वहारा की तानाशाही के अनुभवों को गंभीरता से अध्ययन नहीं करता या उनकी अनदेखी करता है और इन अनुभवों को अपने देश की विशेष हालातों की रोशनी में विश्लेषणात्मक और सृजनात्मक तौर पर इस्तेमाल नहीं करता, तो वह लेनिनवाद पर महारत हासिल नहीं कर पायेगा, जो कि मार्क्सवाद के विकास में एक नया स्तर है। वह अपने देश में क्रांति और निर्माण की समस्याओं को हल नहीं कर पायेगा। वह मताग्रही या संशोधनवादी गलतियां करेगा। हमें इन दोनों भटकावों का विरोध करना चाहिए। पर वर्तमान में, संशोध नवादी भटकाव का विरोध करना विशेष तौर पर तात्कालिक कार्य है। उसके साथ में यह भी स्पष्ट है कि अक्टूबर क्रांति के बाद, जो सरकार सोवियत संघ से दोस्ताना संबंध नहीं रखती, वह अपनी जनता के सही हितों का नुकसान करती है। (तालियां)

आज की दुनिया में, कुल 90 करोड़ जनसंख्या वाले यूरोप और एशिया के देशों की एक श्रृखंला ने विजयपूर्ण तरीके से अक्टूबर क्रांति का पथ ले लिया है और एक शक्तिशाली विश्व समाजवादी तंत्र खड़ा कर लिया है। पूँजीवाद अपनी श्रेष्ठता को खो चुका है और समाजवाद अजेय बन गया है।

आखिर में समाजवादी व्यवस्था पूँजीवादी व्यवस्था की जगह ले लेगी, यह मानवीय इच्छा से परे एक वास्तविक नियम है। इतिहास का पहिया उल्टा घूमाने के लिए प्रतिक्रांतिकारी भले ही कितनी कोशिश करे, पर क्रांति देर-सबेर होकर रहेगी और हर हाल में जीतेगी। (तालियां) मूर्खों के कामों का वर्णन करने के लिए एक चीनी कहावत है, ''अपने पैर कुचलने के लिए पत्थर उठाना।'' हर देश के प्रतिक्रियावादी इसी तरह के ही मूर्ख हैं। उनका जनता पर दमन सिर्फ और व्यापक और उग्र क्रांति के लिए जनता को जगायेगा। (तालियां) क्या रूस के जार और च्याङ-काई-शेक द्वारा क्रांतिकारी जनता के दमन ने महान रूसी और चीनी क्रांतियों के उत्प्रेरक के रूप में काम नहीं किया था?

उपनिवेश, अर्द्ध-उपनिवेश अपने खुद के देश की जनता के उत्पीड़न पर अपने भाग्य को दांव पर लगाने के साथ-साथ साम्राज्यवादी युद्ध पर भी अपनी आशाएं टिकाते हैं। पर, वह युद्ध से क्या अपेक्षा रख सकते हैं? बीती अर्द्ध शताब्दी में हम दो विश्वयुद्ध देख चुके हैं। पहले विश्वयुद्ध के बाद रूस में महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति हो गयी। दूसरे विश्व युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप और पूर्व के देशों में और क्रांतियां हो गयीं। अगर साम्राज्यवादी युद्ध प्रेमी तीसरा विश्वयुद्ध शुरू करने के निए दृढ़संकल्प है, तो वह दूसरा कुछ नहीं बस पूँजीवादी व्यवस्था का अंत कर लेंगे। (तालियां)

समाजवादी देशों की सरकारें व जनता नयी शांतिपूर्ण जिंदगी के निर्माता हैं, हम बिलकुल भी युद्ध नहीं चाहते और दृढ़ता से नये विश्वयुद्ध के विरोधी हैं। सोवियत संघ, चीन और अन्य समाजवादी देश अंतरराष्ट्रीय तनाव को कम करने के निए लगातार काम करते रहे हैं। सोवियत संघ द्वारा निःशस्त्रीकरण और सामूहिक विनाश के हथियारों के निर्माण,

इस्तेमाल और परीक्षण पर रोक लगाने के बार-बार रखे गये प्रस्ताव, समाजवादी देशों के साझा दृष्टिकोण के द्योतक हैं और साथ ही सम्पूर्ण जनता के हितों के अनुरूप हैं। हम समाजवादी और पूँजीवादी देशों के दरमियान शांतिपूर्ण प्रतियोगिता और किसी देश के अंदरूनी मामलों का हल उसी देश की जनता की इच्छाओं के अनुरूप करने का पक्का समर्थन करते हैं। हमारा दृढ़तापूर्वक कहना है कि सभी देशों की सम्प्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान, अनाक्रमण, दूसरों के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप ना करने, समानता और आपसी लाभ और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के विश्व विख्यात पाँचों सिद्धांतों का अमल करना चाहिए।

अमेरिकी साम्राज्यवादी दूसरे देशों समेत समाजवादी देशों के अंदरूनी मामलों में हठधर्मिता के साथ दखलंदाजी करने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए वह चीन द्वारा ताइवान की मुक्ति में दखलंदाजी कर रहे हैं, उन्होंने हंगरी में क्रांति विरोधी दंगे करवाये हैं। वह खासतौर पर अमेरिका और समाजवादी शिविरों के बीच पड़ते देशों के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी करने में प्रबल है। अमेरिका तुर्की और इजरायल के रास्ते स्वाधीन सीरिया पर हमला करने की आज भी योजना बना रहा है। वह आज भी उपनिवेश विराधी मिस्त्र की सरकार का तख्ता पलटने के षड़यंत्र में लिप्त है। अमेरिका की सिरफिरी हमलावर नीति ने न सिर्फ मध्यपूर्व में संकट को बढ़ा दिया है, बल्कि उसने एक नया विश्वयुद्ध का खतरा भी खड़ा कर दिया है। दुनिया के सभी अमन पसंद और आजादी पसंद लोग सीरिया के साथ खड़े हैं और अमरीकी और तुर्की हमलावरों का विरोध करते हैं। बिल्कुल वेसे ही जैसे वह मिस्त्र के साथ खड़े थे और अंग्रेज, फ्रांसीसी और इजराइली हमलावरों का पिछले साल अक्टूबर में विरोध किये थे। सोवियत सरकार ने अमेरिका और तुर्की को अपनी हमलावर योजना फौरन त्यागने की चेतावनी दी है। चीनी सरकार और जनता सीरिया का खुद की रक्षा की संघर्ष में दृढ़तापूर्वक समर्थन करती है। (तालियों की लंबी गड़गड़ाहट)

साम्राज्यवादी भेड़ियों को याद रखना चाहिए कि वे दिन बीत गये हैं, जब वह मानवता को अपने हिसाब से चला सकते थे और वह दिन तो हमेशा के लिए गुजर चुके हैं, जब वह एशियाई और अफ्रीकी देशों को अपनी इच्छा अनुसार गढ़ लेते थे।

अमरीकी साम्राज्यवादी चीनी जनता की मुक्ति को नुकसान पहुंचाने की हमेशा कोशिश किये हैं और आज भी जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। आखिर में वह 60 करोड़ चीनी जनता को समाजवाद का बहादूरी भरा रास्ता अपनाने से नहीं रोक पाये। (तालियां) 8 सालों के कम समय में ही चीन ने विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी सफलताएं हासिल की है, जैसी कि वह पिछले सौ सालों में नहीं कर पाया। चीन में मुट्ठी भर दक्षिणपंथी ही समाजवादी रास्ता अख्तियार करने का विरोध करते हैं, राष्ट्रीय जीवन में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका का विरोध करते हैं, चीन और सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों के बीच करीबी गठबंधन का विरोध करते हैं। उनके इस व्यर्थ प्रयास को हमारे देश की जनता ने अपने जवाबी हमले से पूर्ण रूप से हरा दिया है। (तालियां)

चीनी जनता कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में तेजी और मजबूती से समाजवाद को विकसित करने के लिए एक प्रभावशाली भूल-सुधार अभियान चला रही है। यह अभियान उन अंतरविरोधों का सही हल करने के लिए है, जो जनता में व्याप्त है और जो राष्ट्रव्यापी विचार-विमर्श के द्वारा तुरंत हल होना चाहिए। यह चर्चा खुली भी है और मार्गदर्शन में भी, जिसे देहाती और शहरी इलाकों में इन सवालों पर चलाया जा रहा है। जैसेकि समाजवादी पथ और पूँजीवादी पथ, आधारभूत तंत्र और राज्य की मुख्य नीतियां, कम्युनिस्ट पार्टी और सरकारी कार्यकर्त्ताओं की कार्यशैली और जनता का कल्याण, एक ऐसी चर्चा जो तथ्यों और दलीलों पर आधारित है। यह जनता द्वारा स्व-शिक्षा और स्व-परिर्वतन का समाजवादी अभियान है और इसमें अभी तक बड़ी सफलता हासिल भी कर ली गयी है। जहां भी अभियान चलाया गया, वहां जनता की समाजवादी चेतना तेजी से बढ़ायी गयी है। गलत विचारों को साफ किया गया। काम में त्रुटियों को ठीक किया गया, जनता की कतारों में एकता बढ़ाई गयी और श्रम-अनुशासन और उत्पादकता बढ़ाई गयी। (तालियां) अब हम जनता के स्व-शिक्षा अभियान को 60 करोड़ जनता में चरणबद्ध और हिस्सा-दर-हिस्सा आगे बढ़ा रहे हैं और संभवत: अगले कुछ महीनों में राष्ट्रव्यापी सफलता प्राप्त कर ली जायेगी। भविष्य में हम हर साल या एक साल छोड़ करके भूल-सुधार अभियान चलाने का सोच रहे हैं- रूपांतरण के पूरे काल में विभिन्न सामाजिक अंतरविरोधों को हल करने के तरीके के तौर पर इसमें लगने वाला समय कम किया जा सकता है। इस तरीके के अमल का प्राथमिक शुरूआती बिंदु इस दृढ़ विश्वास में है कि जनता की बहुसंख्या आखिरकार हमारी तरफ है और वह तर्क को सुनेगी। अभियान में हमारे सभी अनुभवों में यह नुक्ता सिद्ध हो चुका है।

क्रांतिकारी अमल के दौरान, जनता के साथ करीबी संबंध बनाये रखने, जनता की पहलकदमी का सम्मान करने और आलोचना व आत्मालोचना का अमल करने के लेनिनवादी सिद्धांतों के अनुसार हमने भूल-सुधार चलाने का यह तरीका विकसित किया है। इस तरीके की सटीकता को वर्त्तमान समाजवादी स्व-शिक्षा अभियान में एक बार फिर साबित कर दिया है।

चीन ने अपने समाजवादी निर्माण के लिए कई क्षेत्रों में सोवियत संघ से बिरादराना मदद हासिल किया है। अक्टूबर समाजवादी क्रांति की 40वीं वर्षगांठ मनाते समय चीन को ऐसी दोस्ताना मदद देने के लिए, हमें सोवियत संघ की

कम्युनिस्ट पार्टी, सरकार और जनता को दिल की गहराइयों से आभार व्यक्त करने का मौका दें। (जोरदार उत्साहपूर्ण तालियां)

अपने बनने के तुरंत बाद ही चीनी लोक गणराज्य ने सोवियत संघ के साथ मित्रता, गठबंधन और आपसी सहायता की संधि सम्पन्न की। यह दो बड़े समाजवादी देशों का महागठबंधन है। हम सोवियत संघ और पूरे समाजवादी देशों के खेमे के साथ एक समान भाग्य और समान जीवन स्रोत के साझेदार हैं। (तालियां) हम सोवियत संघ की अध्यक्षता में समाजवादी देशों की एकजुटता को मजबूत करना, सभी समाजवादी देशों का एक पाक-पुणित अंतरराष्ट्रीय दायित्व समझते हैं। (तालियां)

सोवियत संघ की अध्यक्षता में समाजवादी देशों की एकजुटता और मित्रता में खलल डालने के प्रयास में अमेरिका की अध्यक्षता में साम्राज्यवादी शक्तियों ने फूट डालने के हर तरह के हथकंडे अपनाये। पर, असलियत साम्राज्यवादियों को जरूर ही निराश करेगी। समाजवादी देश सोवियत संघ की अध्यक्षता में पहले से कहीं ज्यादा करीबी से संगठित हैं। इतिहास के प्रारंभ से ही राष्ट्रों के लिए हितों की समानता, आपसी सम्मान और विश्वास और आपसी मदद और प्रेरणा पर आधारित इस तरह के संबंध जैसेकि समाजवादी देशों में है, संभव नहीं था। यह इसलिए क्योंकि समाजवादी देश बिलकुल नये प्रकार के हैं, जिनमें लूटेरे वर्ग सत्ता से बेदखल कर दिये गये हैं और मेहनतकश जनता सत्ता में हैं। इन देशों के आपसी संबंधों में प्रमुख एकीकरणकर्ता अंतरराष्ट्रीयतावाद और देशभक्ति का अमल होता है। हम साझे हितों और आदर्शों से करीबी तौर से जुड़े हुए हैं। अंतरराष्ट्रीय मजदूर संघ (डब्ल्यू. आई. ए.) के उद्घाटन भाषण में कामरेड मार्क्स ने कहा था, ''पिछले अनुभवों ने दिखाया है कि किस तरह उन बिरादराना संबंधों की अनदेखी करने से जिन्हें विभिन्न देशों के मजदूरों के बीच होना चाहिए था व एक-दूसरे के साथ खड़ा होने के लिए प्रेरित करने की अनदेखी करने से, उनके अलग-थलग प्रयासों की सजा उनकी साझी हार के तौर पर होगी।'' (तालियां)

प्रिय साथियों,

यह तथ्य की कामगार वर्ग के प्रतिनिधि और अलग-अलग देशों के जन समूह अक्टूबर क्रांति की 40वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा आयोजित की गयी महासभा में भाग लेने के लिए यहां उपस्थित हैं, यह दुनिया की जनता की ताकतों की महान एकजुटता को दर्शाता है। आवें, नई आरै महान सफलताएं हासिल करने के लिए समाजवादी देशों, कामगार वर्ग और उत्पीड़ित राष्ट्रों की एकजुटता को और मजबूत करने के लिए अपने प्रयास जारी रखें। (तालियां)

★ अक्टूबर समाजवादी क्रांति जिंदाबाद! (जिंदाबाद के नारों की गरज)

★ सर्वहारा और सम्पूर्ण दुनिया की शांति पसंद जनता एक हो! (नारों की जोरदार गरज)

★

महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ के अवसर पर नारे

★ दुनिया में महान कामरेड लेनिन-स्तालिन के नेतृत्व में रूस को पहला समाजवादी देश के रूप में स्थापना करनेवाली महान बोल्शेविक क्रांति जिंदाबाद!

★ बोल्शेविक क्रांति से शिक्षा लें, बोल्शेविक बनें, दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते से आगे बढ़ें!

★ आरएसएस व भाजपा के ब्राह्मणवादी हिन्दु फासीवाद के खिलाफ देशव्यापी जन आंदोलन का निर्माण करें!

कार्यकर्त्ताओं के बारे में

(यह लेख 1935 में संपन्न हुई कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के 7वें कांग्रेस में कार्यकर्त्ता व सांगठनिक समस्या पर कामरेड दिमित्रोव का दिया हुआ भाषण है। इस लेख की प्रासंगिकता को देखते हुए तेलुगु भाषा से हिन्दी अनुवाद किया गया है, ताकि हमारे पाठक इसे पढ़कर अपने व्यवहार में उतार सकें।

-संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

कामरेडो,

हमारे महत्वपूर्ण बड़े-बड़े प्रस्ताव के अत्यंत सटीक होने के बावजूद भी उसे अमल करनेवाले लोग हमारे पास नहीं होंगे, तो वे रद्दी कागजों जैसे रह जाते हैं। फिर भी अति महत्वपूर्ण इन कार्यकर्ताओं की समस्या के प्रति व हमारे द्वारा सामना कर रहे इस मुख्य समस्या के प्रति दुर्भाग्य से इस कांग्रेस में लगभग बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की कार्यकारिणी की रिपोर्ट पर सात दिनों तक बहस हुई है। कई देशों के कामरेडों ने बात रखे हैं, पर कम्युनिस्ट पार्टियों को सर्वहारा आंदोलन के लिए अत्यन्त जिगर के समान जरूरी इस समस्या पर औपचारिक रूप से एक बार छूने की तर्ज पर केवल कुछ ही लोग बहस किए हैं। सभी विषयों पर आर-पार का फैसला करनेवाले केवल जनता व कार्यकर्ता ही है, इस बात को हमारे पार्टियों को अपने व्यावहारिक कोशिश में अभी भी पहचानने की जरूरत है। कामरेड स्तालिन हमें सीख देते रहे हैं कि ''जिस तरह माली अपने बगीचे के प्रिय फलदार वृक्षों का पालन-पोषण करता है, उसी तरह हमें अपने कार्याकर्ताओं पर ध्यान देना है'' तथा ''जनता व कार्यकर्ताओं को समझकर उन्हें सम्मान देना है।'' ''हमारे लक्ष्य हासिल करने में उपयोगी हर मजदूर को हमें सम्मान देना है।'' लेकिन हमारी पार्टियां आज भी वो काम नहीं कर पा रही हैं।

कार्यकर्ता (कैडर) समस्या के प्रति उपेक्षापूर्ण तरीका अपनाना किसी भी हालत में काम का नहीं है, क्योंकि अत्यंत महत्वपूर्ण कामरेडों को हम संघर्षों में लगातार खोते रहते हैं। हमारा कोई पण्डितों का समाज नहीं है, लगातार बन्दुकों का सामना करनेवाली जुझारू आंदोलन, हमारे अत्यंत बलशाली, अत्यंत हिम्मतवाले एवं अत्यंत वर्गीय चेतना युक्त सभी शक्तियां पहली कतार में ही रहते हैं, दुश्मन ठीक इन्हीं पहली कतारों का शिकार करते रहता है। हत्याएं करके, जेलों में बंद करके व यातना शिविरों में रखकर असहनीय यातनाएं देकर हत्या करता है। विषेशकर फासीवादी देशों में यह प्रक्रिया और बढ़ जाती है। इसके चलते प्रतिदिन नये लोगों को भर्ती करना, उन्हें शिक्षित-प्रशिक्षित करना एवं मौजूदा कार्यकर्ताओं को सजगता से बचाना फौरी जरूरत बन जाती है।

कैडर समस्या विशेषकर फौरी जरूरत बनने का एक और कारण भी है। पार्टी के प्रभाव के चलते हमारे संयुक्त मोर्चा के जन आंदोलन तेज गती से बढ़ रही है। ऐसे में हजारों की तादाद में नये लोग व जुझारू मजदूर आगे आ रहे हैं। इतना ही नहीं हमारे कार्यकर्ताओं में शामिल होनेवाले लोग केवल सीधे-सादे युवा क्रांतिकारी शक्तियां, विगत में किसी भी राजनीतिक आंदोलन में भागीदारी न करते हुये अभी-अभी क्रांतिकारियों के रूप में बननेवाले मजदूर ही नहीं बल्कि सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य एवं उसके लड़ाकू लोग भी हैं। इन नये कार्यकर्ताओं के प्रति विशेष ध्यान देने की जरूरत है। गैर कानूनी व गोपनीय कम्युनिस्ट पार्टियों में इसकी जरूरत और बढ़ जाती है, क्योंकि कम सैद्धांतिक शिक्षण से लैस इन कामरेडों को अक्सर गंभीर राजनीतिक समस्याओं का हल अपने-आप खुद से करना पड़ता है।

कार्यकर्ताओं से संबंधित उचित (सही) नीति कैसी होनी चाहिए? यह समस्या हमारे पार्टियों का, युवा कम्युनिस्ट लीगों का एवं अन्य सभी जनसंगठनों के सारे क्रांतिकारी आंदोलन के लिए बहुत अहम सवाल है।

कार्यकर्ताओं की उचित नीति के तहत क्या-क्या विषय होनी चाहिए?

1) अपने कार्यकर्ताओं को अच्छे से जानना। हमारे पार्टियों में कतारों के बारे में नियमानुसार रग-रग से वाकिफ होने की पद्धति बिल्कुल नहीं है। इसी बीच फ्रान्स व पोलैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टियां, उधर पूरब में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने इस मुद्दे पर कुछ हद तक सफलता पायी है। जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी भी भूमिगत होने के पहले कैडरों के बारे में जानने की शुरूआत की थी। ये पार्टियां अपने-अपने बलों का ध्यान से अध्ययन शुरू की, तो तब तक किसी की नजर में नहीं पड़नेवाले कई अच्छे कामरेडों को पहचानने का अनुभव इन पार्टियों को प्राप्त हुआ है। दूसरी तरफ इन पार्टियों में तब सक्रिय विजातीय वर्गीय शक्तियों, सैद्धांतिक तौर पर कमजोर लोगों व राजनीतिक तौर पर नुकसानदेह लोगों को हटाकर पार्टी को स्वच्छ बनाने का कार्य भी शुरू किया गया। इसके लिए एक उदाहरण पर्याप्त है। फ्रान्स में सेलर, बेबेल, बोल्शेविक के सूक्ष्मदर्शी (खुर्दबीन) से परीक्षण करने पर पता चला कि कई लोग वर्ग दुश्मन के एजेण्ट्स साबित हुये, जिन्हें बाद में पार्टी

से निष्कासित किया गया। पोलैण्ड, हंगरी आदि देशों में, कार्यकर्ताओं के परीक्षण करने पर, अपनी असलियत को छिपाकर गोपनीय तरीके से पार्टी में मौजूद दुश्मन के एजेण्टों के कई गुट आसानी से उजागर हुए।

2) कार्यकर्ताओं को क्रमानुसार से उच्च पदों एवं जिम्मेदारियों के लिए भेजने का कोई औपचारिक तरीका नहीं होना चाहिए। पार्टी कार्यों में वह भी एक भाग है। उच्च स्तर की जिम्मेदारियों के लिए भेजे जानेवाले कम्युनिस्ट का जनता के साथ रिश्ता है या नहीं, इसका ध्यान न रखते हुए केवल पार्टी कार्यों को ही ध्यान में रखकर पदोन्नति करना उचित नहीं है। विभिन्न पार्टी कार्यकर्ताओं में अपने-अपने कामों को सफल करने की क्षमता है या नहीं तथा जनता में स्थित उनकी साख पर निर्भर हो कर पदोन्नति देना है। अभूतपूर्व नतीजा देनेवाले पदोन्नति की घटनाएं हमारे पार्टियों में कई मौजूद है। उदाहरण के लिए इसी कांग्रेस के अध्यक्षमण्डली में उपस्थित स्पेनिश महिला कामरेड डोलारेस हैं। दो साल पहले वे केवल साधारण पार्टी सदस्य थी, लेकिन वर्गीय दुश्मन से हुई सबसे पहला संघर्ष में ही वे महान आंदोलनकारी व महान योद्धा के तौर पर साबित हुई, बाद में उस पार्टी के नेतृत्वकारी संस्था के लिए पदोन्नति लेकर उस संस्था का नाम रोशन करनेवाली सदस्या के तौर पर साबित हुई हैं।

मैं ऐसे उदाहरणों की झड़ी लगा सकता हूं, लेकिन पदोन्नतियों में ज्यादातर एक ठोस नीति के बिना अस्त-व्यस्त तरीके से जारी है, इसलिए पदोन्नति हमेशा अच्छा नतीजा देनेवाला नहीं साबित होते हैं। कुछ सदस्यों में केवल नसीहत देनेवाले, पण्डितायी प्रदर्शित करने वाले, बक-बक करनेवाले एवं हकीकत में हमारे लक्ष्य को नुकसान पहुंचानेवाले लोग नेतृत्वकारी स्थानों के लिए पदोन्नति पा रहे हैं।

3) कार्यकर्ताओं का बहुत अच्छे तरीके से इस्तेमाल करने का सामर्थ्य व प्रत्येक सक्रिय कार्यकर्ता के महत्वपूर्ण गुणों को पहचान कर बढ़िया से इस्तेमाल करने की सामर्थ्य हममें होना चाहिए। सभी सर्वसंपन्न गुणवाले आदर्श लोग हमें कभी नहीं उपलब्ध होंगे, पद्धति के अनुसार हम कार्यकर्ताओं का भर्ती लेकर उनके कमी-कमजोरियों को सुधारकर कर्तव्यों के अनुरूप उन्हें बनाना है। हमारे पार्टियों में कैडरों का उचित इस्तेमाल न कर पाने की कई घटनाएं उभरकर आयी है। ईमानदार अच्छे कम्युनिस्टों को, वे अच्छे से कर सकने वाले उचित कामों में लगाये होते, तो कई गुणा अच्छे परिणाम हासिल किये होते।

4) कैडरों का सही आवंटन व वितरण सबसे पहले आंदोलन के मुख्य जोड़ों व मुख्य स्थानों को सभी किस्म के जनता से आनेवाले, जनता से जुड़े लोग एवं पहलकदमी लेने वाले मजबूत लोगों के हाथों में रहने लायक हो, ध्यान रखना है और भी मुख्य बात यह है कि सभी मुख्य जिलों के लिए ऐसे जुझारू लोग पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए। पूंजीवादी देशों में कैडरों को एक जगह से दूसरी जगह बदली करना उतना आसान काम नहीं है। इसमें कई पेंच व दिक्कतें होती हैं। पर्याप्त पैसा के अभाव, पारिवारिक समस्याएं आदि कई मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। इन सब पर ध्यान देना होगा। लेकिन आमतौर पर हम इन समस्याओं को पूरी तरह उपेक्षित करते हैं।

5) कैडरों को क्रमानुसार से सहयोग करना, सतर्कता से, ध्यान से सूचनाएं देना, भाईचारा के तौर पर नियंत्रित करते रहना, कमी-कमजोरियों को सुधारना, दैनंदिन काम में ठोस मार्गदर्शन देना। इन तरीकों में कैडरों के साथ सही पद्धति में सहयोग करना है।

6) कैडरों की सुरक्षा पर उचित ध्यान देना है। हालात में ऐसी स्थिति उप्तन्न होते ही कार्यकर्ताओं को वहां से निकालकर पिछले हिस्सों (बेस एरिया) में भेजना तथा उनके स्थान पर दूसरों को तैनात करना, सही वक्त पर करना हमें सीखना होगा। पार्टी नेतृत्व, मुख्य रूप से गुप्त पार्टियां जहां काम कर रही हैं, उन देशों में कैडरों की सुरक्षा पर अत्यधिक ध्यान रखने की हम मांग करते हैं। जर्मनी में कम्युनिस्ट पार्टी भूमिगत होने पर जितना गंभीर नुकसान उठाया है, जरा एक बार याद कर लीजिए। कैडरों के बारे में उचित पद्धति का अनुसरण करने के द्वारा ही हमारी पार्टियों व हमारे सभी शक्तियों का सही इस्तेमाल कर व्यापक जन आंदोलन के खान से नियमित रूप से गुणवत्तापूर्ण सक्रिय कार्यकर्ताओं का नया भर्ती कर सकेंगे।

कैडरों के चयन प्रक्रिया का पैमाना क्या है?

1) सर्वहारा वर्ग के लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प, पार्टी के प्रति समर्पण, दुश्मन के साथ मुकाबला के लिए डटे रहना, संघर्ष में व जेल-अदालत में डटकर मुकाबला करना।

2) जनता के साथ यथा सम्भव घनिष्ठ रिश्ता। विभिन्न कामरेड्स अपने-अपने कार्यक्षेत्र में जनता के हितों के साथ पूर्ण रूप से एक हो जाना। जनता की नब्ज पर पकड़ हासिल करना। उनके मनोभाव (विचार) व जरूरतों को जानना। हमारे पार्टी के ढांचे में नेतृत्व

को शान-शौकत सबसे पहले जनता, उन्हें अपना नेताओं के रूप में स्वीकारने पर, उनके नेतृत्वकारी क्षमता को जनता द्वारा अपना निजी अनुभव से पहचान कर विश्वास करने पर, संघर्षों में उन नेताओं के नि:स्वार्थ भावना व दृढ़ विश्वास पर निर्भर होकर पाना होगा।

3) एक मुद्दे का इतिहास और वर्तमान का स्वतंत्र रूप से विश्लेषण कर जानने की दक्षता व फैसला करने में दायित्व लेने के लिए निडर होकर रहना होगा। दायित्व लेने के लिए हिचकिचाने वाला नेता नहीं होगा। पहलकदमी नहीं लेनेवाला, ''केवल मुझको बताया गया काम ही मै करूंगा'' कहनेवाला बोल्शेविक नहीं है। पराजित होने पर हिम्मत हार कर हताश न होने वाला, जीत हासिल होने पर घमण्ड में चूर न होने वाला एवं फैसलों को अमल करने में दृढ़ता को प्रदर्शित करनेवाला ही सच्चा बोल्शेविक नेता है। संघर्ष से संबंधित ठोस समस्याओं का स्वतंत्र रूप से हल करने की हालत में तैनात होकर व अपने फैसलों के लिए पूरा दायित्व खुद का है, ऐसा एहसास करनेवाला कार्यकर्ता उन्नत रूप से विकसित हो सकते हैं।

4) अनुशासन, वर्ग दुश्मन के खिलाफ जारी संघर्ष में बोल्शेविक लाइन से हटकर विजातीय वर्ग रूझानों के खिलाफ जारी संघर्ष में मजबूत बनकर बोल्शेविक के तौर पर कुशल बनना होगा।

कार्यकर्ताओं का चयन सही है या नहीं, इसका निष्कर्ष निकालने में उपरोक्त बताये गये पैमाने व शर्तों पर सबसे ज्यादा अड़े रहना एवं ध्यान देना है। क्योंकि आम तौर पर व्यवहार में अक्सर ज्यादा बोल सकने वालों को व ज्यादा लिख सकने वालों को महत्व दिया जा रहा है। लेकिन वास्तविक रूप से काम करने वालों को व काम कर सकने वालों को नहीं। उदाहरण के लिए तुलनात्मक रूप से बोलने व लिखने में शायद उतना अच्छा न भी हो लेकिन अन्य महत्वपूर्ण कामों (दृढ़, पहलकदमी लेने वाले, जनता से घनिष्ठ संबंध रखने वाले, संघर्ष में कूदने का सामर्थ्य वाले, दूसरों को संघर्ष में उतारने की क्षमता रखने वाले) में योग्य कार्यकर्ताओं की उपेक्षा कर आम तौर पर ज्यादा बोलने वाले व ज्यादा लिखने वाले जबकि उनके व्यवहार में काम न कर सकने पर भी, दूसरों की तुलना में अस्थिर व कमजोर होने के बावजूद नेतृत्व के लिए पदोन्नति दी जा रही है। क्या अतिवादी, सैद्धांतिक कठमुल्लावादी व नियमों को रटने वाले लोग इकट्ठे होकर सर्वहारा के वास्तविक नेताओं व समर्पित जन कार्यकर्ताओं को दरकिनार करनेवाले कई घटनाएं मौजूद नहीं हैं?

हमारे नेतृत्वकारी कार्यकर्ता को क्या करना है? वे अपने ज्ञान को बोल्शेविक जोश के साथ व मजबूत क्रांतिकारी इरादे के साथ उसे अंजाम तक पहुंचानेवाली दृढ़ता के साथ जोड़ना है.....

कामरेड्स कार्यकर्ता लोग अपने सबसे उच्च स्तर का प्रशिक्षण, संघर्ष के दौरान मुश्किलों को पार करके परिक्षाओं का सामना कर मजबूती से डटे रहने में हासिल करते हैं और आप सबलोग जानते हैं कि अनुकूल व प्रतिकूल व्यवहारों के मिसालों से भी हासिल करते हैं। हड़ताल, प्रदर्शनों के संदर्भ में जेल, अदालतों में अभूतपूर्व साहसिक व्यवहारों के सैकड़ों उदाहरण मौजूद हैं। वीरतापूर्ण व्यवहारों का हजारों-हजार उदाहरण मौजूद हैं। लेकिन दूर्भाग्य यह है कि कायरता, अस्थिर व दृढ़ता का अभाव के चलते अंतत: आंदोलन को ही छोड़कर भागना व पतन होना भी कुछ कम नहीं हैं। हम अक्सर ऐसे अच्छे-बूरे उदाहरणों को भी भूल जाते हैं। इन उदाहरणों के बारे में हम अपने लोगों को सीख नहीं देते हैं। इनमें से किसे अपनाना है और किसे दूर रखना है, यह हम नहीं बताते हैं। हमारे कामरेड्स, जुझारू कार्यकर्ताओं के व्यवहार वर्ग संघर्ष में, पुलिस की इण्ट्रोगेशन (पूछ-ताछ) में, जेल, कन्संट्रेशन कैंपों में वे कैसा व्यवहार किए हैं, इसका हमें संजीदगी से अध्ययन करना है। उनमें से अच्छे मिसालों को बाहर निकालकर अन्य लोगों को उसका अनुसरण करने लायक प्रचार करना है। उन घटनाओं में बोल्शेविक की खिलाफत तथा तुच्छ घटनाओं को दरकिनार करना है।

हमारे कई कामरेडों ने लिपजिग् अदालती सुनवाई से शुरू कर बुर्जुआ फासीवादी अदालतों में किये गये घोषणाओं पर नजर दौड़ाने से पता चलता है कि हमारे बहुत से कामरेड बढ़िया समझदारी को विकासित करते हुए अदालतों के सामने बोल्शेविक व्यवहार का सच्चा मिसाल कायम कर रहे हैं।

लेकिन हमारे पार्टी के कितने लोगों को, कम से कम इस कांग्रेस के प्रतिनिधियों के तौर पर पहुंचे आपलोगों में से कितने को ऐसी जानकारी है? रूमेनिया के रेलवे मजदूरों की अदालती सुनवायी में, जर्मनी के फासीवादियों के द्वारा फांसी दिये जाने वाले फीटेशल्ज की सुनवायी में, हमारे बहादुर जापानी कामरेड इचिकावा की सुनवायी में, बुल्गारिया में क्रांतिकारी सैनिकों की सुनवायी में और भी ऐसे कई सुनवाइयों में प्रदर्शित किये गये सर्वहारा वर्गीय बहादूरी का ब्यौरा व समाचार हममें से कितने को पता है?

उदाहरण के लिए वैसे महत्वपूर्ण सर्वहारा वर्गीय बहादुराना व्यवहार को हमें खूब प्रचार करना है। हमारे कतारों में, पूरे सर्वहारा वर्गीय कतारों में रहनेवाला हिम्मत हारने का अवगुण, सुविधा भोगी अवगुण, अन्य सभी किस्म के तुच्छ अवगुण, छिछोरापन आदि के साथ बहादुराना व्यवहार की तुलना करके बताना है। सर्वहारा वर्गीय आंदोलन में कार्यकर्ताओं का

शिक्षण-प्रशिक्षण करते समय इन उदाहरणों का अक्सर इस्तेमाल करना है।

कामरेडो, हमारे पार्टी के नेतागण अक्सर कहते रहते हैं कि हमारे पार्टी में पर्याप्त मात्रा में लोग नहीं है। आंदोलन, प्रचार कार्यों के लिए, पत्रिकाएं चलाने के लिए, मजदूर संगठनों, युवा, महिलाओं आदि में काम करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हैं। इस अभाव के बारे में कामरेड लेनिन के द्वारा दी गयी शिक्षा को हमें याद करना जरूरी होगा।

''लोग नहीं हैं- फिर अनगिनत संख्या में लोग मौजूद है। लोग अनगिनत संख्या में गिनती से ज्यादा मौजूद है। क्योंकि सर्वहारा वर्ग भी, समाज के विभिन्न स्तर के जनता में से कई लोग ऊब कर विद्रोह करने के लिए सोचने वाले व तानाशाही के खिलाफ जारी संघर्ष में अपनी पूरी ताकत झोंककर काम करने के लिए तैयार होने वाले प्रत्येक वर्ष बहुत ज्यादा लोग आगे आ रहे हैं। तानाशाही की बर्बरता को सभी लोग पूर्ण रूप से नहीं पहचानने के बावजूद दिन प्रतिदिन और ज्यादा लोग इसकी तीव्रता व बर्बरता का शिकार बनकर पहचान रहे हैं। फिर भी ऐसे वक्त केवल हमारे लिए लोग नहीं मिलते हैं। क्योंकि हमारे लिए राजनीतिक नेतागणों का अभाव है। हमारे लिए होशियार, क्षमतायुक्त व सांगठनिक दक्ष लोगों का अभाव है। सभी शक्तियों को काम देने योग्य, नालायकों को भी इस्तेमाल करने योग्य व व्यापक जनता को गोलबन्द कर उसी वक्त सभी जगहों में एक ही पद्धति व एक ही वस्तु के रूप में रहने लायक एकीकृत सांगठनिक कोशिश करने वाले संगठनकर्ताओं का अभाव है।''

कामरेड लेनिन के उपरोक्त बातों को हमारे सभी पार्टियों को गहराई से समझकर अपने दैनंदिन कार्यों का मार्गदर्शन के रूप में आत्मसात करना होगा। पर्याप्त मात्रा में लोग मौजूद हैं, पर उन्हें हमें अपने संस्थाओं में, हड़ताल-प्रदर्शन, मजदूरों के कई जन संगठन व संयुक्त मोर्चों में ध्यान देकर शामिल करना होगा। काम करते समय संघर्ष में उनका विकास होने लायक सहायता करना होगा। सर्वहारा वर्ग के लक्ष्य के लिए उनके शक्ति का सही इस्तेमाल होने लायक उचित स्थानों पर उन्हें तैनात करना है।

कामरेडो, हम कम्युनिस्ट हैं, लक्ष्य हासिल करनेवाले हैं, हम काम करनेवाले हैं। हम पूंजी के हमले के खिलाफ, फासीवाद के खिलाफ, साम्राज्यवादी युद्ध के खतरे के खिलाफ व पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष करते हैं। यही हमारी समस्या है। सटीक तौर पर यही व्यवहारपूर्वक कर्तव्य हाथ में लेने के चलते कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं को क्रांतिकारी सैद्धांतिक साधन-संसाधन हासिल करना ही पड़ता है। क्योंकि व्यवहार के संदर्भ में महान शिक्षक कामरेड स्तालिन के अनुसार लगन से काम करनेवालों को सिद्धांत, एक सुनिश्चित मार्गदर्शन देने की क्षमता, स्पष्ट दूरदृष्टि, काम में भरोसा व हमारे लक्ष्य की सफलता पर असीमित विश्वास पैदा करता है।

लेकिन सच्चा क्रांतिकारी सिद्धांत, व्यवहार से कटा हुआ उदास सैद्धांतिक नियमों का बकवासयुक्त परिभाषाओं का झड़ी लगाने का विरोधी है। हमारे सिद्धांत कठमुल्लावाद नहीं हैं। कामरेड लेनिन के अनुसार वह व्यवहार का मार्गदर्शक है। 'वो देखो' उस तरह के सिद्धांत का हमारे कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यकता है। उन्हें इसकी जरूरत इतना अधिक है, जितना कि उन्हें प्रत्येक दिन भोजन, हवा व पानी की जरूरत है।

हमारे काम में बेकार योजनाओं व खतरनाक साहित्यिक भाषा का परित्याग करने की वास्तविक इच्छा रखनेवाले कोई भी हो, व्यवहारिक कोशिश नामक लालिमा लिये लोहे से उसे जलाना होगा। जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पहली कतार में रहकर संघर्ष करना होगा। महान ऊर्जायुक्त व सर्वशक्ति संपन्न मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन के सीखों को आत्मसात करना तथा सत्ता स्थापित करने के लिए लगातार कोशिश करने के द्वारा उपरोक्त बुराइयों को जलाना होगा।

इसी अवसर पर हमारे विद्यालयों के काम के बारे में विशेषकर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। हमारे पार्टी स्कूल को ग्रंथों को बांचने वाले पण्डितों, नियम सुनानेवालों व ग्रंथ के भागों का उल्लेख करनेवालों के रूप में बिल्कुल शिक्षित नहीं करना है। उस स्कूल से निकलने वाले सर्वहारा वर्ग के लक्ष्य सिद्धी के लिए पहली कतार में खड़े होकर संघर्ष करने वाले योद्धा होना चाहिए। केवल उनकी हिम्मत और साहस के चलते व उनकी बलिदानी भावना के चलते ही नहीं बल्कि आम कार्यकर्ताओं से भी बेहतर, ये लोग श्रमिकों की मुक्ति के मार्ग को स्पष्टता से समझने के चलते, दूरदृष्टि से विकसित होकर पहली कतार में लड़ने के लिए बने योद्धा जैसा होना चाहिए। कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के सभी हिस्से को अब बिल्कुल वक्त न गंवाते हुए स्कूलों का सही पद्धति से संचालन करने के दायित्व को ध्यान से निभाना है। पार्टी स्कूलों को चाहिए कि वे अपने छात्र को संघर्ष करनेवाले योद्धा बनाये, जैसे लोहार अपने भट्ठी में औजारों को बनाता है।

मुझे ऐसा लगता है कि पार्टी स्कूलों का प्रधान कार्य होना चाहिए कि पार्टी सदस्य व युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों को सिखाने का विभिन्न देशों के ठोस हालात में मार्क्सवादी-लेनिनवादी पद्धति को किस तरह अमल करना है? आम तौर पर दुश्मन के खिलाफ कैसे लड़ना है, यह नहीं सिखाना है। अमुक ठोस दुश्मन के खिलाफ लड़ाई कैसे लड़नी है, यह सिखाना चाहिए। इसके लिए लेनिनवाद में क्या लिखा हुआ है ही नहीं, बल्कि उसका सजीव व क्रांतिकारी प्रेरणा को अध्ययन करके आत्मसात करना बहुत जरूरी है।

पहली पद्धतिः सिद्धांत को सिद्धांत के रूप में सिखाना, यहां-वहां की शिक्षा को ज्यादा तादाद में उनके दिमागों में हर संभव चढ़ाने की कोशिश करना, सैद्धांतिक अवधारणायें व प्रस्तावों का साहित्य शैली में बखान, केवल संदर्भ के लिए उस विशेष देश के समस्याओं का, एक मजदूर वर्ग के आंदोलन के इतिहास का, रीति-रिवाजों का, उस कम्युनिस्ट पार्टी के अनुभव का जिक्र करना।

दूसरी पद्धतिः यहां पर सैद्धांतिक शिक्षा में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी उसूलों पर पकड़ हासिल करना, वह छात्र अपने देश के मजदूर वर्ग संघर्ष के कुंजीभूत समस्याओं का व्यावहारिक रूप से अध्ययन करने पर निर्भर रहता है। वहां से, वह अपने काम में लौटने के बाद क्षेत्र में सामना करने वाले समस्याओं का खुद विश्लेषण करेगा, स्वतंत्र रूप से काम करने वाला संगठनिक योग्यता वाला बनेगा, इसी क्रम में वर्ग दुश्मन के खिलाफ जनता को संघर्ष में उतारने वाला योग्य नेता के तौर पर उभर पायेगा।

अब हम पार्टी स्कूलों से सफलता पाने वाले सबको मजबूत उपयुक्त लोगों के तौर पर साबित कर सकते हैं। शब्दों का भण्डार, रटा गया कई नियम, पुस्तकों के बहुत ज्ञान व पण्डिताई का प्रदर्शन सभी पर्याप्त मात्रा में मौजूद है, लेकिन हमें चाहिए कि सच्चा बोल्शेविक संगठनकर्ता व जनता के नायक। ऐसे लोगों का हमें बहुत-बहुत जरूरत है, आज ही जरूरत है। सैद्धांतिक लेख नहीं लिख पाने से (वह भी हमारे जरूरत पर ही) डूबने वाला कुछ नहीं है। जनता को संगठित कैसे करना है? नेतृत्व देना क्या होता है? उन्हें यह पता रहना है। बाधाओं से बिना घबराए पार पाने की क्षमता रहना है।

क्रांतिकारी सिद्धांत, क्रांतिकारी आंदोलन को निचोड़ कर आम नियम बनाने का, कम्युनिस्ट लोग केवल अपने देशों के पिछले अनुभव को ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के आंदोलन व अन्य दलों के समकालीन संघर्ष के अनुभवों का भी संजीदगी से व होशियारी से उपयोग में लाना है। इसका मतलब यह है कि एक देश के, एक तरह की हालात में लागू किये गये संघर्ष के रूप व पद्धतियों को दूसरे देश के, अलग हालात में यांत्रिक तौर पर लागू करना सही नहीं है। अक्सर हमारे पार्टियों में ऐसा हो रहा है।

सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टी से संबंधित काम काज व तरीकों को भी, पूंजीवादी पद्धति जहां हावी है, उन देशों में यूं ही अनुसरण करना तथा उसका फोटो कॉपी लेकर लागू करने से वह कितना भी उन्नत लक्ष्य से करने पर भी नुकसान पहुंचाने के सिवाय अच्छे नतीजे नहीं देंगे। अक्सर यही होता है। रूसी बोल्शेविकों के अनुभव से हमें सीखना यह है कि एक ही अंतर्राष्ट्रीय लाइन को प्रत्येक देश के विशेष जीवन हालात में मजबूती से कैसे लागू किया जाय? पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ जारी संघर्ष में सभी किस्म के जुमलेबाज नियमों का निर्जीव रूप से संदर्भ से हटकर इस्तेमाल करने, पण्डितायी का प्रदर्शन करने, कठमुल्लावाद को निर्दयता से दरकिनार, अलग-थलग व अपमानित कर हराना सीखना होगा।

सीखना व पढ़ना बहुत जरूरी है। कामरेडो, लगातार सीखते रहना होगा, संघर्ष के दौरान, बाहर रहने पर, जेलों में, हर जगह व हर कदम में अध्ययन करना है। अध्ययन करना है व संघर्ष करना है। संघर्ष करना है व अध्ययन करना है। इसके लिए हमें मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन व स्तालिन के महान सीखों को काम में व संघर्ष में स्तालिनवादी दृढ़ता से, वर्ग दुश्मनों से लड़ते समय, बोल्शेविक लाइन से हटने वालों से लड़ते समय व नियमों के विषय में रहने वाली स्तालिनवादी समझौताहीनता से बाधाओं का सामना करते समय स्तालिनवादी निडरता से स्तालिनवादी क्रांतिकारी वास्तविकता को जोड़ना है व मिलाना है।

''हमें मालूम होना चाहिए कि कार्यकर्ताओं को कैसे पहचाना जाय? हमें किसी कार्यकर्ता की जिन्दगी के थोड़े से अरसे अथवा उसकी जिन्दगी की किसी एक घटना के आधार पर ही उसके बारे में अपनी राय कायम नहीं कर लेनी चाहिए, बल्कि उसकी जिन्दगी और उसके काम को समूचे रुप में आंकना चाहिए। यह कार्यकर्ताओं को पहचानने का मुख्य तरीका है।''

''राष्ट्रीय युद्ध में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका'' (अक्टूबर 1938), संकलित रचनाएं (अंग्रेजी संस्करण), ग्रन्थ 2, पृष्ठ 202

चीनी डॉक्टर हुयांग-यु-हसियांग की कहानी

(चीनी पत्रिका 'पीकिंग रिव्यू' के अंक-41, 11 अक्टूबर, 1968 में ''ऐसे बुद्धिजीवियों का मजदूर, किसान और सैनिक स्वागत करेंगे'' नाम से एक ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वाले डॉक्टर हुयांग-यु-हसियांग की कहानी प्रकाशित की गई थी, इसका हिन्दी अनुवाद हम यहां दे रहे हैं। इसे हम यहां इसलिए प्रकाशित कर रहे हैं, क्योंकि यह हमें सिखाता है कि हम सब को, नेतृत्व को कैडर के साथ, कमांडर को सैनिकों के साथ और कार्यकर्त्ताओं को जनता के साथ घुल-मिल जाना चाहिए व गरीब एवं निम्न-मध्यम किसानों की सेवा में उतर जाना चाहिए और उनसे लगातार शिक्षा प्राप्त करते रहना चाहिए।

-संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

हुयांग-यु-हसियांग, चुयांशा जिला, शंघाई के जियांगजेन जन कम्यून के जन स्वास्थ्य केंद्र के एक डॉक्टर, माओ-त्से-तुङ युग के एक क्रांतिकारी बुद्धिजीवी हैं। माओ-त्से-तुङ विचारधारा के रोशन लाल झण्डे को ऊंचा उठाते हुए वे दृढ़तापूर्वक गरीब और निम्न-मध्यम किसानों में जाते और मजदूरों, किसानों और सैनिकों से पुनर्शिक्षा पाते हैं। इस तरह वह अपने ऊपर से आपराधिक, संशोधनवादी शिक्षा व्यवस्था के प्रभाव को खत्म कर रहे हैं और गरीब, निम्न-मध्यम किसानों की पूरी तरह से सेवा करते हैं।

गरीब और निम्न मध्यम किसानों से एकात्म होने का रास्ता अपनाना

''डॉक्टर हुयांग-यु-हसियांग हर गरीब और मध्यम किसान के साथ हैं। वह बिलकुल वैसा बुद्धिजीवी है, जैसा हम पसंद करते हैं। हम इस तरह के पढ़े-लिखे नौजवानों का देहाती इलाके में स्वागत करते हैं।'' जियांगजेन कम्यून की एक बुढ़ी गरीब किसान औरत के यह शब्द, गरीब और मध्यम किसानों के व्यापक जन समूहों की भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

1963 में, जब हुयांग 20 साल का था, तब मेडिकल कॉलेज में 5 साल की पढ़ाई खत्म कर अपने जन्म स्थल जियांगजेन कम्यून वापस लौटा था। उन गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के पास, जिन्होंने उनका पालन-पोषण किया था, से मिलना उसके लिए फख्र (सात्विक अभिमान) की बात होनी चाहिए थी। पर, जब वह वापस लौटा तो संशोधनवादी शिक्षा से प्रभावित था, वह देहात में काम करने के लिए अनिच्छुक था। उसने किसी बड़े शहर के अस्पताल में जाने और सफेद कोट पहनने वाला डॉक्टर बनने की चाह मन में रखी थी। फलस्वरूप वह क्लीनिक में काम करते समय भुलक्कड़ बन गया और उदासीन-लापरवाह रूख अख्तियार कर लिया। गरीब और मध्यम किसानों को लगा कि वह उनमें से नहीं था।

रात को कोई मरीज आने से वह बड़बड़ाता, ''तुम रात के बजाय दिन में क्यों नहीं आये?''

गरीब व मध्यम किसान जवाब देते, ''हम चाहते थे कि वह (मरीज) आपके पास दिन में आता, पर वह नहीं आया। दिन में आ जाता, पर कौन जानता था कि इसे रात में तेज बुखार हो जाएगा?''

उस समय हुयांग समूह के लिए पूरी तरह समर्पित और अपने काम में असीम जिम्मेदारी की समझ रखने वाले गरीब और मध्यम किसानों के उम्दा गुणों को महसूस नहीं कर सकता था। वह यह अनुभव नहीं कर सकता था कि इस तरह की जनता का इलाज करना कितना सम्मान का काम है।

1964 में पूरे देश के गांवों और कस्बों में माओ विचारधारा के सृजनात्मक अध्ययन और क्रियान्वयन का आंदोलन उभर कर एक ज्वार बन गया। जियांगजेन कम्यून की जनता का चेयरमैन माओ की रचनाओं के सृजनात्मक अध्ययन और क्रियान्वयन के उत्साही प्रयासों को देखना हुयांग के लिए एक शिक्षा थी। उसने खुद भी चेयरमैन माओ की रचनाएं ''जनता की सेवा करो'' और ''नार्मन बैथ्यून की याद में'' का अध्ययन शुरू कर दिया। कामरेड चङ-सज्-त्, जिन्होंने पूरे मन से जनता की सेवा की थी, की उत्तम भावना और कामरेड नार्मन बैथ्यून, जो हजारों मील का सफर कर चीन आये और अपने काम में जिम्मेदारी की असीम भावना दिखाए.... जनता और साथियों के साथ असीम प्यार की भावना दिखाए। दिखाए, के बारे में विचार कर वह खुद पर अपने स्वार्थी विचारों के लिए शर्मिंदा था। उसने चेयरमैन माओ की शिक्षा का भी अध्ययन किया, ''बुद्धिजीवी कुछ हासिल नहीं कर सकते, अगर वह मजदूरों और किसानों से घुल-मिल नहीं जाते। अंतिम विश्लेषण में क्रांतिकारी और गैर-क्रांतिकारी या प्रतिक्रांतिकारी बुद्धिजीवियों में विभाजन रेखा यह है कि वह मजदूरों और किसानों में घुल-मिल जाने को तैयार है या नहीं और असल में ऐसा करते हैं या नहीं।'' इस शिक्षा ने उसे प्रोत्साहन और शक्ति प्रदान की।

उस साल बीमारियों की रोकथाम के लिए बड़े पैमाने पर अभियान चलाया गया। हुयांग अपने क्लीनिक से निकला और एक ब्रिगेड में बीमारियों के रोकथाम के काम की जिम्मेदारी ले ली। उस समय से वह गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के बीच चला गया और बुद्धिजीवियों का खुद को मजदूरों, किसानों और सैनिकों से जोड़ने के साफ स्पष्ट रास्ते को

अपना लिया, जैसाकि चेयरमैन माओ ने दिखाया था।

गरीब और निम्न-मध्यम किसानों द्वारा स्वागत किये जाने वाला डॉक्टर बनना

हुयांग गरीब और निम्न-मध्यम किसानों के साफ-स्पष्ट दृष्टिकोण, उनकी गहरी वर्गीय भावनाओं और असीम क्रांतिकारी कार्यशक्ति से बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ था। चेयरमैन माओ और समाजवादी समाज से प्रबल प्रेम के कारण वे अक्सर आज की खुशियों की तुलना में पुराने कष्टों को याद करते और अपने अनुभवों के आधार पर पुराने दुष्ट समाज की भर्त्सना करते। इसने हुयांग-यु-हिसयांग को वर्गों और वर्ग संघर्ष के बारे में सजीव और गहन सबक दिया।

एक बार जब वह एक बुढ़ी गरीब किसान औरत का इलाज कर रहा था, तो वह उसे बतायी कि किस तरह पुराने समाज में जब देहातों में महामारियां फैलती थी, बहुत सारे लोग मर जाते थे। क्योंकि उसका परिवार बहुत गरीब था, डॉक्टर को नहीं बुला सकता था, इसलिए उसका बच्चा गंभीर बीमारी से मर गया था। उसकी आँखों में आंसू आ गये और भावुक होकर वह बोली ''नौजवान, समाजवाद अच्छा है। आज तुम्हारे जैसे डॉक्टर हम गरीब व निम्न-मध्यम किसानों का इलाज करने के लिए अक्सर देहातों में आते हैं। यह चेयरमैन माओ के नेतृत्व की वजह से है। अगर आज मेरा बच्चा बीमार हुआ होता, तो वह कभी न मरता।'' गरीब किसान औरत के इन शब्दों ने हुयांग के मन में गरीब व निम्न-मध्यम किसानों की सेवा करने की दृढ़ता को और मजबूत कर दिया।

उन दिनों में जब वह देहाती इलाकों का चक्कर लगा रहा था, उसने ऐसे गरीब व निम्न-मध्यम किसानों को तब भी काम करते हुए देखा, जब उनकी सेहत ठीक नहीं थी। मेहनतकश जनता के इन अच्छे गुणों ने उसे समझने के काबिल बनाया कि एक डॉक्टर के तौर पर उसे अस्पताल के बाहर देहाती इलाके में जाना चाहिए और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों से पुनर्शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए और उत्पादन के मोर्चे की अग्रिम पंक्ति पर उन्हें सेवा करनी चाहिए।

1965 की गर्मियों की एक शाम जब हुयांग कम्यून के क्लीनिक में ड्यूटी पर था, चेनहू ब्रिगेड के किसान एक बुढ़ी किसान औरत को ले आए, वह कोमा (बेहोशी) में थी और उसकी जान खतरे में थी। जब वह उसको आपतकालीन चिकित्सा दे रहा था, तो उसके दिमाग में यह चल रहा था कि आगे क्या करना है? उस बुढ़िया की उम्र और कमजोर शरीर के कारण उसकी क्लीनिक में इलाज करना जोखिम भरा था। खराब रास्ते के कारण उसे बड़े अस्पताल ले जाना भी खतरनाक हो सकता था। वह सोच रहा था कि क्या किया जाए? उसी क्षण उसके कानों में चेयरमैन माओ के शब्द गूंज उठे, ''घायलों को अच्छा करो, मर रहे लोगों को बचाओ, क्रांतिकारी मानवतावाद का व्यवहार करो'' व ''कड़ी मेहनत हमारे सामने पड़े उस वजन की तरह है, जो उसे कंधे पर उठाने के लिए हमें चुनौती दे रहा हो।'' उसने इस वजन को उठाने का संकल्प लिया।

उसने प्रांतीय जन अस्पताल में फोन किया और मरीज का इलाज करने में मदद के लिए एक डॉक्टर को भेजने को कहा। दूसरी तरफ फोन उठाने वाला डॉक्टर बुर्जुआ विश्व दृष्टिकेण से भरा था। उसने कठोर हृदय से जवाब दिया: ''हम व्यस्त हैं। मरीज को भेज दो।'' यह शब्द सुनकर हुयांग का खून खौल उठा। पर, धैर्य के साथ माओ विचारधारा का प्रचार करते हुए उसने डॉक्टर को माओ की शिक्षाओं के अनुरूप कार्य करने और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों की सेवा करने का आग्रह किया। आखिरकार प्रांतीय अस्पताल मरीज की मदद के लिए एक डॉक्टर भेजने के लिए सहमत हो गया।

मरीज तीन दिन और तीन रात बेहोश रहा। आराम, नींद और खाने की परवाह न करते हुए हुयांग उसके इलाज में लगा रहा। एक सप्ताह के इलाज के बाद वह ठीक हो गयी। क्लीनिक से जाते वक्त किसान बुढ़िया की आँखें भर आयी, उसने हुयांग को धन्यवाद दिया। हुयांग ने जवाब दिया, ''ऐसा हमें चेयरमैन माओ ने सीखाया है।'' दीवार पर टंगी माओ की तस्वीर की तरफ देखते हुए बुढ़िया ने हमेशा चेयरमैन माओ की शिक्षाओं पर चलने का संकल्प लिया। उसने हुयांग को कहा: कामरेड, तुम बिलकुल वैसे हो, जिसका हम स्वागत करते हैं।

गरीब और निम्न-मध्यम किसानों के बीच रहते हुए हुयांग ने जाना कि उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ बाकी है। उनकी व्यस्तता के मौसमों के दौरान भी चेयरमैन माओ की रचनाओं के रचनात्मक अध्ययन और क्रियान्वयन में डटे रहने से गहराई से प्रभावित होकर हुयांग भी रोजाना अध्ययन में निरंतरता दिखाने लगा। चेयरमैन माओ की शिक्षाओं और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों द्वारा उत्पादन में दिखाये गये क्रांतिकारी उत्साह और जिम्मेदारी की भावना ने उसे अपना काम और अच्छे से करने के लिए उत्साहित किया। उसने जाना कि उसके द्वारा किया गया हर इलाज, उसके द्वारा लगाया गया हर चक्कर और गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के साथ उसका हर संपर्क उसके लिए एक शिक्षा था, इसलिए वह खुशी से और बिना थके काम करता था। लगातार काम करना और अपने मरीजों के इलाज के लिए लंबे चक्कर लगाना आम बात थी। पिछले कुछ सालों से तो उसने छुट्टी वाले दिन भी छुट्टी नहीं ली। गर्मियों के मौसम में, जब बिमारियां बढ़ जाती है, वह कम्यून के क्लीनिक में या किसी उत्पादन ब्रिगेड में ही सोता था। इस तरह वह मरीजों का इलाज करने के लिए हमेशा तैयार और आसानी से उपलब्ध रहता था।

नंगे पैरों वाले डॉक्टरों का अमल के दौरान प्रशिक्षण

1965 में, हमारे महान नेता चेयरमैन माओ ने एक महान आह्वान जारी किया, ''चिकित्सा और स्वास्थ्य कार्यों में देहाती इलाकों पर जोर दें।'' कम्यून ने 'नगें पैरों वाले डॉक्टर'- अल्पकालीन कृषि कार्यकर्ता और अल्पकालीन मेडिकल कार्यकर्ता- तैयार करने का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम बनाया। इस खुशखबरी से हुयांग उल्लास से भर गया। वह अपने खुद के अनुभवों से जानता था कि गरीब और निम्न-मध्यम किसानों को इस तरह के मेडिकल कार्यकर्ता की फौज की कितनी जरूरत थी। उस समय भले ही स्वास्थ्य कार्य पर नियंत्रण पूँजीवादी पथगामियों के हाथों में था। मेडिकल चिकित्सा ने ''व्यवस्थापन'' और ''नियमन'' के संशोधनवादी कचरे को आगे बढ़ाने के लिए हर संभव हाथ-पैर चलाये थे। पर, हुयांग ने इसके उलट रूख अख्तियार किया। उसने खुद जिस तरह की शिक्षा ग्रहण की थी, उसे याद किया और शिक्षा में इस संशोधनवादी लाइन से गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के बच्चों को शिकार ना बनने देने की ठान ली थी। पर जब उसने नये प्रशिक्षण तरीके का प्रस्ताव रखा, तो पूँजीवादी पथगामियों ने उसके मत को दरकिनार कर दिया।

महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति ने सर्वहारा क्रांतिकारियों को देहाती मेडिकल सेवाओं पर कब्जा करवा दिया। हुयांग उस समय उत्साह से भर गया, जब उसे ''नंगे पैरों वाले डॉक्टरों'' को प्रशिक्षण देने का कार्य सौंपा गया था। शिक्षा के सिद्धांत पर चेयरमैन माओ की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए उसने ''नंगे पैरों वाले डॅक्टरों'' के प्रशिक्षण के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार किया। इसे दो टूटी-फूटी झोपड़ियों में शुरू किया गया। कक्षा में छात्र चेयरमैन माओ के उद्धरणों का अध्ययन करते और रचनात्मक तरीके से माओ विचारधारा के अध्ययन और क्रियान्वयन के अनुभवों का आदान-प्रदान करते। कक्षा में शिक्षकों और छात्रों द्वारा एक दूसरे से सीखने के तरीके को प्रशिक्षण के तौर पर अपनाया गया। हुयांग का घर पास में ही था, पर वह अपना विस्तरबंद झोपड़ियों में ही ले आया और छात्रों के साथ ही भूसे पर सोना शुरू कर दिया। जब छात्र अपना प्रशिक्षण पूरा कर अपने-अपने उत्पादन दलों में लौट आये, तब भी हुयांग उन्हें अभ्यास से अपने कौशल विकसित करने में मदद करना जारी रखा।

एक गरीब किसान चियांङ-कयुई-लान, जो कि कम्यून की एक सदस्य थी, दिल की बीमारी से पीड़ित थी। वह अक्सर कम्यून के डॉक्टरों को उसे घर पर ही इलाज करने के लिए कहती, उसे कई बार इलाज के लिए शंघाई जाना पड़ता था। हुयांग ने एक ''नंगे पैर वाली डॉक्टर'' वाङ-कुई-चेन को अपने साथ ले जाकर चियांङ का इलाज उसके घर पर ही जाकर करने का फैसला किया ताकि वाङ अभ्यास से उस दिल की बीमारी का इलाज करना सीखे और चियांङ का बेमतलब का खर्चा भी बच जाए। इस तरह वाङ-कुई-चेन ने वह ज्ञान हासिल कर लिया, जो वह कक्षा में हासिल नहीं कर सकती थी।

वाङ-कुई-चेन ने तेजी से प्रगति की, एक दिन एक गरीब किसान औरत सलाह-मशविरे के लिए आई। वह तेज धड़कन और सांस लेने में दिक्कत महसूस कर रही थी। वाङ अब ज्यादा अनुभवी डॉक्टर थी, उसने मरीज के दिल का स्टेथोस्कोप से मुआयना किया, फिर पैरों पर सूजन की जाँच की। यह देखकर कि उसके पैर फुले हुए हैं, उसने दूसरे लक्षणों के बारे में पूछ-ताछ की। आखिर फैसलानुकूल तरीके से बताया,, ''तुम्हें रियुमैटिक हार्ट डिजीज है।'' उसके आकलन को बाद में कम्यून डॉक्टरों ने सही ठहराया। यह शिक्षा के उस तरीके की विशिष्ट उदाहरण थी, जिसे ''लड़ते हुए लड़ना सीखना'' कहते हैं। हुयांग द्वारा ''नंगे पैरों वाले डॉक्टरों'' को प्रशिक्षण देने में इस तरीके का इस्तेमाल करते देख गरीब व निम्न-मध्यम किसान बहुत प्रसन्न थे। वे कहते ''यही रास्ता अख्तियार करना सही है, खुद को किताबों में घुसाये रखना किसी काम का नहीं है।''

गरीब व निम्न-मध्यम किसानों से पुनर्शिक्षा हासिल करना

हुयांग मानता था कि अध्यापन की प्रक्रिया के साथ ही साथ गरीब और निम्न-मध्यम किसानों से उनकी अच्छी आदतें सीखने, चेयरमैन माओ के रचनाओं का रचनात्मक अध्ययन और क्रियान्वयन सीखने और अपने विश्व दृष्टिकोण की बदलने की प्रक्रिया भी है।

एक बार वह एक ''नंगे पैरों वाले डॉक्टर'' के साथ मच्छरमार दवा छिड़कने में लगा हुआ था। जब वह सुअरों के बाड़े पर पहुंचे, तो वह दुर्गंध की वजह से पीछे हट गया, जबकि ''नंगे पैरों वाला डॉक्टर'' सीधे सुअरबाड़े में घुस गया और दवा छिड़कने लगा। हुयांग तुरंत समझ गया कि उसके अंदर के बुर्जुआ विचार की वजह से वह पीछे हट गया था। वह उसी समय सुअरबाड़े में कूद पड़ा और ''नंगे पैरों वाले डॉक्टर'' के साथ मिलकर दवाई छिड़कने लगा। उसने सोचा कि सिर्फ इस तरह से ही वह गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के करीब पहुंच सकता है।

हाल ही में, हुयांग ने चेयरमैन माओ के इस नये निर्देश का अध्ययन किया है, ''पुराने स्कूलों और कॉलेजों के बहुसंख्यक छात्र अपने-आपको मजदूरों, किसानों और सैनिकों के साथ एकरूप कर सकते हैं, कुछ ने अस्वीकार और नवीनीकरण किये हैं, तब भी उन्हें जरूर ही सही लाइन के मार्गदर्शन में मजदूरों, किसानों और सैनिकों द्वारा पुनः शिक्षित होना चाहिए और उन्हें अपनी पुरानी विचारधारा पूर्णतः बदल देनी चाहिए। ऐसे बुद्धिजीवियों का मजदूरों, किसानों और सैनिकों द्वारा स्वागत किया जायेगा।'' यह निर्देश हुयांग के लिए जबर्दस्त प्रेरणा देने वाला था। देहातों में बिताये सालों की तरफ जब वह मुड़कर देखता है, तो अनुभव करता है कि उसने जो प्रगति की है वह माओ विचारधारा की शिक्षा और गरीब और निम्न-मध्यम किसानों के द्वारा दी गयी पुनर्शिक्षा का ही नतीजा है। आने वाले दिनों में, वह चेयरमैन माओ की रचनाओं को और अच्छे से अध्ययन करने, गरीब व निम्न-मध्यम किसानों के साथ और ज्यादा एकरूप होने और देहातों के तीन क्रांतिकारी संघर्षों (वर्ग संघर्ष, उत्पादन के लिए संघर्ष और वैज्ञानिक शोध) में कूद पड़ने, वर्ग संघर्ष में अपनी चेतना बढ़ाने और जनता गरीब व निम्न-मध्यम किसानों की और अधिक सेवा करने की कसम खाता है।

नक्सलबाड़ी की 50वीं सालगिरह पर उसकी प्रासंगिकता के बारे में

(महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष की 50वीं वर्षगांठ के मौके पर जेल जीवन व्यतीत कर रहे एक वरिष्ठ कामरेड द्वारा लिखित यह लेख हमें हाल में ही मिला है, इस लेख में हमारे आंदोलन के बारे में कुछ विरोधाभासी बातें भी हैं। ऐसी बातों से लाल चिनगारी संपादकमंडल अपनी असहमति जाहिर करते हुए भी इस लेख को प्रकाशित कर रही है। इस लेख के माध्यम से हम पाठकों को इस लेख पर बहस के लिए आमंत्रित करते हैं, ताकि हमारी पूरी कतार को वैचारिक लाभ हो सके।

-संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

अभी 2017 चल रहा है। आज से ठीक 50 वर्ष पहले 25 मई को नक्सलबाड़ी घटना घटी थी, जिसे 'वसंत का वज्रनाद कहा गया था। नक्सलबाड़ी पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिला का एक गांव का नाम है, जहां भूमिहीन और गरीब किसानों ने संगठित व सशस्त्र होकर सामंतों से लोहा लिया था। जमींदारों के जमीन पर लाल परचम गाड़कर अपना कब्जा जमा लिया था। जमींदार गांव छोड़कर भाग खड़े हुए तब उनकी रक्षा में पुलिस आयी, फिर पुलिस से भी संघर्ष हुआ, जिसमें नौ आदिवासी किसान (महिला व बच्चे समेत) शहीद हुए। नक्सलबाड़ी घटना के ठीक 50 साल पूर्व 'दस दिन में दुनिया हिल उठी' थी। वर्ष 1917 में रूस में मजदूर वर्ग का पहला राज्य के रूप में दुनिया के सामने प्रकट हुआ, जो यूनाईटेड सोशालिस्ट सोवियत रीपब्लीक (USSR) के रूप में जाना गया। समाजवाद, जिसे बुर्जुआ वर्ग और उसके बुद्धिजीवियों ने काल्पनिक है, कहकर उपहास उड़ाया करते थे, वही सोवियत रूस का समाजवाद अब उनका नींद उड़ाने लगा। इस वर्ष रूसी क्रांति का शतवार्षिकी है। ज्ञतव्य हो कि रूसी क्रांति के नेता कामरेड लेनिन और स्तालिन थे। रूसी क्रांति और वहां का समाजवाद मार्क्स-एंगेल्स के द्वंद्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवादी दर्शन और सर्वहारा राजनीति का वास्तविक रूप था। ऐसे ऐतिहासिक वक्त में नक्सलबाड़ी संघर्ष का 50वां वर्ष पूरा होने जा रहा है। याद यह भी हो कि नक्सलबाड़ी आंदोलन मार्क्सवाद-लेनिनवाद व माओ त्सेतुङ विचारधारा (अभी मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद) के आलोक में उठ खड़ा हुआ था। इसलिए इस अवसर पर हम नक्सलबाड़ी आंदोलन के महत्व और प्रासंगिकता तथा आज भी उसकी जरूरत है, के अहमियत पर विचार करेंगे।

23 मई, 1967 को बिगुल किसान नामक एक किसान को भूमि के एक टुकड़े को जोतने के लिए कोर्ट से आदेश मिला था। जब वह उस जमीन को जोतने गया, तब भू-स्वामी के गुण्डों ने उसे जमकर पीटा, जिसको लेकर तनाव उत्पन्न हो गया। इसके बाद 24 मई, 1967 को पुलिस आयी। नक्सलबाड़ी में पुलिस के साथ किसानों का संघर्ष हुआ, जिसमें पुलिस अधिकारी सोनाम बांग्दी मारा गया। 25 मई, 1967 को पुनः भारी संख्या में पुलिस आयी, किसानों के साथ फिर संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में पुलिस की गोली से नौ किसान मारे गये, जिसमें अधिकांश महिलाएं थीं। इसके बाद नक्सलबाड़ी बगावत के रास्ते पर चल पड़ा, जिसकी चिनगारी पूरे भारतवर्ष में फैल गयी। देश के कोने-कोने में नक्सलबाड़ी के तर्ज पर क्रांतिकारी किसान आंदोलन फूट पड़ा- श्रीकाकुलम, मुशहरी, भोजपुर, डीही-सोनारपुर, कांकसा, गोपीबल्लभपुर एवं लखीमपुर-खिरी आदि प्रमुख हैं। नक्सलबाड़ी का संघर्ष सिर्फ जमीन, जमींदार एवं पुलिस (राजसत्ता) के खिलाफ नहीं था, बल्कि यह भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में लंबे समय से हावी संशोधनवाद के भी खिलाफ था। ज्ञात हो कि सीपीआई (एम) के संशोधनवादी लाइन की खिलाफत करते हुए ही कामरेड चारू मजुमदार, कामरेड कानू सन्याल और कामरेड जंगल संथाल के नेतृत्व में नक्सलबाड़ी आंदोलन उठ खड़ा हुआ था। नक्सलबाड़ी आंदोलन का मूल तात्पर्य था-

(1) जोतने वालों के हाथ में जमीन और क्रांतिकारी किसानों के कमेटी के हाथ में राजनीतिक हुकूमत
(2) चुनाव का बहिष्कार
(3) सशस्त्र गुरिल्ला संघर्ष
(4) छापामार सेना का गठन एवं
(5) दीर्घकालीन लोकयुद्ध की रणनीति आदि।

नक्सलबाड़ी संघर्ष का आज 50 वर्ष पूरा होने जा रहा है। इतने वर्षों में नक्सलबाड़ी धारा के संगठनों के बीच बदलाव आये हैं। नक्सलबाड़ी घटना के बाद 22 अप्रैल, 1969 को सीपीआई (एमएल) का गठन हुआ। बाद में, खासकर कामरेड सीएम (कामरेड चारू मजुमदार) के शहादत के बाद इसमें कई टूटें हुई। परिणामतः कई ग्रुप व दल बने। बाद में उनमें से कईयों के बीच एकता हुई और फिर टूट भी। आज कल सीपीआई (एमएल) नाम के कई पार्टियां कार्यरत हैं, जिसके बीच कई फर्क हैं।

याद हो कि नक्सलबाड़ी आंदोलन के बाद उभरी स्थिति और देशव्यापी क्रांतिकारी किसान आंदोलन को सही दिशा देने व आगे चलकर एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण के लिए ऑल इंडिया को-आर्डिनेशन कमेटी ऑफ कम्युनिस्ट रेवोल्यूशनरी

(AICCCR) का गठन किया गया था। बाद में जब सीपीआई (एमएल) का गठन हुआ तब उसमें भारत के कई कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन जो को-आर्डिनेशन कमेटी में थे, उसमें शामिल नहीं हुए। उनकी आपत्ति सीपीआई (एमएल) पार्टी गठन की प्रक्रिया व अन्य सवालों को लेकर था, जिसमें दक्षिण देश ग्रुप भी एक था। बाद में दक्षिण देश ग्रुप ने 20 अक्टूबर, 1969 को माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर (MCC) का गठन किया, जिसके नेता थे कन्हाई चटर्जी, अमूल्य सेन एवं चंद्रशेखर दास। एमसीसी ने नक्सलबाड़ी के मूल तात्पर्य पर अडिग रहते हुए क्रांतिकारी किसान संघर्ष को बिहार, बंगाल एवं झारखंड में आगे बढ़ाया। 21 सितम्बर, 2004 में सीपीआई (एमएल) पीपुल्स वार ग्रुप और MCCI का विलय होने के बाद भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) गठन हुआ।

आज हम नक्सलबाड़ी धारा के संगठनों को दो भागों में बांट सकते हैं। एक जो आज भी नक्सलबाड़ी के मूल तात्पर्य पर अचल व अटल है, जिसका प्रतिनिधित्व भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) तथा अन्य कुछ सीपीआई (एमएल) ग्रुप करते हैं और दूसरा जो नक्सलबाड़ी के मूल तात्पर्य से हटकर सशस्त्र संघर्ष को तिलांजलि देकर, गुप्त पार्टी को खुला पार्टी में रूपांतरित कर, संसदीय रास्ते के पथिक बन गये हैं। जिसका प्रतिनिधित्व सीपीआई (एमएल) लिबरेशन, सीपीआई (एमएल) न्यू-डेमोक्रेसी एवं सीपीआई (एमएल) कानू सन्याल ग्रुप व अन्य करते हैं। बिल्कुल साफ है नक्सलबाड़ी संघर्ष का वह धारा जिन्होंने चुनावी लाइन को अख्तियार किया है, वे नक्सलबाड़ी आंदोलन के क्रांतिकारी धारा से हटकर संशोधनवादी धारा में शामिल हो चुके हैं। वे सीपीआई (एमएल) के नकाब में एक और सीपीआई एवं सीपीआई (एम) हैं। नक्सलबाड़ी का एक अलग और विशेष महत्व इसलिए है कि उसने सीपीआई और सीपीआई (एम) के चुनावी लाइन के खिलाफ विद्रोह करके सशस्त्र संघर्ष के रास्ते को अपनाया। कामरेड चारू मजुमदार इस लाइन के अगुआ थे, इसलिए कामरेड चारू मजुमदार का नाम लेकर जो लोग व दल संसदीय सुअरबाड़ा में घुसे हैं या घुसने की फिराक में हैं, वे वस्तुतः नक्सलबाड़ी और कामरेड सीएम के खिलाफ हैं। सिद्धांततः वे नक्सलवादी न हो सकते और न माने जा सकते हैं, क्योंकि उनके लिए अब 'नक्सलबाड़ी एक ही रास्ता' नहीं है।

नक्सलबाड़ी आंदोलन का 50वां वर्ष पूरा होने जा रहा है। किसी खास आंदोलन को इनते वर्षों तक टिका व जिंदा रहना एक बड़ी बात है और इस आंदोलन की उपलब्धि भी। यह उस आंदोलन को प्राप्त जन समर्थन और जन गोलबंदी की भी तसदीक करता है। उसमें भी वह आंदोलन जो शांतिपूर्ण नहीं बल्कि अपने शुरूआत से ही सत्ता के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में रत हो, जिसके खिलाफ न केवल स्थानीय पुलिस बल्कि अर्द्ध-सैनिक बल एवं सेना (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से) लड़ रही है। दमन इतना प्रचंड व क्रूर कि उस आंदोलन के संस्थापक व नेता कामरेड सीएम को पुलिस लॉकअप में ही मार दिया जाता है। युद्धरत उस पार्टी के कई केंद्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो सदस्यों को फर्जी मुठभेड़ों में मार दिया गया है और आज भी यह सिलसिला जारी है। इतना ही नहीं वार्ता के नाम पर सरकार उन्हें बुलाती है (जैसे कामरेड आजाद को) और फिर ठंडे दिमाग से मारकर मुठभेड़ बताती है। ऐसी बर्बर हालत में भी उस संघर्ष का जीवित रहना और आगे बढ़ना एक आश्चर्यजनक घटना मालूम पड़ता है। जिस आंदोलन के बारे में बार-बार घोषणा की जाती है कि वह अब खत्म हो गया या शीघ्र खत्म कर दिया जायेगा। इसके बावजूद वह आंदोलन फिर से फिनिक्स पक्षी की तरह जिंदा हो जाता है। दोबारा वह पूरे जोश और ताकत के साथ और बड़े दायरे और आयाम को लिए हुए प्रकट होता है जिससे भारत के शोषक-शासक वर्ग और साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच हलचल और हाहाकार मच जाती है। जो कभी एक गांव का संघर्ष था, आज देशव्यापी संघर्ष बन गया है। देश के लगभग 600 जिलों में से आधे इस आंदोलन के चपेट में है। कहा जाता है कि इस आंदोलन ने पशुपति से तिरूपति तक एक बड़ा लाल गलियारा तैयार कर लिया है।

इस आंदोलन के बारे में देश के एक पदेन प्रधानमंत्री (मनमोहन सिंह) कहते हैं कि 'नक्सलवाद देश का सबसे बड़ा आंतरिक खतरा व चुनौती है' तो दूसरी ओर देश का एक पूर्व प्रधानमंत्री (बीपी सिंह) कहते हैं कि देश की जो हालत है (उदारीकरण, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण के कारण), उसमें मन करता है कि मैं भी माओवादी बन जाऊं, क्योंकि वही एक मात्र इस हालत में बेहतर तरीकों से लड़ सकते हैं।

2009 में जब पी. चिदंबरम गृहमंत्री बने, तब उन्होंने नक्सलवाद को एक-सौ दिन में खत्म कर देने की घोषणा की, पर वैसा हुआ नहीं तब एक साल का समय लिया। जब एक साल बाद भी खत्म नहीं हुआ तब तीन साल का समय तय किये, पर आज उनके घोषणा का आठवां वर्ष चल रहा है। गत माह (24 अप्रैल) को सुकमा घटना के बाद कहा जा रहा है कि यह भाकपा (माओवादी) की आतंकी कार्रवाई है। 2009 में गृहमंत्री ने जो ऑपरेशन ग्रीन हंट शुरू किया था, जो आज भी बदस्तूर जारी है। ऑपरेशन ग्रीन हंट में बीएसएफ, सीआरपीएफ, कोबरा बटालियन, एसएसबी के अलावा स्थानीय पुलिस व थल सेना व वायु सेना से मदद लिया जा रहा है। आंध्र-ओड़िशा बॉर्डर (एओबी), बस्तर (दण्डकारण्य), बंगाल, झारखंड एवं ओड़िशा व छत्तीसगढ़ के अन्य भागों में ऑपरेशन ग्रीन हंट चलायी जा रही है। दरअसल यह जनता पर थोपा गया युद्ध है। ऑपरेशन ग्रीन हंट 'घेरा डलो और विनाश करो' की एक खुरेंजी नीति है, जिसमें बड़ी संख्या में आदिवासी मारे जा रहे हैं।

इतने बड़े पैमाने पर 'घेराव व दमन' के बावजूद जल-जंगल-जमीन की लड़ाई जारी है। आज जंगल से आवाज आ रही है- नक्सलबाड़ी जिन्दाबाद। धधकते खेत-खलिहानों से इन्कलाबी नारा 'जोतने वालों को जमीन दो' गूंज रही है, क्रांतिकारी जन कमिटी (आरपीसी) के हाथ में राजनीतिक हुकूमत छत्तीसगढ़, उडीसा एवं झारखण्ड के आदिवासी कायम कर रहे हैं। 'आक्रमण ही आत्मरक्षा का एकमात्र उपाय है' कामरेड माओ के नीति पर बिहार के दलित समुदाय ने अमल किया और जीत भी हासिल की और अब देश का दलित समाज उसी दिशा में बढ़ रहा है। 'नक्सलबाड़ी एक ही रास्ता' की आवाज देश के विश्वविद्यालयों में उठ रही है। संसद और सांसद चिंतित है, नक्सलवादियों को लेकर, विधानसभाओं में नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा 'विकास' की राशि खर्च की जाए, की मांग जोरदार ढंग से उठ रही है। आज जनता के हर प्रतिवाद एवं प्रतिरोध को सरकार नक्सलवादी/माओवादी कहकर दमन करना शुरू कर देती है। चाहे रैलियां हो या कन्वेंशन, धरना हो या प्रदर्शन, घेराव हो या बंद, सत्याग्रह हो या भूख हड़ताल या नारेबाजी, इन सभी कार्यक्रमों के पीछे सरकार एवं पुलिस को नक्सलवादियों/माओवादियों का हाथ नजर आता है। जल, जंगल, जमीन, नदी, पहाड़ बचाने की लड़ाई हो या विस्थापन विरोधी लड़ाई, अभिव्यक्ति की आजादी की मांग हो या कारखाने में आठ घंटे का काम या उचित मजदूरी की मांग, सब में नक्सलवादी/माओवादी का हाथ है, सरकार कहती है। भारत के जेलों में सबसे ज्यादा नक्सलवादी/माओवादी राजनीति व आन्दोलन से जुड़े हुए राजनीतिक बंदी बंद हैं। नक्सलवादी नेता नथुनी मिस्त्री (पीएन जी) पिछले 16 सालों से विचाराधीन बंदी के रूप में बंद हैं। भारत में ब्रिटीश साम्राज्यवाद के खिलाफ चले आजादी की लड़ाई के बाद, खासकर 1947 के कथित आजादी के बाद इतनी बड़ी संख्या में अन्य किसी भी पार्टी व आन्दोलन से जुड़े लोगो ने शोषित-उत्पीड़ित जनता के मुक्ति के लिए शहादतें नहीं दी है। सन् 1967 से लेकर अबतक लगभग 15 हजार से उपर नक्सलवादी शहीद हो चुके हैं, जिसमें साधारण समर्थक से लेकर केन्द्रीय कमेटी व पोलित ब्यूरो के सदस्य तक शामिल हैं। देश के सबसे वंचित, उपेक्षित, शोषित-उत्पीड़ित व हाशिये पर धकेल दिये गए तबकों, वर्गों, जातियों, राष्ट्रीयताओं व क्षेत्रों में आज भी नक्सलवादी कार्यकर्ता मौजूद हैं। वे ही उस जनता को संगठित कर रहे हैं, शिक्षित कर रहे हैं और संघर्ष में उतार रहे हैं और उनके साथ कंधा से कंधा मिलाकर अपने अमूल्य प्राणों को न्योछावर कर रहे हैं। नक्सलवाद की मूल धारा भकपा (माओवादी) की नौवीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस के दस्तावेज में अपने आगामी लक्ष्य को निर्धारित करते हुए तीन कार्यभार तय किये हैं- 1. छापामार क्षेत्र को आधार क्षेत्र में बदल डालो, 2. छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में बदल डालो, 3. पीएलजीए को पीएलए में बदल डालो। अपने इस मिशन में वे कितना दूर तक पहुंचे हैं, इसका आकलन अब तक उनके द्वारा सामने नहीं आया है। पर इतना सत्य है कि उनका पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी (पीएलजीए) बड़े-बड़े हमले करते आ रहा है, जिसमें भारी संख्या में अर्द्ध-सैनिक बल मारे जा रहे हैं। हालांकि ऑपरेशन ग्रीन हंट शुरू होने के बाद भाकपा (माओवादी) को भी भारी क्षति उठानी पड़ी है। उसके कई महत्वपूर्ण नेता मारे गए हैं और कई गिरफ्तार कर कर लिए गए हैं। फलतः जिस ढ़ंग से उनका विस्तार हो रहा था, उसमें कमी आयी है। संघर्ष के इलाकों से सरेण्डर की घटनाएं भी सामने आ रही है और उनके कैडरों के अधःपतन की समाचार भी सुर्खियां बन रही है। ऑपरेशन ग्रीन हंट के बाद हुए क्षति के उपर पीएलजीए के चीफ वासवराज ने अपने एक साक्षात्कार में बतलाया है कि अबतक हमारी जो भी बड़ी क्षति हुई है उसमें ज्यादा कोवर्ट ऑपरेशन (गुप्त रूप से पुलिस अपने आदमी को पार्टी व फौजी दस्ता में घुसाकर या संघर्ष में जुड़े लोगों को अपना आदमी बनाकर) के द्वारा अंजाम दिये गये हैं या कोवर्ट द्वारा ही खाने-पीने के चीजों में जहर या नशीले पदार्थों को मिला दिया गया है और बाद में पुलिस ने आकर ठंडे दिमाग से गोली मारकर हत्या की है। वे आगे कहते हैं कि आमने-सामने की लड़ाई में पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों को हमेशा हमारे हाथों मार खानी पड़ी है या भागने पर मजबूर होना पड़ा है। बिल्कुल साफ है नक्सलबाडी आन्दोलन की धारा में फौजी संरचना को व्यवहारिक और वैज्ञानिक रूप से सैन्य विन्यास करना भाकपा (माओवादी) का एक विशिष्ट योगदान है।

सरेण्डर और अधःपतन के सवाल पर उनका एक पर्चा कहता है- आन्दोलन में शहीद और शैतान दोनों पैदा होते हैं। आन्दोलन की मुख्य उपज शहीद होते हैं और आदर्श भी। शैतान और गद्दार आन्दोलन के खर-पतवार होते हैं। मलेशिया के कम्युनिस्ट आन्दोलन को ध्वस्त करने के लिए ब्रिटीश साम्राज्यवाद ने 1950 के दशक में जो कार्यनीति और तरीके अपनाए थे, उसी कार्यनीति व तरीकों को आज भारत का शासक-शोषक वर्ग आजमा व अपना रहा है। शासक वर्ग आन्दोलनकारियों के एक अंश को हमेशा ही भरमाता है, लोभ-लालच देता है तथा रूपये बांटकर भ्रष्ट करता है। दूसरी तरफ वे एक अन्य नीति को अपनाते हैं, जिसको एलआईसी (स्वू प्दजमेपजल ब्वदपिबज- कम तीव्रता वाला युद्ध) कहते हैं। इसके तहत आन्दोलनकारियों के बीच जाति-पांति, धर्म-सम्प्रदाय, नस्ल-रंग, राष्ट्रीयता-भाषा, स्थानीय-बाहरी आदि का बखेड़ा करवाकर इस आधार पर आन्दोलन में फूट डलवाया जाता है और गुट बनवाया जाता है। यह उनके 'फूट डालो और राज करो' की नीति का ही एक अंग व अंश है। भाकपा (माओवादी) का 'रणनीति और कार्यनीति' दस्तावेज कहता है कि कामरेड माओ ने क्रांति के तीन जादुई हथियार

के बारे में बताए हैं और वह जादुई हथियार है 1. पार्टी 2. फौज 3. संयुक्त मोर्चा। पर लगता है कि भाकपा (माओवादी) संयुक्त मोर्चा पर पर्याप्त जोर नहीं दे रही है और न मास मूवमेंट व मास आर्गेनाइजेशन पर, जबकि भारतीय क्रांति में यानी नव जनवादी क्रांति में संयुक्त मोर्चा का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत जैसे विविधता से भरे देश में क्रांति के लिए संयुक्त मोर्चा सचमुच में जादुई हथियार है। हालांकि यहां संयुक्त मोर्चा का गठन करना बड़ा ही जटिलता भरा काम है पर है आवश्यक, अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण।

भारत के कम्युनिस्ट आन्दोलन में जहां पर लंबे समय से संशोधनवाद हावी रहा है वहां पार्टी के बारे में, फौज के बारे में और संयुक्त मोर्चा के बारे में जो अवधारणा व अमल नक्सलवादी आन्दोलन व भाकपा (माओवादी) ने रखी है तथा उस पर अमल में जुटी है, वह आज के संदर्भ में काफी महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक लग रहा है। जिस ढंग से आज संघ गिरोह बढ़ रहा है, देश पर फासिज्म का खतरा मंडरा रहा है, फासिस्ट शक्तियां जिस ढंग से संगठित व सशस्त्र हो रही है (जैसे बजरंग दल, विश्व हिन्दु परिषद, हिन्दु युवा वाहिनी, नव निर्माण सेना, सनातन संस्था आदि आदि) उनका मुकाबला क्या एक गुप्त, गैर कानूनी व हथियारबंद पार्टी के बिना संभव है? जन मिलिशिया और जन सेना के बिना क्या उपर्युक्त फासिस्ट गैंगों व गिरोहों का सामना किया जा सकता है? याद रखना होगा कि आरएसएस एक संगठन भी है और विचारधारा भी और एक सेना भी, जो संस्कृति का लबादा ओढ़े हुए है। क्या बिना वैकल्पिक विचार, संगठन व सेना के 'संघ मुक्त भारत' संभव है? मुझे लगता है एकमात्र नक्सलवादियों/माओवादियों के पास ही एक वैकल्पिक विचार है, संगठन है और सेना है, इसलिए वही लोग 'संघ मुक्त' और 'शोषण मुक्त' भारत का निर्माण कर सकते हैं। इसीलिए देश और शोषित व श्रमिक जनता को नक्सलवाद की आज ज्यादा जरूरत है। सनद हो कि नक्सलवादी/माओवादी वस्तुतः जनवादी देशभक्त हैं।

वर्तमान नक्सलवादी आन्दोलन की कुछ कमियां-कमजोरियां साफ-साफ दिखाई दे रही है। उनका आन्दोलन आदिवासी क्षेत्रों व गरीब-भूमिहीन किसानों के मुद्दों से बाहर नहीं आ पा रहा है। वे जंगल में सिमटे हैं या सिमटते जा रहे हैं। समतल मैदानी इलाकों में उनका आधार व प्रभाव काफी घट गया है। मजदूरों के बीच उनकी पैठ नाम मात्र की है। खेतिहर व मध्यम किसानों में उनका कोई उल्लेखनीय आधार व आन्दोलन नहीं है। छात्र-युवा और बुद्धिजीवी वर्ग के बीच भी उनका पुराने समय के जैसा संगठन नहीं है। जो थोड़ा-बहुत उनके बीच प्रभाव है भी वह संगठन के अभाव में ताकत व आन्दोलन नहीं बन पा रहा है। भारत के केन्द्रीय हिस्सों या हृदय, जिसे बीमारू प्रदेश या काऊ बेल्ट या हिन्दी पट्टी कहा जाता है, वहां उनकी दमदार उपस्थिति नहीं है। ऐसे में वे भगवा ब्रिगेड से कैसे लड़ेंगे? दिल्ली पर कब्जा कैसे करेंगे? का. लेनिन ने कहा है कि कम्युनिस्ट को समाज के सभी शोषित वर्गों व तबकों के बीच जाना चाहिए। इसलिए उन सभी वर्गों, तबकों व ताकतों के बीच गये बगैर उन्हें संगठित कैसे करेंगे और उनको संग्राम में उतारे बिना भारत की नव जनवादी क्रांति कैसे सफल होगी? इस पर आज ज्यादा मंथन की जरूरत है और पहल लेने का भी।

आज देश के चारों ओर शोषण, दमन, उत्पीड़न, गरीबी, बेरोजगारी, लूट, भ्रष्टाचार, भय और भूख का साम्राज्य कायम है। खट-कमाकर जीने वाली जनता के बीच हाहाकार मचा है। देश में सामंत हैं, दलाल बड़े पूंजीपति हैं, साम्राज्यवादी पूंजी और लूट है और बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी है। दंगाइयों और दलालों से देश भरा है और कमीशनखोरों और घूसखोरों से भी। इसलिए वे गुस्से व क्षोभ में माओवादी बन जाने की ध मकी देते हैं। अतः इससे साफ हो जाता है कि नक्सलवाद समस्या नहीं समाधान है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि नक्सलवाद की जरूरत और प्रासंगिकता आज भी बना हुआ है।

उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण के कारण देश में अमीरी और गरीबी के बीच खाई और लंबी, गहरी व चौड़ी हुई है। बेरोजगारी सुरसा की मुंह की तरह बढ़ रही है। आदिवासी, दलित, महिला एवं मुसलमानों पर आज हमला और तेज हुए हैं। किसानों का कंगालीकरण पिछले सदी की तुलना में बहुत ज्यादा बढ़ा है। किसान खेती करना छोड़ रहे हैं। कर्ज के जाल में फंसे लगभग 3.5 लाख किसानों ने आत्महत्या कर ली है। असंगठित मजदूरों की संख्या तेजी से बढ़ी है और उनके मजदूरी और सुविधाओं में भारी कटौती की जा रही है। पढ़े-लिखे लोग नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं। एम.ए., पी.एच.डी., इंजीनियर व बिजनेस मैनेजमेंट किए हुए लोग चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी की बहाली में आवेदन दे रहे हैं और बहाल भी हो रहे हैं। इसलिए नक्सलवाद के लिए देश आज और ज्यादा उर्वरा भूमि बन गया है।

नक्सलवादी नेता, गायक और गीतकार शहीद कामरेड कामदेव यादव ने अपने एक गीत (कव्वाली) में छात्रों, नौजवानों, मजदूरों, किसानों, बुद्धिजीवियों और स्त्रियों को ललकारते हुए आह्वान किया था -

मार्क्सवाद मुक्ति का दर्शन तुम्हारा
बंदुक उठा लो होगा फैसला तुम्हारा
नक्सल कर दिया है देश में उजाला
कि अभी रूकने का मौका नहीं है।
जालिम दुश्मनों न रहेगी तमन्ना
कि तुमने अभी जनता को देखा नहीं है।

इक्कीसवीं सदी की गाय पर निबंध

(आज पूरे देश में गाय के नाम पर बवाल मचाने की कोशिश साम्प्रदायिक ताकतों जैसे- आरएसएस, विश्व हिन्दू परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, गौ रक्षक संघ, भाजपा, बजरंग दल, दुर्गा वाहिनी आदि के जरिए की जा रही है और गौ-मांस व गौ-हत्या के नाम पर मुस्लिमों व दलितों की पीट-पीटकर हत्या की जा रही है। ऐसे समय में गाय पर जारी विवाद को हमारे पाठकों के लिए भी समझना जरूरी है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह लेख हम एक हिन्दी पत्रिका से साभार लेकर यहां दे रहे हैं।

-संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

जब मैं तीसरे क्लास (1969) में पढ़ता था, तब गुरूजी गाय पर लेख लिखने के लिए सिखाते थे, लेख इस तरह शुरू होता था, गाय एक चौपाया जानवर है, इसके चार पैर, एक पूंछ और दो सींग होते हैं। यह एक पालतू जानवर है। पर जब मैं मिडिल स्कूल में पहूंचा, तब समझ में आया कि गाय एक उपयोगी जानवर है। गुरूजी आगे लिखते थे, गाय मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी है, वह हमें दूध देती है। लेकिन जब मैं हाई स्कूल में पढ़ता था, तब अहसास हुआ कि गाय एक खतरनाक साम्प्रदायिक जानवर है। इसको लेकर दंगा होता है, दंगा में आदमी मारे जाते हैं, दंगाइयों द्वारा हाट-बाजार, घर-द्वार और धंधे-रोजगार सब स्वाहा कर दिये जाते है। जब मैं कालेज में पहूंचा और साहित्य वगैरह पढ़ने लगा, तब पता चला 'आदमी सृष्टि की श्रेष्ठ कृति है।' पर आज प्रकृति की उस श्रेष्ठ कृति को 'भारत महान' में एक अदने (खाने की क्रिया) से जानवर के लिए जानवरों जैसा मारा जा रहा है।

स्कूली दिनों की कुछ गूढ़ बातें अब समझ में आ रही है कि गुरूजी आखिर गाय पर ही लेख क्यों लिखवाते थे, भैंस पर क्यों नहीं? भैंस भी तो दूध देती है और मूत्र और गोबर भी? वह बछड़े की जगह पाड़ा को जन्म देती है, जो हल और गाड़ी दोनों खींचता है। बैल से ज्यादा मजबूत होता है पाड़ा और गाय से अधिक दूध देती है भैंस और घी भी। साल 2013-14 में 3.8 करोड़ टन दूध का उत्पादन हुआ। इसमें 51 फीसदी भैंस का दूध था, शेष 20 फीसदी देशी गाय और 25 फीसदी विदेशी गाय से प्राप्त हुआ। गाय की तुलना में भैंस ज्यादा रूखा-सूखा खाती है और रहने-सहने में भी धमधूसर होती है। फिर भी गाय ही माता क्यों है, भैंस क्यों नहीं? भैंस का दूध पीकर भी कई लोग हिंद केसरी बने हैं।

दूध बकरी भी देती है और उंट भी, भेड़ और याक (हिमालय का जहाज) भी। इनके दूध को भी भारतीय लोग पीते हैं। यूनानी और आयुर्वेदिक औषधियों में भी इनका इस्तेमाल होता है। फिर भी इनको माता का दर्जा प्राप्त क्यों नहीं है? कोई भी सज्जन और धार्मिक महानुभाव उंट माता, भेड़ी माता, बकरी माता या याक माता नहीं कहते, आखिर क्यों? जो स्थान गोपाल को और गौ भक्तों के लिए गाय का है, वही स्थान गरेड़ियों के लिए भेड़ी का है। वही राजस्थान के राय जनजाति के लोगों के लिए उंट का है। वही हिमालय में बसने वालों के लिए याक का है। हमारे राष्ट्रपिता गाय का नहीं बकरी का दूध पीते थे। इस लिहाज से तो हमारी राष्ट्रीय पशु बकरी को होना चाहिए था। साथ में पवित्र और पूतनीय भी क्योंकि बकरी को गरीबों की गाय माना जाता है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला बनारस में महात्मा गांधी से मिलने बकरी की विष्ठा देखकर ही ढूंढते हुए पहुंचे थे। बकरी को गांधी जी के 'अंतिम आदमी' यानी गांव के गरीबों का बैंक कहा जाता है।

गाय पर हाय क्यों?

हिन्दू गाय की भी पूजा करते हैं और हाथी और सांप की भी। पर गाय को मारने और खूंटा पर रस्सी में बंधा हुआ मर जाने पर पाप क्यों लगता है? गंगा स्नान क्यों करना पड़ता है? ब्राह्मणों को दान क्यों देना पड़ता है? हाथी और सांप के मरने और मारने पर ऐसा क्यों नहीं करना पड़ता है? सुअर तो विष्णु का एक अवतार ही है। फिर भी हिंदू लोग उसे मारते और खाते हैं और दंगे के समय मुसलमानों को जबरदस्ती मुंह में ठुंस कर खिलाते हैं। क्या गजब कि हिंदू विष्णु का वध करते हैं और भक्षण भी। हिंदुओं के इष्टदेव गणेश हैं। उनकी पूजा हर शुभ काम शुरू करने के पहले की जाती है। गणेश जी का वाहन चूहा है, जिसको मारकर, पका और खाकर गांव के गरीब लोग मुफ्त में प्रोटीन प्राप्त करते हैं। देवी माता की सवारी है बकरा। देवी माता बहुत गुस्सैल मानी जाती है। यह बीमारी से बचाने वाली देवी है। फिर भी हिन्दू लोग बकरे को बड़े चाव से खाते हैं। बकरा खाने वाले तर्क देते हैं कि वह देवी माता का प्रसाद है। भला, बैल भी तो शंकर भगवान की सवारी है। तब उसे प्रसाद क्यों नहीं माना जाता। बैल को खाने वालों की हत्या क्यों की जाती है? हाथी, सांप, सुअर, चूहा और बकरे के मारे और खाए जाने पर खून खराबा क्यों नहीं होता है? सिर्फ बैल और गाय को ही खाने पर दंगा क्यों भड़कता है? हिंसा क्यों होती है? आगजनी और लूटपाट क्यों होती है? गुरूजी और प्रोफेसर साहब तक ने आज तक लेख में नहीं लिखवाया। क्या गौ गुंडा गिरोह (प्रधानमंत्री के एक भाषण से उक्त शब्द को साभार उधार लेते हुए) के लोग बताएंगे?

अंधविश्वास और राजनीति का मसला

अब बात बिल्कुल साफ हो चुकी है कि गाय आस्था का नहीं अंधविश्वास का मामला है। गौ-रक्षा का सवाल हिन्दू धर्म (हिंदूइज्म) का नहीं हिन्दुत्ववादी राजनीति का मसला है। गाय धर्म का नहीं बल्कि राजनीति का प्रतीक और प्रतिनिधि है। गाय अब उपयोगी पशु नहीं बल्कि वोट बैंक बन गई है। आजकल हिन्दू समाज में गौ-पालक और गौ-सेवक से ज्यादा संख्या 'गौ-रक्षकों' की है। दूसरा सच यह है कि गौ-रक्षक गाय नहीं कुत्ता पालते हैं। गौ-रक्षकों के प्रचार साहित्य में गाय के दूध के महत्व से ज्यादा जिक्र गोमूत्र और गोबर के बारे में मिलता है। उनके अनुसार गोमूत्र रामवाण दवा है। राजस्थान के एक भाजपाई नेता के अनुसार गोमूत्र में सोना पाया जाता है। संघियों और भाजपाइयों के अनुसार गोबर परमाणु बम का 'कवच कुंडल' है। हास्यास्पद बात यह है कि अभी तक इसरो के वैज्ञानिकों ने इसे सत्यापित नहीं किया है। याद रहे कि गाय पहले जीविका का साधन और स्रोत थी। अब वह राजनीतिक धंधा और डंडा बन गई है।

आजकल गौ-रक्षक सरकारों की गोशालाओं में एक गाय के लिए दिन भर के चारा पानी के लिए 40 रूपये मिलते हैं। जबकि किसी मवेशी को रोजाना औसतन 30-40 किलो चारा और 60-70 लीटर पानी की जरूरत होती है। इसकी अनुमानित कीमत 39,336 रूपये सालाना बैठती है यानी 108-09 रूपये रोज। सो साफ है कि गऊ माता को मारने के लिए ही गौ भक्तों द्वारा गोशालाओं में भेजा जाता है और गौ भक्त सरकार भी 40 रूपये देकर अपना पिण्ड छुड़ा लेती है। साल 2008 के मई से अक्टूबर तक यानी 6 माह के दौरान 11 हजार 26 गायों को पकड़कर दिल्ली की विभिन्न गोशलाओं में भेजा गया। इनमें से 10 हजार 716 गायों की मौत हो गई। ठीक वैसे ही 2007 में भी 10 हजार 574 गाय को सड़कों से उठाया गया था। उस साल 10 हजार 793 गाएं मर गई। यानी उस साल पकड़ी गई गायों में से एक भी जिंदा नहीं बची थी। नौ जुलाई 2017 के द हिन्दू अखबार के मुताबिक भाजपा शासित हरियाणा के कुरूक्षेत्र जिले में मथाना गांव की सरकारी गोशाला में 25 गाएं चारे की कमी और बारिश का पानी भर जाने से मर गई।

ज्यादातर गोशालाओं के संचालक हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग हैं। वे खुद को हिन्दू संत बताते हैं। इन संतों के सामने ही गऊ माता चारे और पानी के बिना तड़प-तड़प कर मरती रही और संत लोग टुकुर-टुकुर देखते रहे। तथ्य तो यह भी है कि जब दिल्ली राज्य में भाजपा सरकार के राज में सड़कों से उठा कर गोशालाओं में भेजी गई गायों में से 90 फीसदी गाएं चारे पानी और चिकित्सा के अभाव में मर गई। तथाकथित हिन्दू सभ्य समाज के लोग ही दूध देने की उम्र पार कर चुकी गायों को सड़क पर छोड़ देते हैं या गोशालाओं में भेज देते है। दूसरा तथ्य यह है कि लगभग 90 फीसद हिन्दू अपने फालतू या बोझ बने जानवरों को बूचड़खाने के लिए बेच देते हैं। यह कैसी गऊ भक्ति है? कैसा हिन्दुत्वाद है? कैसा गऊप्रेम है? क्या संघ गिरोह के लोग इसका जवाब देंगे।

आज देश के हर गली मोहल्ले में गऊ माता प्लास्टिक खाती दर्शन देती है। भूखी-प्यासी इन गऊ माताओं को कोई गऊ रक्षक मुट्ठी भर घास खिलाता नजर नहीं आता और न बाल्टी भर पानी पिलाता हुआ। बात बिल्कुल साफ है। भगवावादी गो रक्षकों के लिए गाय न धर्म की माता है और न कर्म की। उनके लिए यह वोट यंत्र और जन्तु है। एक हिसाब से गाय भारतीयों के लिए माता है, पर वह कौशल्या, कुंती और यशोदा की तरह नहीं और न ही सीता और सरस्वती की तरह। भारत में गाय को लक्ष्मी माना जाता है। इसलिए कि गाय के दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र, मांस, चमड़ा, हड्डी, सींग, खुर, आंत और पूंछ के बाल तक बाजार में बिकते हैं। खुद गाय और उसके बच्चे बाछा-बाछी व बैल भी खरीदे और बेचे जाते है। सो यह धन (लक्ष्मी) है। गाय के अंगों से तरह-तरह की चीजें बनती हैं। यहां तक कि चीनी उसकी हड्डियों से साफ होकर सफेद बनता है और कैप्सूल के खोल भी गाय के आंत के पतले और मुलायम चमड़े से बनते हैं। इसलिए गाय माता तो है लेकिन धरती की तरह जैसे धरती धन देती है, वैसे ही गाय गौधन। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि गाय का मूल रिश्ता अर्थव्यवस्था से है। गाय को हम माता इसलिए कहते हैं कि वह जीवनदायनी है। सो माता कहने के पीछे कारण धार्मिक नहीं आर्थिक है। गाय को कामधेनु भी कहा गया है और कामधेनु का अर्थ है इच्छाओं की पूर्ति करने वाली। पुरातन काल से लेकर आधुनिक काल तक गाय को धन (लक्ष्मी) माना जाता रहा है। प्राचीन काल से गाय का उपयोग दान-दक्षिणा, आदान-प्रदान और विनिमय आदि के माध्यम के रूप में होता आया है। साथ ही दूध, मांस और चमड़े तक का उपयोग भी होता रहा है। हाल-हाल तक मनुष्य की समृद्धि उसकी गायों की संख्या से आंकी जाती थी। इसलिए गाय को धार्मिक चश्मे से देखने के बजाय आर्थिक चश्मे से देखने की जरूरत है। एक शैतानी साजिश के तहत गाय के आर्थिक पहलू को भूला कर उसके धार्मिक पहलू को उभारा जा रहा है, याद रहे कि गोवंश भारतीय किसानों की आय का एक बड़ा स्रोत है।

पूज्य भी और भोज्य भी

भारतीयों के लिए गाय पूज्य भी है और भोज्य भी। हमारे देश में 8 करोड़ आदिवासी रहते हैं। ये भारत के मूल निवासी है। ये गाय का दूध न पीते, न खाते और न बेचते हैं। उनका मानना है कि गाय दूध अपने बच्चों के लिए देती है, इंसान के लिए नहीं। आदिवासी गाय पालते हैं खेती के लिए और मांस के लिए। वे गौमांस को वैसे ही खाते हैं जैसे हिन्दू बकरे को खाते हैं। वे सूअर, बकरे सहित सभी जंगली जानवरों को

खाते हैं। हिन्दुओं के प्राचीन और पवित्र ग्रंथ वेद में लिखा है 'जीव जीवस्य भोजनम्' यानी जीव ही जीव का भोजन है। प्रकृति का भी यही नियम है। गाय एक जीव है और आदमी भी। सो गोमांस खाना न पाप है न पुण्य। यही जीव और जीवन की जरूरत है। भारत के दो करोड़ 78 लाख इसाई, 17 करोड़ मुसलमान, 21 करोड़ दलितों की एक बड़ी आबादी, 84 लाख बौद्ध और अन्यान्य नास्तिक अनिश्वरवादी लोग गोमांस खाते हैं यानी करीब आधा अरब यानी पचास करोड़ भारतीय गोमांस का उपभोग करते हैं। हिन्दुस्तान अखबार की रपट का यह उद्धरण देखिए:

''केरल में अरसे से बीफ एक पसंदीदा खाद्य है। तकरीबन 80 फीसद केरलवासी नियमित रूप से बीफ खाते हैं, न सिर्फ इसाई और मुस्लिम, बल्कि हिन्दू घरों में भी यह परोसा जाता है। एक हिसाब से वास्तव में अन्य की तुलना में हिन्दू ज्यादा बीफ खा रहे हो सकते है। कारण सरल है, इसे सेहत बढ़ाने वाला माना जाता है और सस्ता भी है। राज्य में बाकी तरह की मीट की खपत का यह 40 फीसद है।

बीफ मुद्दे पर केरल भाजपा का रवैया उत्तर के अपने पार्टी जनों से बिल्कुल अलग है। पार्टी ने इसे किसी की पसंद नापसंद पर छोड़ रखा है। ऐसा इसलिए कि राज्य के ज्यादातर हिन्दू नेता बीफ खाते हैं.....अगले साल राज्य में विधानसभा चुनाव है और यहां भाजपा अपना खाता खोलने के लिए कड़ी मशक्कत करेगी। यह पार्टी का पुराना लक्ष्य है। हिन्दुत्ववादी समर्थक और उसके सहयोगी तत्व क्या सोचते हैं इसपर गौर किये बगैर केरल में स्थानीय (भाजपा) नेता जानते हैं कि बीफ का मुद्दा उन्हें राजय की राजनीति में बहुत दूर तक नहीं ले जा सकता।'' (हिन्दुस्तान, गया, 2.11.15)

आदिवासियों से भाजपा की घृणा का एक उदाहरण है मध्य प्रदेश की स्कूली पाठ्यपुस्तक, उस पुस्तक में गोंड आदिवासी के बारे में कहा गया है कि गोंड शब्द का अर्थ होता है गाय को मारने और खाने वाले। यह आदिवासियों का अपमान है। गोमांस पर भाजपा का पाखंड तब और उजागर हो जाता है जब वह गोवा में गोमांस पर पाबंदी नहीं लगाती है और न पूर्वोत्तर भारत में, जहां कई राज्यों में वह सरकार में है। गोवा समेत अरूणाचल, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर और मिजोरम के अधिकांश भाजपा नेता गोमांस छक-छक कर खाते हैं।

प्राचीन काल में भारत के सभी लोग गोमांस खाते थे। हमारे ऋषि मुनि, महर्षि, साधु-संत और ब्राह्मण और क्षत्रिय भी गोमांस खाते थे। इसका जिक्र ऋग्वेद, याज्ञवलक्य स्मृति, सत्पथ ब्राह्मण, मनुस्मृति, महाभारत, घास स्मृति समेत डीएन झा द्वारा लिखित बीफ इटिंग इन एंशियंट हिस्ट्री में है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी पुस्तक दिमागी गुलामी में लिखा है:

हिन्दुओं की गोरक्षा सबसे बड़ी बेवकूफाना और हानिकर चीज है। खुद तो इनके पुरखे अभी सोलह सौ साल पहले तक गाय का मांस घर-घर में खाते और खिलाते रहे। वहीं धूर्त पुरोहित जिनके पूर्वजों के यहां बिना एक महीने की बछिया मारे मेहमानों की खातिरदारी नहीं हो सकती थी, वही अब गाय के पीछे बोल रहे हैं।

साफ है कि हिन्दुत्ववादी राजनीति के सरगनाओं को इतिहास से, हिन्दुइज्म से और प्राचीन धर्मशास्त्रों से कुछ लेना देना नहीं है। हिन्दुत्ववादी राजनीति को सिर्फ हिन्दओं के लिए कर्मकांड से मतलब है, दर्शन से नहीं। सो उनकी धार्मिकता धंधे और पाखंड के अलावा और कुछ नहीं है।

गाय का आर्थिक पहलू

सरकारी आंकड़े के अनुसार देश भर में गोवंश की संख्या लगभग 30 करोड़ है। गोवंश में गाय, भैंस, बैल, सांड़ और बछड़ा जैसे पशु आते हैं। कुल संख्या में से 8.5 करोड़ दुध ारू गायें हैं और 8.4 करोड़ बैल है। इसके अलावा 13.1 करोड़ अनुत्पादक गोधन है। रिपोर्ट के मुताबिक सीमित संसाधनों वाले छोटे व सीमांत किसान ही 71 फीसदी गोधन को पालते हैं। भारत में गाय किसी धर्म की बपौती नहीं हैं, भारत में हर धर्म के लोग गाय का पालन करते हैं। यहां हर धर्म के लोगों को दुधारू गायों से गाय के दूध, दही, घी, खोवा, छेना को अपने भोजन में, पर्व त्योहारों में और पूजा इबादत में इस्तेमाल करते है। हम सब जानते हैं कि भारतीय किसान अपने दुधारू, गर्भवती और अवयस्क पशुओं को बूचड़खाने वालों के हाथों नहीं बेचते, वे चाहे हिन्दू किसान (पशुपालक) हो या मुसलमान। वे अपने उन्हीं जानवरों को बूचड़खाने वालों के हाथ बेचते हैं, जो उनके काम और लाभ के लायक नहीं है।

गाय 3 साल से 10 साल की उम्र तक दूध देती है। जबकि वह 20-25 साल तक जीती है। ऐसे अनुत्पादक पशुओं को ही वे बेचते हैं। आज खेती में ट्रैक्टर के अधिक इस्तेमाल से बैल भी अनुपयोगी हो गए हैं। सो किसान इन्हें बूचड़खाने वालों के हाथ बेचने को बाध्य है। अभी 10 साल से ज्यादा उम्र के नर पशुओं की संख्या कुल नर पशुओं की संख्या का दो फीसद है। अगर ये सभी बूचड़खाने बंद कर दिये जाएंगे, तब इनकी संख्या लगभग 50 फीसद के करीब हो जाएगी। जैसा कि उपर के आंकड़े में बताया गया है कि पूरे भारत में करीब 31.1 करोड़ अनुत्पादक गोधन है और अगर 8.4 करोड़ बैलों की संख्या भी जोड़ दी जाए तब करीब 21.5 करोड़ पशु किसानों के पास फालतू है और उनके उपर बोझ भी। अगर बूचड़खाने बंद कर दिये जाते हैं, तब लघु और सीमांत किसानों को अरबों रूपयों का नुकसान होगा। भारतीय किसान पहले से ही कर्जों के बोझ तले दबे हैं। इस कारण वे आत्महत्या कर रहे हैं, ऐसे बर्बर वक्त में जब

उनके मवेशी नहीं बिकेंगे तब आत्महत्याओं की संख्या और बढ़ेगी और किसानों का कंगालीकरण बढ़ेगा।

एक आरटीआई के अनुसार भारत में कुल 1623 बूचड़खाने हैं, इनमें 675 भाजपा शासित राज्यों में है। दूसरी अद्‌भुत बात यह है कि ज्यादातर वैध बूचड़खाने के मालिक मुसलमान नहीं बल्कि जैन या हिन्दू सम्प्रदाय के लोग है। गौरतलब बात यह है कि देश में बड़े बूचड़खाने में भाजपा के बहुत सारे सांसदों और संघ नेताओं की हिस्सेदारी है। उत्तर प्रदेश के भाजपा के आग लगावन नेता संगीत सिंह सोम बीफ निर्यात करने वाली कम्पनी के साझेदार रह चुके हैं। देश के सबसे बड़े चार मांस निर्यातक हिन्दू है: अल कबीर एक्सपोर्ट (सतीश और अतुल समरवाल), अरेबिबयन एक्सपोर्ट (सुनील करन), एमकेआर फ्रोजन फूड्स (मदन एबट) और पीएमएल इंडस्ट्रीज (एएस बिंद्रा)। देश में बीफ का सालाना कारोबार करीब 300 अरब रूपये का है। वहीं मांस निर्यात से 2014 में 4.8 अरब डॉलर भारत को प्राप्त हुआ। भारत का चर्म उद्योग 2 अरब यूएस डॉलर का है। देश भर में 4000 चर्मशोधन कारखाने हैं। ये गाय की खाल पर निर्भर है। इन उद्योगों में लाखों को राजगार प्राप्त है। इनमें अधिकांश हिन्दू है।

मोदी राज में मांस निर्यात

साल 2014 में जब नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने तब मांस उत्पादन और निर्यात को बढ़ाने के वास्ते नए बूचड़खाने कायम करने और पुराने के आधुनिकीकरण करने के लिए अपने पहले बजट में 15 करोड़ सब्सिडी देने का प्रावधान किया। इस कारण भारत दुनिया का सबसे बड़ा मांस निर्यातक बन गया। 2014-15 के दौरान भारत ने 24 लाख टन मांस निर्यात किया। यह दुनिया भर में निर्यात किये जाने वाले मांस का 58.7 फीसदी है। दुनिया के 65 देशों को किए गए इस निर्यात में सबसे ज्यादा मांस एशिया (80 फीसद) और बाकी अफ्रीका को भेजा गया। वियतनाम अपने कुल मांस आयात का 45 फीसद हिस्सा भारत से मंगवाता है। मांस निर्यात पर पहले नंबर पर भारत के आने की वजह यह है कि यहां का मांस सस्ता होता है। इसकी वजह यह है कि यहां दूध न देने वाले या बूढ़े पशुओं को ही काटा जाता है। ब्राजील और दूसरे देशों में मांस के लिए ही पशुओं को पाला जाता है। उन्हें खिलाने का खर्च ज्यादा होता है। याद रहे कि ब्राजील 20 लाख टन मांस निर्यात कर दुनिया में दूसरे स्थान पर रहा। वहीं आस्ट्रेलिया 15 लाख टन निर्यात करके तीसरे स्थान पर। गौरतलब बात यह भी है कि अहिंसा के पुजारी गोसेवक और गोभक्त महात्मा गांधी के राज्य गुजरात में नरेंद्र मोदी ने जब सत्ता संभाली, तब गोमांस निर्यात में वहां आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। पहले गुजरात का सालाना मांस निर्यात 2001-02 में 10,600 टन था, जो 2010-11 में बढ़कर 22 हजार टन हो गया।

बूचड़खाना बंद से नुकसान

गाय के मसले पर आज जिस ढंग से भगवा आतंकवादी और भाजपा सरकार चल रही है, वह आत्मघाती है। इससे गायें बचेगी नहीं बल्कि और बूरी तरह मरेंगी। उनका यह हल्ला सफेद झूठ है कि गायों के काटे जाने से उनकी संख्या घट रही है। आंकड़े बताते है कि साल 1997 और 2012 के बीच गायों की संख्या घटी नहीं थी बल्कि बढ़ी है। पहले गायों की संख्या 10.3 करोड़ थी, वह बढ़कर 11.7 करोड़ हो गई। पशुओं की जनगणना हर पांच साल पर होती है। पिछली जनगणना 2012 में हुई थी।

बूचड़खाने को बंद किये जाने से न सिर्फ आर्थिक नुकसान होगा बल्कि इससे सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरण की भी क्षति होगी। देश के करीब 50 करोड़ लोग गोमांस का उपयोग करते हैं। बंदी से उनके भोजन के अधिकार पर हमला होगा। दूसरी समस्या यह होगी कि अनुत्पादक और आवारा पशुओं की संख्या बेतहाशा बढ़ेगी। अभी के उदाहरण से इसे अच्छी तरह समझा जा सकता है। दिल्ली में करीब डेढ़ करोड़ लोग बसते हैं, यहां करीब 40 हजार गायें आवारा बनकर सड़कों पर घुमती और कूड़े कचरे और पॉलीथीन, थैलियों को अपना आहार बनाती नजर आती है। ये गायें जहां तहां गोबर और मूत्र फैलाती फिरती है। इससे न केवल शहर में गंदगी फैलती है बल्कि हानिकारक मिथेन गैस भी वातावरण में फैलती है। आवारा गायों से यातायात तो प्रभावित होता ही है।

दूसरे समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए योजना आयोग के पूर्व सदस्य किरित पारिख कहते हैं कि 2012 में लगभग 18 करोड़ मवेशी थे। अगर बूचड़खाने बंद कर दिये जाते हैं, तब 2027 तक मवेशियों की संख्या 36-40 करोड़ हो जाएगी। तब इसके लिए चारा पानी रखने की जगह आदि की भारी समस्या पैदा होगी। मिथेन गैस भी अत्यधिक मात्रा में उत्सर्जित होगा। वैसे नकदी फसलों को अत्यधिक पैदा करने की होड़ के कारण पहले से ही सूखे और हरे चारे की किल्लत चल रही थी। ऐसे में दुधारू गाय और भैंसों का चारा संकट और बढ़ जाएगा। कारण कि दूध देने वाले गाय, भैंस, बैल, सांड़ और भैंसा इसके चारे चट कर जाएंगे। इससे दूध उत्पादन पर बड़ा बूरा असर पड़ेगा। चारा महंगा होने से दूध भी महंगा होगा। बूचड़खाने बंद किये जाने पर डेयरी उद्योग पर भी प्रतिकूल असर पड़ेगा। डेयरी उद्योग चलाने वाले अक्सर लोग हिन्दू हैं। दूध देना बंद करते ही ये लोग गाय या भैंस को सीधे बूचड़खाने वालों के हाथ बेच देते हैं, उनके लिए ऐसे अनुत्पादक पशुओं को खिलाना, पिलाना और रखना घाटे का सौदा बन जाता है। उन लोगों ने मुनाफे के लिए डेयरी फॉर्म खोला है न कि गऊ पूजा और सेवा के लिए। सो बूचड़खानों के बंद कराए जाने के कारण डेयरी उद्योग चौपट हो जाएगा।

बूचड़खाने बंद होने का असर किसानों, पशु पालकों, मांस उत्पादकों और निर्यातकों, चर्मशोधन कारखानों के मालिकों और उसमें रोजगार प्राप्त लाखों कामगारों पर पड़ेगा। पहले ही देश रोजगारविहीन विकास की मार से त्रस्त है, ऐसे में लाखों लोगों को रोजगार से हाथ धोना पड़ेगा। साथ ही अरबों डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार से देश को वंचित होना पड़ेगा और अरबों रूपये का देशी मांस व्यापार भी चौपट होगा।

गोरक्षा का मतलब

गोरक्षा का मतलब यह नहीं है कि जानवरों को खरीदने बेचने वालों (पहलू खां) और मृत पशुओं का चमड़ा उतारने वालों की हत्या और पिटाई की जाए। न ही यह है कि बीफ का हव्वा खड़ा कर निहत्थे और निर्दोष मुसलमानों (अखलाक जैसों) का कत्ल किया जाए या अवैध बूचड़खाने बंद कराए जाएं। गाय की रक्षा का आशय यह है कि हम गाय पालन को बढ़ावा दें यानी गौ पालकों और उनकी गायों की संख्या बढ़ाएं। गाय के देशी नस्लों को उन्नत करें और इनके निर्यात पर रोक लगाएं। भारतीय देशी गायों में अधिक तापमान बर्दाश्त करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। उनकी कीट और प्रतिरोधकी क्षमता ज्यादा होती है। पौष्टिक तत्वों की भी कम जरूरत होती है और रख-रखाव में आसान होने के कारण दुनिया के प्रमुख राष्ट्र उसका आयात कर रहे हैं, खासकर अमेरिका, आस्ट्रेलिया और ब्राजील। इन विदेशियों को पंजाब के शाहीवाल, राजस्थान के राठी और थारपाकड़, गुजरात के गिर और कांकरेज और हरियाणा और रेड सिंधी गायों में अधिक रूचि है। विदेशियों द्वारा शोध के नाम पर इन गायों को बड़े पैमाने पर आयात किया जा रहा है। सो इसपर रोक लगनी चाहिए।

भारत में एक गाय सालभर में औसतन 200 लीटर दूध देती है। जबकि इजरायल की गायें 11 हजार लीटर दूध देती हैं। हमारे देश की गायें कम दूध इसलिए देती है कि हमारे यहां उसका भरण-पोषण ठीक से नहीं होता। इसलिए जरूरत है गाय पालकों को सस्ते में चारा, खली, दाना, पानी और चिकित्सा उपलब्ध कराने की। साथ ही सस्ते दर पर बैंक कर्ज की। कई राज्यों और केंद्र में कथित गोरक्षकों की सरकार है, सो उनके लिए गोपालकों को सहूलियत और सुविधा देना आसान है, पर देंगे नहीं।

देश में गाय ओर गरीब तभी बचेंगे, जब भेड़, बकरी, उंट, याक और सुअर बचेंगे। ये पशु मांस की सारी जरूरतों को बड़ी मात्रा में पूरा करते हैं। साथ ही ये गरीबों की गाय और बैंक है। 2012 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या में काफी कमी आई है। गधों की संख्या में 27.12 फीसदी, उंट की संख्या में 22.48 फीसदी, भेड़ों की संख्या में 09.07 फीसदी, सुअर की संख्या में 7.45 फीसदी, याक की संख्या में 7.64 फीसदी और बकरी की संख्या में 3.82 फीसदी की कमी आई है। यह काफी चिंताजनक है। हिन्दुत्ववादी गिरोह और उनके सरगना गायों के निर्यात किये जाने पर चुप हैं। बकरी, सुअर, गधा, उंट, याक और भेड़ों की संख्या आश्चर्यजनक रूप से घटने पर भी मौन है। चुप्पी या तो खतरनाक होती है नहीं तो षडयंत्र। वे चुप इसलिए भी है कि ये पशु गरीबों के गुजारे का साधन है। इसलिए इन सरगनाओं को कोई फर्क नहीं पड़ता। उनके एजेंडे में हमेशा से ही अमीर, कुलीन और सवर्ण रहे हैं।

गोरक्षकों का गोरखधंधा

गोरक्षक गिरोह के लोग न जो गऊ पालक है, न गोसेवक। ये गोरक्षा के नाम पर कमाने खाने वाले जीव जन्तु हैं। गौ माता के नाम पर इंसानों की हत्या करने वाले हिन्दुत्ववादी उग्रवादी हैं। ये मोहरे गाय की गोबर की महक और मूत्र की दुर्गंध से बचने के लिए नाक पर रूमाल रख लेते हैं। ये गोशााला में पांच मिनट रूक नहीं सकते हैं। इन बेचारों को न तो घास काटना आता है, न ही नाद में चारा डालना। दूध दूहना तो बिल्कुल ही नहीं आता। वे विदेशी कुत्ता पालने वाले और चिकेन बिरयानी चाभने वाले चटोर प्राणी हैं। सुरापान आदि के भी शौकीन हैं, अब तो बलात्कार जैसे आरोपों में गिरफ्तार भी हो रहे हैं। बिल्कुल साफ है कि हिन्दुत्ववादी उग्रवादी वैष्णवपंथी नहीं बल्कि अघोरपंथी और भगवा आतंकवादी हैं।

गाय न तो मुसलमानों के खेत में पैदा होती है, न ही उनके कारखानों में पैदा होती है। ज्यादातर गायें गरीब और मध्यम किसानों के घर में पाली जाती हैं। इन गोपालकों में 90 फीसदी हिन्दू है। पैसे के लालच में गोमाता के हिन्दू सपूत ही सौदा करते हैं और तस्करी कर उसे बूचड़खाने तक पहुंचाते हैं। ये गऊ बेचवा लोग ही रातों-रात गोरक्षक बन जाते हैं। दोगले चरित्र वाले ये लोग एक तरफ गाय को बेचते हैं, तस्करी करते हैं और दूसरी ओर गोकशी के नाम पर मुसलमानों की हत्या करते हैं ओर दंगा भड़काते हैं। इन राष्ट्रविरोधी और देशद्रोही तत्वों को सचमुच में गाय को बचाना है, तो सबसे पहले हिन्दुओं के गाय बेचने पर रोक लगाएं। लेकिन ये बूरे शरीफजादे ऐसा करने में सक्षम नहीं है क्योंकि गाय का अर्थशास्त्र और हिन्दुओं का समाजशास्त्र ऐसा करने से उन्हें रोकता है। अगर वे ऐसा करते हैं, तब उन्हें गोपालकों और किसानों के विद्रोह का सामना करना पड़ेगा। इसलिए ये दक्षिणपंथी तत्व गाय के नाम पर झूठ, अफवाह और भ्रम फैलाते हैं इनके झूठ, अफवाह और भ्रम से गाय दूध नहीं वोट उगलने लगती है। ऐसे बर्बर वक्त में गाय आर्थिक नहीं बल्कि राजनीतिक जानवर बन जाती है।

अंत में, आज हिन्दुत्ववादी फासिस्ट शक्तियां जिस भारत की बात करती फिर रही है, वह न तो प्राचीन भारत है और न आधुनिक भारत।

जीएसटी: प्रतिगामी कर व्यवस्था की एक और मिसाल

(ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा की नरेन्द्र मोदी की सरकार ने एक जुलाई 2017 से पूरे देश में वस्तु और सेवा कर (जीएसटी) लागू करने की घोषणा की और इसे दूसरी आजादी का नाम भी दिया। सरकार की भोंपू कई दलाल मीडिया व बुद्धिजीवियों ने भी सरकार की घोषणा के पक्ष में बढ़-चढ़कर राग अलापा, लेकिन कुछ पत्रिकाओं व बुद्धिजीवियों ने सरकार की इस नये कानून का जमकर भंडाफोड़ भी किया।

इस लेख में भी जीएसटी का तथ्यपूर्ण तरीके से भंडाफोड़ किया गया है, इसीलिए इस लेख को एक हिन्दी पत्रिका से साभार लेकर हम यहां दे रहे हैं। -संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फासीवादी भारत सरकार ने कराधान की अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था में 'गुणात्मक सुधार लाने' में करीब चालीस साल की लगातार कोशिशों के बाद 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' के नारे को साकार करने में सफलता का दावा किया है। इस महत्वाकांक्षी सरकार ने उचित तंत्र की व्यवस्था किये बगैर 1 जुलाई 2017 से पूरे देश में वस्तु और सेवा कर (जीएसटी) लागू करने की विशेष योजना बनाई। इस एकल कर प्रणाली की घोषणा के लिए 30 जून 2017 की तारीख तय की गई और उस दिन 12 बजे रात में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में एक विशेष घंटी बजाकर इस बहुप्रतीक्षित कर की शुरूआत की घोषणा कराई गई।

संसद के इस केंद्रीय कक्ष में आधी रात को अब तक तीन ही कार्यक्रम संपन्न किये थे। पहले कार्यक्रम के तौर पर 15 अगस्त 1947 को 'आजाद भारत' के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का ऐतिहासिक भाषण हुआ था। दूसरा कार्यक्रम इसके 25 साल बाद 1972 में किया गया था। तीसरा कार्यक्रम 'आजादी के 50 साल' के मौके पर 1997 में आयोजित किया गया था। पिछले 30 जून की मध्यरात्रि का चौथा कार्यक्रम इन तीन कार्य्रक्रमों से कई मायने में भिन्न था। एक तो यह कार्यक्रम मोदी सरकार की नई कर प्रणाली को उजागर करने के लिए आयोजित किया गया था। दूसरे इसे भव्यता प्रदान करने के लिए करोड़ों रूपये खर्च किये गये थे। करीब 100 साल पहले निर्मित संसद भवन और उनके पायों को माइक्रो सैंड की एक खास तकनीक से चमकाया गया। भदोही के कुल डेढ़ सौ बुनकरों द्वारा डेढ़ साल में तैयार किये गये उम्दा कालीनों से इसके केंद्रीय कक्ष को सजाया गया। इसके अलावा पूरे संसद भवन को रंग-बिरंगी रोशनी से रौशन किया गया और केंद्रीय कक्ष के पूरे साउंड सिस्टम को पूरी तरह अपग्रेड किया गया।

भव्य आयोजन का बहिष्कार

मोदी सरकार के इस भव्य आयोजन का कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, राजद, सीपीआई और सीपीएम जैसे कई विपक्षी दलों ने बहिष्कार किया। इसी दिन दिल्ली के व्यापारिक प्रतिष्ठानों और दुकानदारों ने 'दिल्ली बंद' का आयोजन कर जीएसटी के इस घोषणा का सीधा और तीखा विरोध किया। राष्ट्रपति की घोषणा के बाद 1 जुलाई 2017 से जीएसटी की नई कर व्यवस्था (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर) पूरे देश में लागू हो गई। एक हफ्ते बाद 7 जुलाई को जम्मू कश्मीर विधानसभा ने भी जीएसटी बिल को पारित कर दिया और राष्ट्रपति के आदेश के तहत इस राज्य के विशेष दर्जा को 'रक्षाकवच' प्रदान करते हुए इसे वहां भी लागू कर दिया गया। जम्मू कश्मीर के विपक्षी दलों ने इस रक्षाकवच को एक धोखा करार दिया और कहा कि जीएसटी को लागू कर पीडीपी-भाजपा सरकार ने राज्य की राजस्व स्वायत्तता भी समाप्त कर दी है। उन्होंने 7 जुलाई की विधानसभा बैठक का जीएसटी के विरोध में जोरदार आवाज उठाते हुए बहिष्कार भी किया। कुल मिलाकर देश के सभी राज्यों (29 राज्यों और 7 संघीय प्रदेशों) में 1 जुलाई 2017 के बाद जीएसटी मूर्त रूप ले चुका है। इसके पहले देश में सेवा कर, उत्पादन शुल्क, मूल्य वर्धित कर यानी वैल्यू एडेड टैक्स (वैट) सहित राज्यों में लगाए जाने वाले 16 कर लागू थे। अब इन सबों को जीएसटी में समाहित कर दिया गया है।

प्रक्रिया की शुरूआत

गौरतलब है कि इंटरनेशनल मॉनिटरी फंड, वर्ल्ड बैंक और विश्व व्यापार संगठन जैसी अंतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवादी संस्थाओं द्वारा लम्बे अरसे से दूसरी पीढ़ी के वित्तीय सुधारों को अंजाम देने और इसी संदर्भ में अप्रत्यक्ष करों की एकल व्यवस्था बनाने के लिए भारत सरकार पर दबाव डाला जा रहा था। इसी दबाव में आकर अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार (जिसे मोदी सरकार के मंत्रीगण और नेतागण जीएसटी लागू करने की प्रक्रिया शुरू करने का सेहरा दे रहे हैं) ने 2001-02 में अप्रत्यक्ष कराधान पद्धति में सुधार कर वैट की व्यवस्था करने के लिए पश्चिम बंगाल के वित्त मंत्री असीम दास गुप्ता के नेतृत्व में वित्त मंत्रियों की एक अधिकारिक कमिटी का गठन किया। इस पर भाजपा के दिल्ली स्थित एक

महत्वपूर्ण नेता ने अपनी तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की और कहा कि सरकार अगर जनता पर 'वैट' थोपने की दिशा में आगे बढ़ेगी तो सड़कों-गलियों में खून बहेगा।

इसके बावजूद तब के वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने कर सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया और 1 अप्रैल 2002 से वैट लागू करने की घोषणा भी की। देश के व्यापारियों और कई भाजपा नेताओं के तीखे विरोध के चलते उन्हें वैट को लागू करने की तीथि को आगे बढ़ाकर 1 अप्रैल 2003 करना पड़ा। अपनी सरकार की कमजोरियों और व्यापारियों के विरोध के चलते अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार अपने कार्यकाल (19 मार्च 1998 से 22 मई 2004) में वैट लागू नहीं करा पाई और इसे लागू करने का दायित्व मनमोहन सरकार को निभाना पड़ा। इस सरकार ने 1 अप्रैल 2005 से पूरे देश में वैट को लागू कर दिया। यह अप्रत्यक्ष कर प्रणाली में एक महत्वपूर्ण सुधार था। वैट की दर को 12.5 प्रतिशत तय किया गया था, जिसका व्यापारियों ने काफी विरोध किया था।

अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के कार्यकाल के अंतिम साल में पूर्व वित्त सचिव विजय केलकर के नेतृत्व में एक टास्क फोर्स का गठन किया गया था, जिसने पहली बार जीएसटी की एक रूपरेखा तैयार की। इस कार्यदल ने राज्यों के लिए 7 प्रतिशत और केंद्र के लिए 5 प्रतिशत की एकल दर की सिफारिश की। इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने 2006-07 के अपने बजटीय भाषण में अप्रैल 2010 में जीएसटी को लागू करने की घोषणा की। इसके बाद मनमोहन सरकार के नये वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी ने जीएसटी का ढांचा तैयार करने के लिए 2011 में 115वां संविधान संशोधन बिल संसद के पटल पर पेश किया। इसे वित्तीय मामले की स्थाई कमिटी को विचारार्थ भेज दिया गया। इस बिल का गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में कई भाजपा नेताओं द्वारा तीखा विरोध हुआ। नतीजतन मनमोहन सराकार को इस बिल को पारित कराने में सफलता नहीं मिली।

मई 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राजग सरकार केंद्र की सत्ता पर आसीन हुई। इसके वित्त मंत्री अरूण जेटली ने दिसंबर 2014 में जीएसटी को लाने के लिए 122वां संविधान संशोधन बिल संसद में पेश किया। इस बिल को 6 मई 2015 को लोकसभा और 3 अगस्त 2016 को राज्यसभा द्वारा पारित कर दिया गया। राज्यसभा ने इस बिल को कांग्रेस और अन्य दलों द्वारा सुझाए गये कुछ संशोधनों के साथ पारित किया था। इसलिए लोकसभा को इन संशोधनों को अनुमोदित और पारित करना पड़ा। इस बिल पर राष्ट्रपति ने 8 सितम्बर 2016 को अपनी अंतिम सहमति प्रदान की। तब यह बिल एक कानून बन गया। इसके बाद 2017 में जीएसटी से संबंधित चार कानून बनाये गये: केंद्रीय जीएसटी कानून, इंटीग्रेटेड जीएसटी कानून, संघीय क्षेत्र जीएसटी कानून और जीएसटी (राज्यों की क्षतिपूर्ति) कानून। फिर अलग अलग राज्यों ने स्टेट जीएसटी कानून बनाकर इस नये एकल अप्रत्यक्ष कर को लागू करने का जिम्मा लिया।

मोदी सरकार ने व्यापारिक घरानों और प्रतिष्ठानों को जीएसटी संबंधित पूछताछ और कानूनी मदद की सुविधा प्रदान करने के लिए 'जीएसटी सुविधा प्रोवाइडर' भी उपलब्ध कराया है। यह सुविधा जीएसटी नेटवर्क नाम की निजी कम्पनी द्वारा दी जाएगी। इसमें केंद्र और राज्य सरकारों की सम्मिलित हिस्सेदारी 49.5 प्रतिशत की होगी। यह कम्पनी अपने उपभोक्ताओं से काफी उंची रकम लेकर उनकी समस्याओं को हल करेगी। जाहिर है इससे मुख्य तौर पर इस कम्पनी में हिस्सेदारी रखने वाले एचडीएफसी और आईसीआईसीआई बैंकों की तिजोरियां भरेगी।

मीडिया जीएसटी को लागू करने का श्रेय मोदी सरकार को दे रहा है और वित्तमंत्री अरूण जेटली समेत भाजपा के नेतागण अटल बिहारी वाजपेयी के 17 साल पुराने सपने को पूरा करने का दावा कर रहे हैं। अजीब विडम्बना है, कभी जीएसटी का घोर विरोध करने वाले नरेंद्र मोदी ने इसे लागू करने में अगुआ की भूमिका अदा की है। वित्त मंत्री से राष्ट्रपति बने प्रणव मुखर्जी को भी जीएसटी से संबंधित संविधान संशोधन बिल संसद में पेश करने के क्रम में मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के विरोध का सामना करना पड़ा था। उन्हीं नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तैयार की गई जीएसटी की घोषणा प्रणव मुखर्जी ने की।

जीएसटी की निर्धारित दरें

जीएसटी की बारीकियों को समझने और इसकी दरों को निर्धारित करने के लिए 12 सितंबर 2016 को जीएसटी काउंसिल गठित की गई। इसकी कई बैठकों के बाद 1 अप्रैल 2017 से जीएसटी लागू करना तय किया गया। लेकिन कई राज्यों द्वारा उठाए गये सवालों और तकनीक सबंधित तैयारी के अभाव की वजह से इस तारीख को तीन माह के लिए आगे बढ़ाना पड़ा। जीएसटी काउन्सिल के चेयरमैन केंद्र सरकार के वित्त मंत्री है। इसमें सभी राज्यों के वित्त मंत्री या कराण्धान से जुड़े अन्य मंत्री शामिल है। इस काउन्सिल की कुल 18 बैठकें 30 जून 2017 तक की गई। इसने अपनी 13वीं और 14वीं बैठक में कुल मिलाकर 1211 वस्तुओं और सेवाओं की दरें निर्धारित करने में सफलता प्राप्त की। इसने जीएसटी की मूलत: 5 दरें तय की। 0 प्रतिशत, 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत और 28 प्रतिशत। पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदंबरम के अनुसार कुछ वस्तुओं पर 0.25 प्रतिशत और 3 प्रतिशत की दरें भी तय की गयी है। अगर जीएसटी के उपर लगने वाले उपकरों को भी जोड़ा जाए, तो कुल मिलाकर अप्रत्यक्ष कर की करीब दर्जर भर दरें लागू

होगी। इस तरह मोदी सरकार का 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' का नारा पूरी तरह झांसा-पूर्ण है।

मोदी सरकार ने अखबारों में करोड़ों रूपये का विज्ञापन देकर जीएसटी काउन्सिल द्वारा तय दरों को छपवाया है। इसमें दावा किया है कि 81 प्रतिशत वस्तुओं पर 18 प्रतिशत या इससे नीचे की दर तय की गयी है। लेकिन वित्तीय मामलों के विशेषज्ञों ने इन दरों का विश्लेषण कर स्पष्ट किया है कि 1211 वस्तुओं और सेवाओं में से 62 प्रतिशत पर 18 और 28 प्रतिशत और 17 प्रतिशत और 21 प्रतिशत पर क्रमशः 12 और 5 प्रतिशत तक का जीएसटी लगाया गया है। इसके अलावा कुछ वस्तुओं पर कई तरह के उपकर भी लगाये गये हैं। जिससे कर की दर बढ़कर 40 फीसद तक हो गयी है।

जीएसटी काउन्सिल ने उक्त 5 दरों के तहत वस्तुओं को जिस तरह से श्रेणीबद्ध किया है, उनमें से कुछ को इस तरह से पेश किया जा सकता है:

जीरो (शून्य) टैक्स: ताजा दूध, खुला खाद्य अनाज, ताजा फल, ताजा सब्जियां, नमक, गुड़, अण्डे, खुला पनीर, चावल, बिना मार्का आटा, मैदा और बेसन, रोटी, पापड़, जानवरों का चारा, किताबें, कंडोम, गर्भ निरोधक दवाएं, जलावन की लकड़ियां, सिंदूर, बिंदी, गैर कीमती चुड़ियां, फूल झाड़ू, बिना मार्का प्राकृतिक शहद, ताजा लस्सी और दही, बच्चों की ड्राइंग बुक्स और काजल।

5 प्रतिशत टैक्स: चाय, कॉफी, खाद्य तेल, ब्रांडेड अनाज, सोयाबीन, सूरजमुखी के बीज, ब्रांडेड पनीर, कोयला, केरोसीन, घरेलू एलपीजी, काजू, किशमिश, 500 रूपये तक के जूतें, 1000 रूपये तक के कपड़े, ओआरएस, ज्योमेट्री बॉक्स, कृत्रिम किडनी, हैंड पम्प, लोहा, स्टील और लोहा मिश्रित धातुएं, तांबा के बर्तन, चीनी, खादें, चटाई और फ्लोर कवरिंग, दूध का पाउडर और मशाले।

12 प्रतिशत टैक्स वाली वस्तुएं: ड्राई फ्रूट्स और फ्रूट जूस, घी, मक्खन, नमकीन, मांस, मछली, दूध से बने पेय, फ्रोजेन मीट, बायो गैस, मोमबत्ती, एनेसथेटिक्स, अगरबत्ती, दंतमंजन पाउडर, चश्मे का लेंस, कैलेंडर्स, एलपीजी स्टोव, नट बोल्ट और पेंच, ट्रैक्टर, साइकिल, एलईडी लाइट, खेल का सामान, हस्तनिर्मित कालीन, आर्ट वर्क, मोबाइल फोन, छाता, आचार, मुरब्बा, चटनी, पैक्ड नारियल पानी, सॉस और सूप।

18 प्रतिशत टैक्स वाली वस्तुएं: हैलमेट, सीसीटीवी, रिफाइंड शुगर, कंडेस्ड मिल्क, प्रिजर्व्ड सब्जियां, बालों के तेल, साबुन, नोटबुक, स्कूल बैग, जैम, जेली, आइस्क्रीम, इंस्टैंट फूड, मिक्सी, मिनरल वाटर, पेट्रोलियम जेली, पेट्रोलियम कोक, टायलेट पेपर और कम्प्यूटर, ट्रैक्टर पार्ट्स, टूथपेस्ट, पास्ता और कॉर्न फ्लेक्स।

28 प्रतिशत टैक्स वाली वस्तुएं: सीमेंट, मोटर कार, मोटर साइकिल, चाकलेट, कोकोआ बटर, पान मसाला, फ्रिज, शैंपू, परफ्यूम, डियोड्रेंट, मेकअप का सामान, वाल पुट्टी, दीवार के पेंट, शेविंग क्रीम, ओवर शेव लोशन, लिक्विड सॉप, प्लास्टिक उत्पाद, रबर टायर, चमड़े के बैग, मार्बल, ग्रेनाइट, प्लास्टर, माइका, टेम्पर्ड ग्लास, रेजर, डिश, वाशिंग मशीन, मैनिक्योर-पैडिक्योर सेट, पियानो और रिवाल्वर।

जीएसटी के पक्ष में तर्क

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री अरूण जेटली के साथ साथ राजस्व विभाग के आला अधिकारी अखबारों व टीवी के माध्यम से लगातार जीएसटी से होने वाले फायदों के बारे में बयानबाजी कर रहे हैं। इन बयानों के जरिये गिनाए जा रहे फायदों को क्रमबद्ध रूप से इस तरह पेश किया जा सकता है:

1. सत्रह केंद्रीय और राज्य करों और 23 उपकरों की जगह केवल एक कर लगेगा। लोगों को दोहरे कर चुकाने से मुक्ति मिलेगी;
2. अब कच्चा बिल-पक्का बिल का खेल नहीं चलेगा और कर का ऑनलाइन भुगतान करना होगा। इससे भ्रष्टाचार और काले धन पर अंकुश लगेगा;
3. कारोबारियों को इंस्पेक्टर राज से मुक्ति मिलेगी;
4. चुंगी कर नहीं लगेगा और राज्य की सीमाओं पर लगे चेकनाके उठा लिये जाएंगे;
5. बाजार में एकरूपतता आएगी और कृषि की एकीकृत राष्ट्रीय बाजार योजना मजबूत होगी;
6. लागत कम होने से चीजें सस्ती होगी, इससे निर्यात और रोजगार को बढ़ावा मिलेगा;
7. सालाना विकास दर में 0.9 प्रतिशत से 1.7 प्रतिशत की वृद्धि होगी;
8. महंगाई पर लगाम लगेगी और उपभोक्ताओं को चीजें सस्ते दाम पर मिलेगी;
9. करदाताओं की संख्या तेजी से बढ़ेगी और देश के राजस्व में इजाफा होगा;
10. 'एक राष्ट्र, एक कर, एक बाजार' की नीति के अनुपालन से जनता के बीच राष्ट्रवाद और एकता की भावना सुदृढ़ होगी।

खोखले दावे

आइए, अब हम मोदी सरकार के इन दावों की हकीकत की शिनाख्त करें। विभिन्न करों और उपकरों के एकल कर में समेटने के दावे पर उपर लिखा जा चुका है। सच्चाई यही है कि मोदी सरकार का जीएसटी कई दरों वाला कर है। इसकी कल्पना भाजपा के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने भी नहीं की थी। राजस्व सचिव हसमुख अधिया ने भी इंडियन एक्सप्रेस को

दिये गये अपने इंटरव्यू में स्वीकार किया है कि एकल दर वाली जीएसटी ही आदर्श होती है, जैसा कि सिंगापुर में है। वित्त मंत्रालय के प्रमुख आर्थिक सलाहकार अरविंद सुब्रमनियम ने भी कहा है कि जीएसटी के दरों में असमानता कम से कम होनी चाहिए थी और उच्चतम दर 18 प्रतिशत से ज्यादा नहीं रखनी थी। लेकिन नीति आयोग के सदस्य विवेक देवरॉय ने 30 जून 2017 के अपने बयान में सरकार का बचाव करते हुए कहा कि जीएसटी के कर ढांचे में अलग-अलग दरें इसलिए लाई गयी है कि देश का ढांचा संघीय है।

लेकिन जीएसटी की कई सारी दरें रखने का नतीजा सामने है। विभिन्न किस्म के उत्पादों से जुड़ी बिजनेस लॉबियां अपने उत्पादों पर लगी उंची दरों को कम करने का दबाव बना रही है। इसके कुछ ज्वलंत उदाहरण हैं, उर्वरक पर लगे 12 प्रतिशत जीएसटी को घटाकर 5 प्रतिशत करना और खाद कम्पनियों को अपने करीब 10 लाख टन के मौजूदा भंडार को सितम्बर 2017 तक संशोधित दर पर बेचने की अनुमति देना। सैनेटरी नेपकिन पर लगे 18 प्रतिशत की दर को घटाकर 12 प्रतिशत और 8 प्रतिशत तक लाना। पुराने वाहनों की बिक्री पर जीएसटी नहीं लगने की घोषणा करना और ट्रैक्टर पार्ट्स पर लगाए गए 28 प्रतिशत के कर को घटाकर 18 प्रतिशत करना। जीएसटी काउन्सिल को कर की दरों को घटाने के लिए 30 जून 2017 को (जिस दिन जीएसटी की घोषणा की गई) विशेष बैठक भी करनी पड़ी।

मोदी सरकार नोटबंदी, डिजिटल भुगतान आदि के जरिए भ्रष्टाचार और काले धन पर अंकुश लगाने की बातें करती रही है। लेकिन सत्य यह है कि अभी तक हुए बड़े भ्रष्टाचार और काले धन की पैदाइश में डिजिटल ऑनलाइन भुगतान के तरीके का भी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल हुआ है। हमारे देश के बड़े-बड़े कारोबारी अच्छी तरह जानते हैं कि बिल या उसकी जगह ऑनलाइन लेन-देन में कैसे हेरा-फेरी की जा सकती है। जीएसटी नेटवर्क या देश का बैंकिग सिस्टम इतना चुस्त-दुरूस्त नहीं है कि इस हेरा-फेरी को पूरी तरह रोक सकें।

सरकार ने 'इन्सपेक्टर राज' समाप्त करने का दावा किया है, लेकिन सच्चाई इसके ठीक विपरीत है। जीएसटी लागू होने के पहले वैट के पदाधिकारियों को व्यापारियों द्वारा कानून का उल्लंघन करने पर उन्हें गिरफ्तार करने का अधिकार नहीं था। वे उनपर सिर्फ एफआईआर कर सकते थे लेकिन जीएसटी के तहत उन्हें गिरफ्तार करने का अधिकार दे दिया गया है, इसका व्यापारी समुदाय विरोध कर रहा है।

यह सच है कि जीएसटी के तहत चुंगीकर खत्म कर दिया गया है और 13 जुलाई 2017 तक सभी राज्यों में लगे चेकनाके उठा लिए गए। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने दावा किया है कि इससे सामान लदे ट्रकों की रफ्तार में हर रोज करीब 100 किलोमीटर (350 से 450 किमी) की वृद्धि हुई है। लेकिन अभी भी पुलिस विभाग के पदाधिकारी पूरे देश में इन ट्रकों को जगह-जगह रोक कर करोड़ों की कमाई कर रहे हैं। ट्रक ऑपरेटरों के संगठनों ने अखबारों में बयान दिया है कि जीएसटी लागू होने के बाद भी उन्हें हर ट्रक पर 500 रूपये से लेकर 50,000 रूपये तक पुलिस को देने पड़ रहे हैं। अब नोटबंदी की तरह जीएसटी भी पुलिस की नाजायज कमाई का एक और जरिया बन गया है। 13 जुलाई 2017 को दिल्ली राजधानी में भी ट्रैफिक पुलिसकर्मी व्यापारियों के सामान ढोने वाली गाड़ियों के चालकों से जीएसटी बिल मांगते पाए गये है। व्यापारियों द्वारा दिल्ली पुलिस आयुक्त को इस तरह की सैकड़ों शिकायतें भेजी गई है। इन शिकायतों के बाद दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के एएसआई और हवलदार समेत पांच पुलिसकर्मियों को निलंबित भी किया गया है।

जीएसटी के जरिये बाजार में एकरूपता लाने और कृषि उपजों के लिए राष्ट्रीय बाजार को बढ़ावा देने की बात पूरी तरह छलावा है। हमारे देश में बाजार की पूरी व्यवस्था एकाधिकारी पूंजीपतियों द्वारा नियंत्रित की जाती है। साम्राज्यवाद और एकाधिकारी प्रतियोगिता के दौर में दुनिया के किसी भी बाजार में एकरूपता कायम करना कपोल-कल्पना के सिवाय कुछ नहीं है। खासकर, हमारे देश में बाजार की एकरूपता का दावा करना बौद्धिक दिवालियापन है, जहां पूंजीवाद का विकास असमान हुआ है और हो रहा है। इसी तरह कृषि उत्पादों के बाजारों की काफी बुरी हालत है। एक तो कृषि उपजों का न्यूनतम समर्थन मूल्य काफी कम है। दूसरे पंजाब ओर हरियाणा को छोड़ शेष सभी राज्यों में इस मूल्य पर 10 प्रतिशत कृषि उपज ही खरीदी जाती है। टमाटर, आलू और प्याज जैसी फसलों का लागत मूल्य भी किसानों को नहीं मिल पाता है और उन्हें इन उपजों को सड़क किनारे या गड्ढों मे फेंकना पड़ता है। भाजपा ने 2014 के लोकसभा चुनाव के घोषणा पत्र में सभी कृषि उपजों के लागत से 50 प्रतिशत अधिक मूल्य किसानों को देने का वादा किया था। मोदी सरकार ने अपने बजट में 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुना करने की घोषणा की है। लेकिन सरकार अपने इन वादों को पूरा करने में कोई ध्यान नहीं दे रही है। नतीजतन कर्ज के जाल में फंसे किसानों की आत्महत्या की घटनाएं बढ़ती जा रही है।

जीएसटी लागू होने से उत्पादन, रोजगार, निर्यात और समग्रता में विकास दर में वृद्धि की बात की जा रही है। यह पूरी तरह अतार्किक है। सिर्फ कराधान की व्यवस्था में सुधार करने और एकल दर लागू करने से ऐसा नहीं हो सकता है। दुनिया में ऐसे दर्जनों देश हैं, जहां जीएसटी और अप्रत्यक्ष कर की एकल दर (सही मायने में) लागू है, लेकिन वहां की अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर काफी नीची है। हमारे देश के 'कोर' क्षेत्र का उत्पादन लगातार घट रहा है और अप्रैल और

मई 2017 में इसमें क्रमशः 2.8 और 3.6 प्रतिशत की गिरावट आई है। सेंटर ऑफ मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनोमी (सीएमआईई) के अनुसार जनवरी-अप्रैल 2017 की अवधि में करीब 15 लाख रोजगार कम हुए हैं।

यह सच है कि पिछले दस माह में (जून 2017 तक) से निर्यात बढ़ा है लेकिन यह भी सच है कि इस अवधि में निर्यात से ज्यादा आयात बढ़ा है। ऐसे में व्यापारिक संतुलन का बिगड़ना स्वाभाविक है। अगर अप्रैल, मई और जून 2017 के व्यापार घाटे को जोड़ें, तो वह कुल 40.16 अरब डॉलर का हो गया है। फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (फियो) का मानना है कि जीएसटी लागू होने से व्यापारियों के लिए नकदी का संकट पैदा होगा। इसके परिणामस्वरूप घरेलू निर्यातकों की प्रतिस्पर्धात्मकता करीब 2 प्रतिशत घट जाएगी। इसका देश के निर्यात पर नकारात्मक असर पड़ेगा। हाल के महीनों में निर्यात में हुई वृद्धि वैश्विक मांग की मजबूती के कारण हुई है, न कि कराधान की व्यवस्था के कारण। दिसंबर 2014 से अक्टूबर 2016 तक हमारे देश के निर्यात में संकुचन इसलिए आया था क्योंकि इस अवधि में निर्यात करने योग्य वस्तुओं की वैश्विक मांग काफी कमजोर थी। निर्यात में हो रहे वृद्धि की रफ्तार को तेज करने के लिए स्पेशल इकॉनोमिक जोन (सेज) को जीएसटी से मुक्त रखा गया है। सरकार ने अब तक 421 सेज की स्वीकृति प्रदान की है। इनमें से 218 कार्यरत हैं। इन सेजों को कानूनन विदेशी क्षेत्र माना जाता है। जहां भारत सरकार के नियम-कानून आमतौर पर लागू नहीं है। विकास दर बढ़ाने की बात तो आंकड़ों का खेल है और मोदी सरकार का सांख्यिकी विभाग इस खेल को खेलने में काफी माहिर है।

गिरती कीमतों को भ्रम जाल

हाल के महीनों में हमारे देश के उपभोक्ता मूल्य और थोक मूल्य के आकड़े गिरते दिखाए गये हैं। अभी-अभी जून 2017 में पेश आंकड़ों में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) और थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) में गिरावट को क्रमशः 1.54 और 0.90 प्रतिशत दिखाया गया है। यह बताया गया है कि मूल्यों में यह गिरावट मुख्यतः अनाजों, दालों, एवं सब्जियों के दामों में करीब 10 से 50 प्रतिशत की कमी के चलते हुई है। मोदी सरकार दावा कर रही है कि जीएसटी लागू होने से मूल्यों में और कमी आएगी। लेकिन अगर हम वास्तविक स्थिति पर गौर करें तो उल्टी तस्वीर नजर आएगी। सबसे पहले सेवाओं पर लगी जीएसटी का विश्लेषण करें। जीएसटी के लागू होने के पहले बैंकिंग, बीमा और टेलिकॉम सेवाएं, अस्पतालों की सेवाएं, रेस्टूरेंट का खाना, कोचिंग सेंटर, ब्यूटी पार्लर, ड्रायक्लिनींग, सैलून जैसी कुल 119 सेवाओं पर 15 प्रतिशत का कर लगता था। अभी इन सभी सेवाओं पर लगने वाले कर को बढ़ाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया है। यानी पहली जुलाई से जनता को इन सेवाओं का उपभोग करने के लिए 3 प्रतिशत अधिक कर अदा करना पड़ेगा, उन्हें जून में उपभोग की गयी सेवाओं पर भी तीन प्रतिशत अधिक कर चुकाना पड़ेगा। क्योंकि सेवा प्रदाता (जैसे टेलीफोन विभाग) अपना बिल उन्हें जुलाई में ही भेजेंगे। ताजा आंकड़ों के मुताबिक हमारे देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का करीब 65 प्रतिशत हिस्सा सेवा क्षेत्र से आता है। इस क्षेत्र पर तीन प्रतिशत कर बढ़ने पर अर्थव्यवस्था का लगभग दो तिहाई हिस्सा बुरी तरह प्रभावित होगा।

छोटे कारोबार पर भार

अब हम छोटे-छोटे उद्योगों और व्यापारियों पर जीएसटी के पड़ने वाले नकारात्मक असर की चर्चा करें। दिल्ली और देश के विभिन्न छोटे-बड़े शहरों में लघु एवं कुटीर उद्योगों के सामान काफी कम दाम पर गरीब व मध्य वर्ग के नीचले तबके के लोग खरीदते हैं। ऐसा इसलिए होता हे कि ये उद्योगपति छोटे और फुटकर व्यापारियों को बिना किसी बिल के सामान मुहैया कराते हैं यानी बिना कोई कर लगाए। हमारे देश में लाखों ऐसे कल-कारखाने चल रहे हैं, जो अपने उत्पाद पर सरकार को कोई कर नहीं देते हैं और व्यापारियों को सस्ता सामान उपलब्ध कराते हैं। अब उनके बड़े हिस्से को जीएसटी का भुगतान करना पड़ेगा और उसके साथ उत्पादित माल महंगे हो जाएंगे। इसके चलते अब छोटे फुटकर व्यापारी कम माल खरीदेंगे और उनके कल-कारखाने बड़े पैमाने पर बंद होंगे। इसका लाभ बड़ी-बड़ी कम्पनियां उठाएगी और उपभोक्ताओं से ज्यादा दाम और मुनाफा वसूलेगी। देश के छोटे-छोटे कल-कारखाने को कर के दायरे में लाना अच्छी बात मानी जा सकती है, लेकिन बड़ी कम्पनियों से मुकाबला करने की उनकी क्षमता और आम उपभोक्ताओं की वास्तविक आमदनी को बढ़ाए बगैर उन पर 12, 18 व 28 प्रतिशत तक कर लगाना कहीं से भी उचित नहीं है।

खादी की बर्बादी

जीएसटी लगने के बाद देश के खादी उद्योग की हालत पर गौर करें। 'आजादी' की लड़ाई के दौरान महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर खादी पहनने का संदेश दिया था। भारत की सरकारें खादी के कपड़े और परिधानों को सस्ते दर पर बेचने के लिए 10 से 30 प्रतिशत की छूट देती रही है। लेकिन पहली जुलाई से इन कपड़ों और परिधानों पर 12 प्रतिशत तक जीएसटी लगना शुरू हो गया है। इससे खादी कपड़ों की दुकानों में जाने वाले लोगों की संख्या में भारी कमी आई है। खादी के कपड़े बेचने वाले दुकानदारों के संगठनों ने सरकार से मांग की है कि तत्काल खादी को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा जाए क्योंकि कर लगने से जुलाई के पहले सप्ताह में उनके कारोबार को 50 प्रतिशत तक का नुकसान झेलना पड़ा है।

इसी तरह केंद्र सरकारें बायोडीजल, एथनौल और अन्य मिश्रित ईंधनों के प्रयोग को बढ़ावा देने की बातें करती रही है और उन्होंने पिछले 10 सालों से उनपर कोई एक्साइज ड्यूटी नहीं लगाई है। लेकिन पहली जुलाई से इन उत्पादों पर 18 प्रतिशत का जीएसटी लगाया गया है। नतीजतन यं ईंधन महंगे होंगे और इनके इस्तेमाल में कमी आएगी।

दवाएं महंगी, घर महंगा

जीएसटी का असर 702 जीवन रक्षक दवाओं पर भी पड़ेगा। पहले इन पर 8 से 9 प्रतिशत तक कर लगता था, इसे बढ़ाकर 12 प्रतिशत कर दिया गया है। इसका खामियाजा गरीब मरीजों को भुगतना पड़ेगा और उन्हें अब सिरदर्द, सर्दी, जुकाम, बुखार जैसी मामूली बिमारियों की दवाएं भी कम से कम 3 प्रतिशत ज्यादा दाम देकर खरीदनी होगी। यहां तक की दिव्यांगों के उपयोग के व्हील चेयर, वाहनों और ब्रेल टाइपराइटरों पर भी 5 से 18 प्रतिशत तक का कर लगाया गया है, इसे तत्काल उठाने की मांग उनके संगठन कर रहे हैं। यहां का हाउसिंग क्षेत्र पहले से ही संकट का सामना कर रहा है और खासकर नोटबंदी के बाद बिल्डरों द्वारा निर्मित घरों की बिक्री कम हो गई है। जीएसटी के तहत बिल्डिंग निर्माण पर 18 प्रतिशत कर लगाया गया है। इससे इस क्षेत्र का संकट और गहरा हो जाएगा और मकान के खरीदारों को ज्यादा रकम अदा करनी पड़ेगी।

अन्य हलकों पर भार

जीएसटी लगने से सोना भी महंगा हो गया है। पहली जुलाई से पहले इस धातु पर 1 प्रतिशत उत्पादन शुल्क और 1 प्रतिशत वैट लगता था, लेकिन अब तीन प्रतिशत कर लगेगा। इस तरह सोना खरीदने वालों को एक प्रतिशत ज्यादा कर अदा करना पड़ेगा। इसके अलावा अगर कोई पुराने जेवरों की मरम्मत कराता है, तो उसे जॉब वर्क माना जाएगा और इसके लिए उन्हें 5 प्रतिशत का अलग से कर देना पड़ेगा। जब सोना पर 1 प्रतिशत का वैट लगाया गया था, तो सोना व्यापारियों/दुकानदारों ने काफी लम्बे समय तक अपनी दुकानें बंद कर इसका विरोध किया था। अभी जब उन्हें 3 प्रतिशत जीएसटी का सामना करना पड़ रहा है, तो उनके संगठनों ने विरोध की आवाजें बुलंद करनी शुरू कर दी है।

जीएसटी के लागू होने के बाद कम्प्यूटर और प्रिंटर के दामों में भी अच्छी खासी वृद्धि हो गयी है। हाल में एचपी इंडिया सेल्स प्राइवेट लिमिटेड ने विभिन्न राष्ट्रीय अखबारों में पूरे दो पेज के विशेष विज्ञापन देकर अपने उपभोक्ताओं को बताया है कि जीएसटी लगने के चलते उन्होंने प्रिंटर इंक और कैटरीज समेत विभिन्न तरह के प्रिंटरों और अन्य उत्पादों पर 1000 से 70,000 रूपये तक की वृद्धि की है। भारतीय कालीन उद्योग को भी जीएसटी लागू होने से काफी नुकसान उठाना पड़ा है। हस्तनिर्मित कालीन के महंगे होने से इनके निर्यातकों के करीब 2,000 करोड़ रूपये के ऑर्डर रद्द हो गए हैं।

बिजली उपकरण बनाने वाली कंपनियों ने भी पंखा, कूलर, आयरन, स्विच आदि के दाम बढ़ा दिये हैं। अचानक घरेलू एलपीजी के दाम दिल्ली, उत्तर प्रदेश समेत आधा दर्जन राज्यों में 35 से 40 रूपये प्रति सिलेंडर बढ़ गए हैं। सारे शहरों में एसी और गैर एसी रेस्त्राओं में चाय-कॉफी और नाश्ता-खाना महंगा हो गया है। बिस्किट और अन्य शिशु आहार भी महंगे हो गए हैं। घोर आश्चर्य है कि इतना सब होने के बाद भी मोदी सरकार के वित्त मंत्री कह रहे हैं कि जीएसटी लागू होने से 4 से 8 प्रतिशत तक महंगाई कम हुई है।

और सरकार का अंतिम दावा, जीएसटी के जरिए एक राष्ट्र बनाने का सरकार का दावा कितना खोखला है, कुछ लिखने की जरूरत नहीं है। फासीवादी मोदी सरकार अपने कार्यकाल में दलितों, मुस्लिमों और जम्मू-कश्मीर और उत्तर पूर्व की उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं पर जानलेवा हमले तेज करवा रही है। ऐसे माहौल में इसके किसी भी कदम को देश या राष्ट्र की एकता की दिशा में उठाया कदम मानना, निरी मूर्खता होगी।

जीएसटी के विरोध में उठे स्वर

जीएसटी के खिलाफ कई विपक्षी दल, व्यापारिक समूह और किसानों-महिलाओं के संगठनों के साथ-साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े कुछ संगठनों ने भी आवाज उठाई है। उम्मीद की जा रही थी कि विभिन्न प्रांतो में शासन चला रहे क्षेत्रीय दल जीएसटी के जरिये देश के संघीय ढांचे के तहत राज्यों को मिले अधिकारों पर हुए हमले को लेकर बवाल खड़ा करेंगे, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। इस बात को लेकर जम्मू-कश्मीर की विधानसभा में कुछ नोक-झोंक जरूर हुई। सीपीएम के नेतागण कभी राज्यों के अधिकार की रक्षा के लिए जोरदार आवाज उठाते थे, वे भी मिमियाते नजर आए। कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, राजद, सीपीआई, सीपीएम आदि ने दिल्ली बंद में भाग लेकर संसद भवन या जंतर मंतर पर प्रदर्शन आयोजित कर और अलग-अलग राज्यों के मुख्यालयों पर धरना-प्रदर्शन करके अपना विरोध प्रकट किया है, लेकिन उनके विरोध का वस्तुगत आधार काफी कमजोर है। उनके विरोध के स्वर इस तरह उभरते हैं कि जीएसटी लाने की योजना कांग्रेस पार्टी और उसके नेतृत्व में संचालित केंद्र सरकार ने की, न कि भाजपानीत वाजपेयी या मोदी सरकार ने; जीएसटी को एकल दर वाली या ज्यादा से ज्यादा दो दर वाली व्यवस्था बनानी चाहिए, न कि 7 या 10 दर वाली; कर की दर ज्यादा से ज्यादा 18 प्रतिशत रखनी चाहिए, न कि 28 प्रतिशत; अभी बैंकिंग सिस्टम और जीएसटी नेटवर्क ऑनलाइन कर भुगतान का बोझ वहन करने में सक्षम नहीं है, इसलिए

इस नये कर को कम से कम छह माह बाद लागू करना चाहिए था; जीएसटी के प्रचार और इसकी घोषणा के कार्यक्रम पर करोड़ों रूपये खर्च करने की जरूरत नहीं थी, आदि, आदि।

व्यापारिक संगठनों ने दिल्ली और देश के विभिन्न हिस्सों में जीएसटी का तीखा विरोध किया है। खासकर, कपड़ा व्यापारियों के संगठनों ने तीन दिनों का दिल्ली बंद आयोजित किया और अन्य व्यापारिक संगठनों के साथ मिलकर 30 जून 2017 को दिल्ली बंद भी काफी हद तक सफल किया। सूरत में कपड़ा और अन्य कारोबार से जुड़े लोगों ने संघर्ष समिति के बैनर में विशाल जुलूस (जिसमें करीब डेढ़ लाख लोगों ने शिरकत की) निकालकर अपना विरोध जताया। जीएसटी संघर्ष समिति के अंदर संघर्षरत कपड़ा व्यापारी लॉबी ने देश के सबसे बड़े कपड़ा बाजार को अनिश्चितकाल के लिए बंद कर रखा है। उसकी मांग है कि कपड़ा को आवश्यक वस्तु माना जाए (जैसा कि 1956 के औद्योगिक कानून में माना गया था) और कपड़ा और कपड़ा बनाने वाले धागों पर लगे जीएसटी को पूरी तरह हटाया जाए।

देश के विभिन्न भागों में फर्नीचर व्यापारियों ने एक दिन का 'दुकान बंद' आयोजित किया। उनकी मांग है कि फर्नीचर पर लगाए गये कर को कम से कम 12 प्रतिशत तक लाया जाए। मार्बल के कारोबारियों ने भी पहली जुलाई से अपनी दुकानें बंद कर रखी है। उनकी मांग है कि मार्बल को लक्जरी सामान नहीं माना जाए और इसपर लगे 28 प्रतिशत जीएसटी कम किया जाए। अभी घर बनाने में 95 प्रतिशत स्वदेशी मार्बल का इस्तेमाल होता है, अगर इस पर लगे कर को कम नहीं किया जाएगा, तो न सिर्फ मार्बल कारोबारियों बल्कि घर बनाने वालों को भी नुकसान उठाना पड़ेगा।

देश के छोटे व्यापारियों के सामने जीएसटी नेटवक्र के जरिये रिटर्न भरने की समस्या आ खड़ी हुई है। इसे देखते हुए कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन ट्रेडर्स (सीएआईटी) ने सरकार से मांग की है कि उनके लिए कुछ खास व्यवस्था की जाए। उनका कहना है कि 60 प्रतिशत छोटे व्यापारी कम्प्यूटर नहीं रखते हैं, इसलिए वे जीएसटी सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। उन्हें जीएसटी कानून के मुताबिक रिटर्न भरने के लिए निजी सॉफ्टवेयर कम्पनियों, चार्टर्ड एकांउटेंटों और टैक्स कंसलटेंटों की सहायता लेनी होगी। गौरतलब है कि जीएसटी लागू होने की घोषणा होते ही इन निजी पेशेवरों ने अपनी फीस 20 से 30 प्रतिशत बढ़ा दी है। प्रधानमंत्री इन छोटे व्यापारियों की इस समस्या को हल करने के बजाय कंसलटेंसी फर्मों, चार्टर्ड एकांउटेंटों और टैक्स पेशेवरों को सलाह दे रहे हैं कि वे अपने ग्राहकों को सही रिटर्न फाइल करने में सहयोग करें और बढ़े हुए काम के मौके का लाभ उठाएं। किसान संगठनों ने भी ट्रैक्टर और उनके पार्ट-पुर्जों पर 12 से 18 प्रतिशत तक टैक्स लगाने और पेट्रोल, डीजल व केरोसिन तेल को जीएसटी के दायरे से बाहर रखने के खिलाफ देश के स्तर पर धरना-प्रदर्शन कर अपना विरोध जाहिर किया है। डीजल और केरोसिन का खेती में काफी इस्तेमाल होता है और सरकार इसपर 50 प्रतिशत से अधिक कर लगाती है। अगर इसे जीएसटी के दायरे में रखा जाता, तो इसके दाम कम होते (कर की दर घटने से) और कसानों को इसका लाभ मिल पाता। किसान संगठनों ने खादों पर बढ़े हुए दर पर जीएसटी लगाने का भी काफी विरोध किया है, इसके दबाव में सरकार ने उसे कम किया है। महिला संगठन ने सैनेटरी नेपकिन को लक्जरी सामान मानने और उसपर 18 प्रतिशत जीएसटी लगाने का विरोध किया है और उसे तत्काल वापस लेने की मांग की है। उन्होंने हस्ताक्षर अभियान भी चलाया है और अब तक करीब तीन लाख महिलाओं के हस्ताक्षर हो चुके हैं।

आरएसएस से जुड़े भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) और स्वदेशी जागरण मंच ने भी अपने तरीके से जीएसटी का विरोध किया है। बीएमएस ने प्रधानमंत्री दफ्तर को 28 जून को एक ज्ञापन सौंपा है, इसमें कहा गया है कि जीएसटी लगने से कई वैसे उपकर समाप्त हो जाएंगे, जिनकी आमदनी के आधार पर निर्माण मजदूरों, खदान मजदूरों और बीड़ी मजदूरों की कई कल्याणकारी योजनाएं चलाई जाती है। खासकर इससे करीब पांच करोड़ बीड़ी मजदूर बुरी तरह प्रभावित होंगे। बीएमएस ने बीड़ी पर लगे 28 प्रतिशत के जीएसटी को भी कम करने की मांग की है, ताकि इस उद्योग में लगे मजदूरों और बीड़ी पत्ता इकट्ठा करने वाले (खासकर महिलाओं) पर इसकी गाज न गिरे। स्वदेशी जागरण मंच ने बयान दिया है कि जीएसटी से छोटे और कुटीर उद्योगों को काफी नुकसान होगा क्योंकि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं पर उंची दर पर कर लगाया गया है, इससे उनकी प्रतियोगी क्षमता कमजोर होगी, जिसका सीधा फायदा चीन के उत्पादकों को होगा।

देश के विभिन्न भागों में और जनता के विभिन्न हिस्सों द्वारा अलग-अलग तरीके से जीएसटी का विरोध किया जा रहा है। 17 जुलाई से शुरू हुए संसद के मानसून सत्र में इसकी गूंज भी सुनाई पड़ रही है। जीएसटी जैसी प्रतिगामी कर व्यवस्था का आम जनता और खासकर इसके मेहनतकश हिस्से और छोटे कारोबारियों पर काफी नुकसानदेह असर होगा। फिर भी इसके खिलाफ उतनी संगठित और सशक्त आवाज नहीं उठ रही है, जितनी उठनी चाहिए। खासतौर पर भारतीय शासक वर्गों की मोदी सरकार द्वारा करारोपन की नई जनविरोधी व्यवस्था का देश के प्रगतिशील, जनतांत्रिक और क्रांतिकारी ताकतों को पर्दाफाश करना चाहिए।

एओबी प्रभारी कामरेड रामकृष्ण से रामगुड़ा घटना पर साक्षात्कार

(मालूम हो कि ओड़िशा राज्य के मलकानगिरी जिला के रामगुड़ा में हमारे पीएलजीए के उपर केन्द्र व राज्य की हत्यारी पुलिस ने 24 अक्टूबर, 2016 को कातिलाना हमला कर बर्बर हत्याकांड रचाया था, जिसमें हमारे 31 साथी शहीद हुए थे। इस घटना के बारे में विस्तार से इस साक्षात्कार में बताया गया है, साथ ही हमारी कमियों व भविष्य के लिए सबक को भी रेखांकित किया गया है। यह साक्षात्कार पार्टी के एपी-तेलंगाना-एओबी के तेलुगु मुखपत्र 'क्रांति' के अक्टूबर, 2016-मार्च, 2017, अंक-01 का हिन्दी अनुवाद है।

-संपादकमंडल, लाल चिनगारी)

1. प्र.) सीपीआई (माओवादी) के इतिहास में रामगुड़ा घटना आज तक की सबसे बड़ी घटना है। यह कैसे हुआ, विस्तार से बताइये?

आरके- बिल्कुल ठीक कह रहे हैं आप। रामगुड़ा घटना हमारे पार्टी के इतिहास में सबसे बड़ी घटना के रूप में कह सकते हैं। आप ध्यान दिये ही होंगे कि कुछ बुर्जुआ पत्रिकाओं ने तो इस हमले को सरकार का हमारे ऊपर किया गया ''सर्जिकल स्ट्राइक'' का नाम भी दिया है। इस कातिलाना हमले में आंध्रप्रदेश व ओड़िशा राज्यों के ग्रेहाउण्ड्स व एसओजी कमाण्डो बलों के साथ केन्द्र की पारामिलिटरी बल भी शामिल थी। आंध्रप्रदेश के डीजीपी के वक्तव्य के अनुसार 800 बल इसमें शामिल थे। 24 अक्टूबर, 2016 की सबुह 6 बजे हम रोलकॉल में थे, उस समय हम पर यह कातिलाना हमला हुआ। इस दरमियान 45 मिनट से 1 घण्टे तक भारी गोलीबारी हुई। इस लड़ाई में हमें भारी नुकसान हुआ। हमारी तरफ से 31 कामरेड्स शहीद हुए हैं। जिनमें स्पेशल जोनल कमेटी के 2 कामरेड्स, डिविजनल कमेटी के 2 कामरेड्स, एरिया कमेटी के 12 कामरेड्स, पार्टी सदस्य 6 कामरेड्स, विभिन्न जन संगठन व मिलिशिया के 9 कामरेड्स शामिल हैं। सरकारी बलों का एक सीनियर कमाण्डो मारा गया और एक गंभीर रूप से घायल हुआ और चार को हल्की सी चोट आयी।

इस घटना को समझने के लिए और भी कुछ विषयों को जानना जरूरी है। इसलिए इसके अनुरूप पूरे घटनाक्रम को दो भागों में यानी 1) कतिलाना हमले के पहले व 2) हमले के दौरान, में बांटा जाना चाहिए।

1) हमले के पहले- यह कातिलाना हमला मुख्य रूप से हमारे पार्टी के उच्च स्तर के नेतृत्व को लक्ष्य बनाकर किया गया है। ऐसी कोशिश जनवरी 2015 से 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे चरण के नाम से तेज की गई है। ऐसे ही हमले जनवरी 2015 में ''बेज्जी'' क्षेत्र में, अगस्त 2015 में ''जन्त्री'' क्षेत्र में व दिसंबर 2015 में ''नन्दपुर'' क्षेत्र में हम पर हुए हैं। इन तीनों घटनाओं में भी नेतृत्व को लक्ष्य बनाकर हमला किया गया। सैकड़ों सरकारी सशस्त्र बल सुनियोजित ढंग से ऐसे कातिलाना हमले का आयोजन किया, इसके बावजूद हमारे पीएलजीए बलों ने बहादुरी से मुकाबला किया। इन विफलताओं से सरकारी बलों ने सबक लेकर इस बार और भी गोपनीयता का पालन करते हुए और मुस्तैदीपूर्ण योजना बनाई। योजना को व बदलते हुए हालातों को हम समझ नहीं पाये। 23 की सुबह ही हमारे सभी बल रामगुड़ा डेरे में पहुंच गई। तब तक हमारे सांगठनिक कार्य पूरा कर चुके थे। इससे आउटर सर्किल में मौजूद सुरक्षा बलों को वापस बुला लिया गया। उस दिन इकट्ठे हुये हमारे बलों से बात करके व कार्यों की योजना बनाकर शाम को विदा होने के लिए सोचे थे। उस दिन के लिए चयनित रामगुड़ा डेरा सुरक्षा की दृष्टि से कमजोर है, इसका हमें एहसास था। उस डेरा के दोनों तरफ एल (ए) आकार में नदी बहती है। वह डेरा ही नहीं बल्कि पूरे उस क्षेत्र के गांवों का भी यही हाल है। उस पॉकेट से बाहर आने के लिए नदी को पार करने के सिवा और कोई रास्ता नहीं बचता है। यह एक अनिवार्य परिस्थिति थी। इन सभी विषयों को ध्यान में रखते हुए 23 शाम तक ही कार्य पूरा करके डेरा खाली करने का निर्णय लिए थे। लेकिन हमारे कुछ बल के देर से डेरा पहुंचने के चलते कार्य पूरा नहीं हो पाया था, इसलिए उस समय के लिए वहीं रूककर कार्य पूरा करके 24 शाम तक डेरा खाली करने के लिए सोचे थे। इस वक्त दुश्मन की खबर पर निगाह दौड़ाये, तो पता चला कि हमारे इर्द-गिर्द में पुलिस की गतिविधियां नहीं है। इस खबर से भी उस दिन हमें वहीं रूकने के लिए किये गये फैसले को बल मिला। हमारे द्वारा वहीं रूकने का निर्णय लेने के बाद रात के 7 बजे डेरा से दक्षिण में मौजूद पहाड़ पर दो टार्च लाइट जल कर बुझा, लेकिन हम उसे लाइट के रूप में निर्धारित नहीं कर पाये थे। रात के समय अक्सर तारे भी टार्च जैसे लगने लगते हैं, ऐसा मान लिये थे। उस दिन सुबह रामगुड़ा के पुलिस मुखबिर की मां द्वारा चित्रकोण्डा कस्बा जाने की कोशिश करने पर गांव वालों ने उन्हें रोक दिया था। वह अपने नाती को भेजकर खुद लौट आयी थी। इस बात को जनता द्वारा हमें बताने के बावजूद हम खतरे को भांप नहीं पाये। कुछ दिन पहले एक पत्रकार से भेंट करने के लिए 22 तारीख को दूसरे गांव में समय निर्धारित था, पर वह पत्रकार वहां न जाकर खोजते हुए 23 की रात 10 बजे रामगुड़ा

पहुंचकर भेंट किया था। यह बात कुछ हजम नहीं हुई थी, पर हम इसे गंम्भीरता से नहीं लिए। दरअसल 23 की सुबह से रात के 10 बजे तक यह तीनों घटनाएं खतरे के संकेत थे। इन घटनाओं को जोड़कर देखने से हम अतिरिक्त सतर्कता बरतते, पर ऐसा नहीं हुआ, यह हमारी विफलता है।

एक और विफलता कि 24 की सुबह कुछ बल अलग होने के कारण सुरक्षा इंतजाम ढीले होते गये। संतरी व पेट्रोलिंग का आयोजन सैनिक नियमानुसार नहीं हुआ। हमारी इस विफलता ने दुश्मन की मंशा को और आसान कर दिया, इससे रातों-रात जनता की नजरों से बचकर कमाण्डो बल हमारे क्षेत्र में प्रवेश कर गए।

2) हमले का तरीका- सरकारी बल सुबह 6 बजे हमारे डेरा को घेरकर, एक बैच सीधा हमारे डेरा में घुसा। उस वक्त हम रोलकॉल कर रहे थे। दुश्मन को अचानक डेरे में देखकर हमारे कामरेड्स कुछ सरप्राइज का शिकार बने थे, फिर भी फौरन फायरिंग शुरू कर दिए। डेरा पुलिस से घेरा जाने के चलते वहीं पर ज्यादा समय प्रतिरोध न करते हुए रात को लाइट दिखनेवाले पहाड़ की तरफ रिट्रीट हुए। उसी क्रम में पहाड़ पर से पुलिसवाले फायरिंग किए। इससे हम समझ पाये कि रात को दिखी रोशनी पुलिस की टार्च थी, ऐसा निश्चय कर लिए। उस फायरिंग का मुकाबला करते हुए पहाड़ के नीचे की दिशा में आगे बढ़े। पहले से हमारे डेरा को पुलिस ने घेर रखा था, इसलिए सब तरफ से फायरिंग आ रही थी। इस हालात में दुश्मन के घेरा को भेदकर बाहर निकलने के क्रम में ज्यादा कामरेड्स बहादुरीपूर्वक लड़ते हुए शहीद हुये। इस दरमियान घायल कामरेडों को पकड़कर पुलिस ने क्रूर यातनाएं देकर ठण्डे दिमाग से गोली मार दी। गंम्भीर रूप से घायल अवस्था में चल पाने में असमर्थ एक महिला कामरेड को एक खाई से पकड़ कर 26 अक्टूबर को हत्या किये। घायल अवस्था में बाहर न निकल पाने के चलते 2 कामरेड्स पुलिस के हाथ लगे, तो उन्हें भी गोली मार दी। यह कातिलाना घिनौना हत्याकाण्ड 24 तारीख से शुरू करके 27 तारीख तक लगातार 4 दिन जारी रहा। पूरे 4 दिनों तक हेलिकॉप्टरों के द्वारा पुराने बलों की जगह में नये बलों को तैनात करते गये। आंध्रप्रदेश के डीजीपी सहित कुछ पुलिस अधिकारी घटनास्थल जाकर पूरे कार्रवाई को अन्जाम दिए। इस दरमियान पुलिसवाले रामगुड़ा गांव को भी घेरकर गोलीबारी किये। डर से भागने के लिए छोटी नाव (डोण्गा) से नदी पार करनेवाले जनता पर भी गोलीबारी की। इसमें एक किसान घायल हुआ। इस पूरी घटना में हमारी संख्या 85 थी, इसमें ज्यादातर लोग निहत्थे जन संगठन व मिलिशिया से संबंधित थे। इसमें से 54 कामरेड्स सुरक्षित रूप से निकलने में कामयाब हुए।

2. प्र.) इतनी बड़ी घटना क्यों हुई?

आरके- इसी में सच्चाई छुपी हुई है। पुलिसवाले हमें कानून-व्यवस्था के लिए खतरे के रूप में चित्रित करने का प्रयास करते हैं। कानून-व्यवस्था को बचाने के लिए हमला किए हैं, ऐसा प्रचार कर रहे हैं। यह सरासर झूठ है। कोई भी इस पर भरोसा नहीं करता और न ही कर रहे हैं। दरअसल इस हमले के पीछे शोषक-शासक वर्गों के आर्थिक-राजनीतिक हित जुड़े हुए हैं। इस देश के शासक वर्ग (दलाल नौकरशाह पूंजीपति, सामंती वर्ग) साम्राज्यवादियों के दलाल बनकर काम कर रहे हैं। यह दलाल देश की संपत्ति को लूटने के लिए साम्राज्यवादियों की मदद कर रहे हैं और साथ-साथ अपनी भी झोली भर रहे हैं। मुख्य रूप से वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था के संकट तीव्र होने के बाद उससे बाहर निकलने के लिए इस लूट को और तेज किया है। सुधारों की आड़ में यह नव-औपनिवेशिक लूट देशीय जनता पर बेरोकटोक जारी है। अब देश की खनिज संपदा पर साम्राज्यवादियों की नजर है। इसके तहत आंध्रप्रदेश के विशाखा व ओड़िशा के कोरापुट में मौजूद भारी बॉक्साईट भण्डारों की खदान शुरू कर वहां के आदिवासियों को निर्दयतापूर्वक विस्थापित कर रहे हैं। उनकी इस डाकेजनी की कोशिशों का हमारे पार्टी के नेतृत्व में जनता मुकाबला कर रही है। वहां की जनता ''जल-जंगल-जमीन हमारा है'' नारे के साथ खुद के संसाधनों की रक्षा खुद करने की चेतना से संगठित हो रही है। यह कोशिश सरकार के बलों के गले नहीं उतर रही है। जनता की आर्थिक-राजनीतिक प्रतिरोध को शासक वर्ग बिल्कुल सहन नहीं कर पा रहे हैं, इसलिए फासीवादी दमन का सहारा लिया है। इस फासीवादी दमन को 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे चरण के रूप में अत्यंत क्रूरता से संचालित कर रहा है। इस हमले के द्वारा हमारी पार्टी, पीएलजीए व क्रांतिकारी जनता को बर्बाद करके अपनी लूट के लिए रास्ता आसान करने में लगे हैं। इसी लक्ष्य से रामगुड़ा में कातिलाना हमला हुआ है। इन्हीं कारणों से इसको ''ऑपरेशन ऑल आउट-2'' नाम दिया गया है।

3. प्र.) ठोस रूप से इस इलाके पर दुश्मन के भारी हमले को कैसा समझना चाहिए?

आरके- उनका पहला टार्गेट उच्च स्तर के नेतृत्व का खात्मा था। इस इलाके में हमारे नेतृत्व की गतिविधियों की जानकारी दुश्मन को थी। इन राज्यों के पूरे सीमा क्षेत्र में बॉक्साइट खदानों के खिलाफ जनता का जुझारू संघर्ष जारी है। इस कट ऑफ एरिया (सीलेरू नदी, जो ओड़िशा में बहती है, मलकानगिरी जिले के गुम्मा विकासखण्ड के 9 पंचायतों में से पूरे 7 पंचायतों के इलाके को ओड़िशा राज्य से अलग करती है, इसी क्षेत्र को ''कट ऑफ एरिया'' कहते हैं) में सशस्त्र कृषि क्रांति का कार्यक्रम जोरों पर है। स्थानीय आदिवासी किसान सामंतों के खिलाफ जुझारू संघर्ष करते हुए सैकडों एकड़ जमीन जब्ती के साथ-साथ हथियार उठाकर

राजसत्ता के अंगों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इन कारणों के चलते केन्द्र व राज्य सरकारें उस इलाके पर विशेषकर केन्द्रीकरण किए है।

4. प्र.) इस घटना ने यहां की स्थानीय जनता को किस रूप में प्रभावित की है?

आरके- जनता इतिहास की निर्माता है, लेकिन यह सफर सीधा, सादा व तत्काल संभव नहीं है। कई चिंताजनक अनुभवों के द्वारा ह्रास व वृद्धि के साथ यह सफर दीर्घकालीन होता है। इसी क्रम में जनता कुशल बनते है। फिलहाल कट-ऑफ एरिया की जनता भी क्रांतिकारी युद्ध में कुशल बन रही है। ठोस रूप में इस घटना के बारे में कहना हो तो वे पार्टी, पीएलजीए व जन संगठनों की रक्षा करने के लिए काफी जिम्मेदारीपूर्वक कार्य किए हैं। एनकाउण्टर से पहले पुलिस को केवल एक ही गांव के लोग देख पाये। वे हमें समाचार देने के लिए आ रहे थे, तो उनको पुलिस पकड़कर पिटाई करके लौटा दी। एनकाउण्टर के बाद इस घटना से बच निकले कामरेडों को सभी तरह से जनता साथ दिए हैं। उनकी सहायता के बिना वहां पार्टी का टिकना असंभव है। इस दरमियान उनकी हिस्सेदारी को सहायता कहेंगे, तो बहुत हल्का होगा। वे अपने नेताओं व खुद के बच्चों को खोने के गम में घबराहट में भी है, इसके बावजूद भी हासिल हुई सफलताओं को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं व फिर से वर्ग संघर्ष को धार देने के लिए तैयार हो रही हैं। विशेषकर इस संदर्भ में कहने लायक एक मुख्य बात यह है कि शहरी व मैदानी क्षेत्र की जनता, जनवाद पसंद लोग एवं बुद्धिजीवियों ने उस क्षेत्र की जनता के साथ खड़े होकर उनका मनोबल बढ़ाये हैं।

5. प्र.) अखिल भारतीय स्तर पर इस घटना के खिलाफ में जनता व बुद्धिजीवियों ने किस रूप में अपनी प्रतिक्रिया दिये?

आरके- विगत समय की तरह इस बार भी जनता, जनवाद पसंद लोग एवं बुद्धिजीवियों ने सरकारी दमन के खिलाफ बड़े पैमाने पर भर्त्सना किये। समाज में बड़ रहे जनवादी माहौल के लिए यह गतिविधि एक मील का पत्थर जैसी है। इस बार विशेषता यह है कि देश भर के 12 विश्वविद्यालयों के छात्रों ने घटनास्थल का, वहां की जनता से मिलकर तथ्यशोधक रिपोर्ट जारी कर सच्चाई को उजागर ही नहीं किया बल्कि वहां की स्थानीय जनता की मदद में खड़े हो गये और नागरिक अधिकार संगठनों ने अलग-अलग कई बार घटनास्थल का दौरा कर व जनता से भेंट कर सच्चाई का पर्दाफाश करते हुए जनता की मदद में खड़े हुए।

6. प्र.) इस घटना ने आपकी कतारों को कैसे प्रभावित की?

आरके- विगत में ऐसी बड़ी घटना होने पर कुछ लोग हिम्मत हार कर आंदोलन छोड़ देते थे। इस बार एक भी साथी आंदोलन नहीं छोड़े हैं। इस कारण हम समझते हैं कि पार्टी मजबूत हुई है। इस बीच में हम, पार्टी, सेना व संयुक्त मोर्चा में बोल्शेवीकरण के अभियान का संचालन किये हैं। इस अभियान के चलते पार्टी कतार में सैद्धांतिक, राजनीतिक व सैनिक तौर पर सुधार हुआ है, इसलिए यह घटना पार्टी कतारों पर खास नकारात्मक असर नहीं डालेगी।

7. प्र.) कुछ बुद्धिजीवियों ने पीएलजीए मतलब पिद्दी पहलवानों की सेना कहकर, आपकी पार्टी को जनता की मदद नहीं है, ऐसा कई किस्म की व्याख्या की है, इस पर आपका क्या कहना है?

आरके- क्रांतिकारी आंदोलन के नेतृत्व को केन्द्रित कर दुष्प्रचार करने के लिए साम्राज्यवादियों की ओर से उन्हें आदेश मिला हुआ है। उन्हें ''बलिदान के बिना इतिहास का विकास नहीं होगा'' की बात समझ में नहीं आती, समझते भी नहीं। सही है कि हम पहाड़ों से टकराते हैं, पर्वतों को खोदते हैं एवं नदी प्रवाह के खिलाफ हम तैरते हैं। ऐसी दृढ़ संकल्प व व्यवहार के बिना जुमलेबाजी बातों से इस खूंखार लूटेरी व्यवस्था को नहीं बदल सकते। वे जान-बूझकर हम पर हमला करना चाहते हैं, इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन के द्वारा समाज में आये बदलावों को व क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति जनता में बढ़ रही मदद को भी देखने से मना करते हैं। 'अपराजयवाली जनसेना उन्हें पिद्दी पहलवानों की सेना' जैसे दिखती है। यह केवल उनकी मंशा ही है। वे अपने राजनीतिक प्रतिबद्धता को खो चुके हैं। वे पेशेवर अवसरवादी हैं। अपने स्वार्थ व संकीर्ण हित के लिए कुतर्कों के सहारे अपनी बुद्धि को लूटेरे शासक वर्गों के पक्ष में इस्तेमाल करते हैं, इसके बदौलत शासकों से ऐशो-आराम की सुविधाएं पाते है। देश में एक तरफ साम्राज्यवाद परस्त भूमंडलीकरण की आर्थिक नीतियों के चलते बुद्धिजीवियों में भी एक तबका अपने निजी स्वार्थ के लिए उनके सामने बिक गया है।

8. प्र.) सरकार और पुलिस का दावा है कि एओबी आंदोलन के लए यह बहुत बड़ा झटका है, इस पर आप क्या कहेंगे?

आरके- ऐसी दुष्प्रचार करना तो पुलिस की कला ही है। एलआईसी के तहत वे ऐसा दुष्प्रचार करते हुए जनता के मनोबल को गिराने की कोशिश करते रहते हैं। दरअसल यह हमारे लिए भारी नुकसान होने के बावजूद शहीदों की जगह भरने के लिए हमारे कामरेड्स अपने कार्य में दुगुनी तकलीफ उठाने के लिए तैयार हो रहे हैं। हमारे लिए मौजूद सघन क्रांतिकारी जनता में से नयी शक्तियां उभरकर आ रही हैं। यह नुकसान हमारे दीर्घकालीन सफर में व लक्ष्य हासिल करने में छोटी बाधा साबित होगी।

9. प्र.) पुलिस अधिकारियों के मुताबिक गुरिल्ला बलों

की तुलना में सरकारी बलों की संख्या प्रशिक्षण व हथियार बहुत उन्नत किस्म का है, इस में सच्चाई कितनी है?

आरके- उनके तर्क में दम नहीं है। संख्या बल, हथियार व प्रशिक्षण, युद्ध में अंतिम जीत नहीं दिला सकती है। किसी भी युद्ध में जनता की सक्रिय भूमिका निर्णायक होती है, इतिहास ने वियतनाम व कोरिया से शुरूकर आज के मध्य पूर्व के देशों तक इसी बात को साबित की है व कर भी रही है। विभिन्न देशों की जनता साम्राज्यवाद को कागजी बाघ करार दे चुकी है। पर, यह भी बात सत्य है कि जनता के द्वारा हासिल की गयी अंतिम सफलताएं कई दिक्कतों, कई तकलीफों एवं कई चिंताजनक अनुभवों की लंबी प्रक्रिया पार करने के बाद प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में दोनों (दुश्मन व जनता) के शक्ति संतुलन में भी बदलाव आता है। दुश्मन के पास मौजूद आज की ताकत व स्थिति हमेशा के लिए ऐसी ही नहीं होती है, एक प्रक्रिया में हथियारबंद जन शक्तियां सभी मामलों में उच्च स्तर पाकर हालात को उलट देती है।

10. प्र.) इस घटना ने किन-किन कमियों को चिन्हित किया है? कौन सा सबक ले रहे हैं?

आरके- बलिदान के बिना युद्ध संभव नहीं है, लेकिन गैर जरूरी बलिदान नहीं देने की हमारी नीति है। रामगुड़ा की घटना में हमारी तरफ से कमियां जरूर हुई है। उसमें हम दुश्मन का आकलन कम लगाये थे। गुरिल्ला नियमों का पालन करने में आलसीपन भी रहा है। हमारी यह कमियां ही दुश्मन के लिए तात्कालिक सफलताओं में बदल गयी है। हमें भारी नुकसान हुआ है। हम वो कमियां न किए होते, तो हमारा नुकसान कम किया जा सकता था। युद्ध के हालातों में दिन-ब-दिन बदलाव आ रहा है। भारत के शासक वर्ग अपनी लूट जारी रखने के लिए हमें खत्म करना अनिवार्य मानकर समग्र योजना के साथ हम पर हमले केन्द्रित किये हैं। ऐसे हालातों में हम जनता के साथ और घनिष्ठ संबंध रखेंगे। इस युद्ध में यही हमारी असली ताकत है। वैसे ही सर्वहारा वर्गीय अनुशासन का स्वैच्छिक रूप से अमल करते हुए आज के कठिन दौर के बावजूद कितनी भी मुश्किलों का मुकाबला करते हुए गुरिल्ला नियमों का सख्ती से पालन करेंगे। यही नीति हमें जीत की तरफ ले जाती है। विगत में ऐसे कठिन दौर से पार पाने का अनुभव हमारी पार्टी के पास है।

11. प्र.) यह घटना आंध्रा रिवाइवल (पुनःउभार) पर क्या असर डालता है?

आरके- तेलंगाना व आंध्रप्रदेश राज्य ज्वालामुखी जैसा है। इन दोनों राज्यों की जनता के गुस्से का लावा उबल रहा है। वहां की जनता का दीर्घकालीन वर्ग संघर्ष का इतिहास है। बलिदानों का इतिहास है। वे क्रांति के ज्वार-भाटों को देख चुकी हैं। ऐसी घटनाएं होने पर बिल्कुल निरूत्साहित नहीं होती है। ऐसी घटनाओं का भी सहारा लेकर शासक वर्गों के खिलाफ राजनीतिक संघर्ष छेड़ती हैं। अभी वे रामगुड़ा घटना में शासक वर्ग व उनके भाड़े की कातिल पुलिस द्वारा क्रांतिकारियों पर व जनता पर लागू की गई बर्बरता और अमानवीयता का भण्डाफोड़ करते हुये एवं आलोचना करते हुए विभिन्न रूपों में राजनीतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। हां, रिवाइवल के संदर्भ में हमें एक बात को ध्यान में रखना होगा कि इन दोनों राज्यों में क्रांति का प्रवाह नहीं रूका है। क्रांति का प्रवाह एक और जन सैलाब को अपने तरीके से एवं नई पद्धतियों में जन्म देगी। वह ज्वालामुखी फूटने पर लावे के फव्वारे जैसा होगा।

★

पृष्ठ संख्या 62 का शेष

दिया। इस कार्रवाई से जनता में खुशी की लहर दौड़ पड़ी और प्रतिक्रियावादियों के अंदर खौफ कायम हुआ।

2. दिनांक 27 मई, 2017 को बोकारो जिला के गोमिया थाना अन्तर्गत चुट्टे गांव के शिवलाल महतो जो एक दबंग किस्म का व्यक्ति है। जो पहले भी गुप्त रूप से पार्टी के खिलाफ काम करता था। एक बार जन अदालत लगाकर सुध रने के लिए मौका दिया गया था। 2016 में दण्डरा नाला में जो मुठभेड़ हुआ था, जिसमें हमारा एक साथी कामरेड देवलाल बेसरा शहीद हो गये थे, उस समय जो पुलिस आयी थी वह शिवलाल के दो सवारी गाड़ी से ही आयी थी। इसलिए इनके दोनों सवारी गाड़ी को पीएलजीए के साथियों ने जनता से राय लेकर आग के हवाले कर दिया और आइन्दा ऐसा गलती नहीं करेंगे, का जनता के बीच बॉण्ड करवाकर सुधरने का एक और मौका देकर शिवलाल महतो को छोड़ दिया गया।

★

कानूनी किताबें उनकी.....
जज और जेलर उनके.....

दिनांक 15 और 18 नवम्बर, 2016 को जिला न्यायालय जहानाबाद द्वारा करपी थाना कांड संख्या- 22/99 (सेनारी गांव की घटना) में 11 किसानों को फांसी की सजा और तीन लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी है।

सेनारी घटना

ज्ञात हो कि 18 मार्च, 1999 को सेनारी घटना में भूमिहार जाति, जो उच्च जाति और उच्च वर्ग के लोग थे, के 34 लोग मारे गये थे। यह घटना जहानाबाद जिला में चल रहे तब के जनसंहारों का सिलसिला, जिसमें दलित एवं पिछड़े समुदाय के गरीब, शोषित व उत्पीड़ित लोग मारे जा रहे थे, उसके जवाब में पल्टा जन कार्रवाई थी। सनद हो कि सेनारी घटना में मारे गए लोग बिहार के सबसे क्रूर जातीय सेना रणवीर सेना से जुड़े थे। मारे गये लोगों में कई उनके सिपाही, समर्थक, संरक्षक एवं सरगना थे। स्मरण यह भी हो कि कांग्रेसी राज्य में कुख्यात जहानाबाद लॉबी, जिसमें प्रमुख थे- रामाश्रय प्रसाद सिंह, रामजतन शर्मा, जगदीश शर्मा और किंग महेन्द्र, जो भूमिहार जाति से आते थे, ये लोग रणवीर सेना के संस्थापकों एवं सरगनाओं के बड़े मददगार व संरक्षक रहे हैं, जिनकी भूमिका के बारे में अमीरदास आयोग में जांच होनी थी। बिहार में जब कांग्रेस अंतिम सांस लेने लगी, तब से लोग कांग्रेस छोड़कर जद-यू के नेता व मंत्री बन गए।

बिहार में शोषितों एवं उत्पीड़ितों का जनसंहार करने का सिलसिला औपचारिक आजादी के बाद 1970 के पूर्वार्द्ध से शुरू हुई। पूर्णिया जिले के धमदाहा ब्लॉक के रूपसपुर-चंदवा में कांग्रेसी नेता व विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण सुधांशु और उनके परिवार के लोग तथा उनके पालतू गुण्डों के नेतृत्व में हुए जनसंहार में दर्जनों आदिवासी मारे गए थे। मामला आदिवासियों के जमीन पर जबरन कब्जा का था। इसे बिहार का पहला संगठित और सुनियोजित जनसंहार माना जाता है। नक्सलबाड़ी धारा से जुड़े संगठनों के नेतृत्व में जमीन के लिए, न्यूनतम मजदूरी के लिए, सामाजिक बराबरी, स्त्रियों की इज्जत रक्षा तथा सर्वहारा राज निर्माण के लिए उठ खड़ा होने वाले गांवों व टोलों के गरीबों, दलितों, आदिवासियों, मुसलमानों व पिछड़ों के स्त्री, पुरूष, बच्चे एवं बुढ़ों को मध्य बिहार के 23 हत्याकांडों में 256 लोगों के हत्या करने का रिकॉर्ड अकेले रणवीर सेना के माथे पर है।

जहानाबाद जिला में ही डोहिया-पारसबिगहा, नोन्ही-लगवां, दमुहा-खगड़ी, सावन विगहा, नारायणपुर, शंकर विगहा एवं लक्ष्मणपुर बाथे जैसे दर्जनों नरसंहारों का जो सिलसिला चल रहा था, उसको रोकने के लिए क्रांतिकारी जनता द्वारा 'आक्रमण ही आत्मरक्षा का एकमात्र उपाय है' के नीति के तहत सेनारी गांव पर हमला है, बताया जाता है। जहां उपर्युक्त सारी घटनाएं विभिन्न जातीय व निजी सेनाओं द्वारा शोषित-उत्पीड़ित जनता के उपर चलाया गया था, वहीं सेनारी घटना शोषित-उत्पीड़ित जनता द्वारा शोषकों व उत्पीड़कों के गांव एवं गढ़ पर हमला था।

फांसी की सजा का सच

दिल्ली राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 'सेंटर फॉर डेथ पेनाल्टी' की मई, 2016 की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि (1) मौत की सजा का इंतजार कर रहे लोगों में से 76 प्रतिशत लोग आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग और धार्मिक अल्पसंख्यक हैं (2) देश में जिन 12 महिलाओं को मौत की सजा सुनायी गयी है, उनमें सब के सब सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग से आती हैं (3) करीब तीन चौथाई ऐसे लोग हैं जो आर्थिक रूप से एकदम कमजोर हैं और उनमें ज्यादातर तो अपने परिवार के प्रमुख या एकमात्र सदस्य हैं, जो अपने घर की आजीविका चलाते हैं। (4) जिन लोगों को मौत की सजा सुनायी गयी है, उनमें 23 प्रतिशत लोग तो कभी स्कूल गये ही नहीं और 61.6 प्रतिशत ने उच्चतर-माध्यमिक तक की शिक्षा भी पूरी नहीं की है। शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्त्ति मदन बी. लोकुर ने कहा है कि अगर आरोपित अशिक्षित है, तो उसके बचाव पर इसका प्रभाव पड़ता है।

सेनारी घटना में मौत की सजा प्राप्त लोगों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि भी वही है, जो 'सेन्टर फॉर डेथ पेनाल्टी' की रिपोर्ट में बताया गया है, अगले पृष्ठ (पृष्ठ संख्या 46) पर दिये गये टेबुल से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। याद हो कि बारा घटना में 2001 में मौत की सजा सुनाये जाने के बाद बिहार के चर्चित पत्रकार व समाजशास्त्री प्रभात कुमार शाण्डिल्य ने हिन्दुस्तान अखबार में फांसी के विरूद्ध लिखित अपने लेख में लिखा था कि पिछड़ों, दलितों, आदिवासियों एवं अल्पसंख्यकों को फांसी पर लटकाये जाने में शत-प्रतिशत आरक्षण है। उन्होंने अपने उसी लेख में बताया था कि उंची जाति के मात्र दो लोग नाथुराम गोडसे और धनजंय चटर्जी को ही अबतक फांसी हुई है।

विदित हो कि बिहार में रूपसपुर-चंदवा से मियांपुर (औरंगाबाद) तक में सैकड़ों जनसंहार हुए हैं। इनमें अधिकांश जनसंहारों का कर्त्ता-धर्त्ता उंची जाति व व उंचे वर्ग के लोग थे। मरने वालों में थे आदिवासी, दलित, पिछड़े व शोषित-उत्पीड़ित गरीब लोग। पर बिडंबना यह है कि इन घटनाओं में एक भी व्यक्ति को फांसी की सजा नहीं दी गई। किंतु जब शोषित-

सेनारी घटना में फांसी की सजा प्राप्त लोगों का परिचयः

क्र.सं.	नाम	पिता	ग्राम	थाना	जिला	जाति	वर्ग	शिक्षा	उम्र
1.	दुखन राम	श्री मुन्नी राम	कुतुबपुर	कुर्था	अरवल	कहार	भूमिहीन	अनपढ़	66 वर्ष
2.	ललन पासी	स्व. नन्हक पासी	पोन्दिल	कुर्था	अरवल	पासी	भूमिहीन	अनपढ़	65 वर्ष
3.	बुटाई यादव	स्व. जगलाल यादव	धर्मोल टोला महादेव विगहा	कुर्था	अरवल	यादव	गरीब किसान 1एकड़ जमीन	सातवां पास	66 वर्ष
4.	बुधन यादव	स्व. त्रिवेनी यादव	सेनारी	वंशी	अरवल	यादव	भूमिहीन	नन मैट्रिक	80 वर्ष
5.	गोपाल साव	स्व. सूरज साव	सेनारी	वंशी	अरवल	सुंड़ी	भूमिहीन	7वां पास	60 वर्ष
6.	बच्चेश कुमार सिंह	श्री बैजु सिंह	कुरमावां	वंशी	अरवल	यादव	मध्यम किसान 4.20 ए. जमीन	बीएससी	60 वर्ष
7.	सत्येंद्र दास	स्व. भजु दास	कुरमावां	वंशी	अरवल	चमार	भूमिहीन	अनपढ़	72 वर्ष
8.	गोराई पासवान	स्व. श्याम पासवान	कुरमावां	वंशी	अरवल	दुसाध	भूमिहीन	अपनढ़	80 वर्ष
9.	द्वारिका पासवान	स्व. श्याम पासवान	कुरमावां	वंशी	अरवल	दुसाध	भूमिहीन	5वां पास	75 वर्ष
10.	करीमन पासवान	स्व. बालदेव पासवान	कुरमावां	वंशी	अरवल	दुसाध	भूमिहीन	अनपढ़	75 वर्ष
11.	उमा पासवान	स्व. बालदेव पासवान	कुरमावां	वंशी	अरवल	दुसाध	भूमिहीन	अनपढ़	65 वर्ष

उत्पीड़ित जनता व उसके रहनुमा संगठन द्वारा सामंतों और उसके निजी सेनाओं द्वारा रचाये जा रहे जनसंहारों के खिलाफ आत्मरक्षार्थ पल्टा जवाबी जन कार्रवाई की गई, तब उन सभी घटनाओं में मौत की सजा सुनाई गई है। ज्ञात हो कि बिहार में अबतक मात्र तीन पल्टा जवाबी जन कार्रवाई हुई है- पहला, दलेलचक बघौरा (19 मई, 1987) जो छेछानी-रामडीहा-छालीदोहर जनसंहार का प्रतिशोधात्मक कार्रवाई थी। इस केस में आठ किसानों को फांसी की सजा सुनायी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने फांसी की सजा को उम्र कैद में बदल दिया था। इन आठ किसानों में कई जेल में ही मर गये। बाकी बचे लोग 20-25 साल बाद जेल से रिहा हुए। दूसरा, बारा घटना (12 फरवरी, 1992) जो मेन-बरसिम्हा जनसंहार (अक्टूबर, 1991), जिसमें 10 लोग मारे गये थे, के खिलाफ प्रतिरोधात्मक कार्रवाई थी और यह तीसरा, सेनारी घटना है जिसमें 11 बेकसूर लोगों को मौत की सजा सुनायी गयी है। इन अभागे किसानों का एकमात्र कसूर यही था कि वे लोग सेनारी गांव के सामंतों व बड़े भूस्वामियों के यहां चरवाही, हरवाही, बनिहारी एवं बटाईदारी करते थे।

स्मरण हो कि परसडीह (रफीगंज), मेन-बरसिम्हा (टेकारी), बथानीटोला (भोजपुर), लक्ष्मणपुर-बाथे, शंकर विगहा, नारायणपुर एवं मियांपुर के जनसंहारियों को न्यायालय द्वारा 'बाइज्जत' रिहा कर दिया गया। यह उक्त जनसंहारों में मारे गये लोगों और उनके परिवारों के साथ अदालत का सबसे बड़ा अत्याचार है।

बारा घटना

बारा घटना में टाडा न्यायालय गया द्वारा 2001 में कृष्णा मोची, नन्हेलाल मोची, वीर कुंवर पासवान और धर्मेन्द्र सिंह को फांसी की सजा सुनायी थी, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने 2002 में बरकरार रखा। भुक्तभोगी लोगों की ओर से 2003 में दया याचिका दायर की गई थी, जो सरकार के लाल फिताशाही के कारण 10 सालों तक न जाने कहां दबा पड़ा रहा। बहुत बाद में यह राष्ट्रपति के पास पहुँचा। इसमें हैरत की बात यह है कि बिहार की नीतीश (गठबंधन की) सरकार और केन्द्र की भाजपा सरकार के गृह मंत्रालयों ने इन चारों निर्दोष किसानों को फांसी की सजा दिये जाने की अनुशंसा की थी। पर चुंकि दया याचिका को राष्ट्रपति तक पहुँचने में नौकरशाही द्वारा अप्रत्याशित देर किए जाने के कारण तथा देश भर के मानवाधिकार संगठनों द्वारा जताये गए प्रतिवाद एवं डाले गए जवाब के कारण राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा फांसी की सजा को इसी वर्ष (2017) उम्र कैद में बदल दिया गया। पर यह बदलाव भी इन हतभाग्य किसानों (महादलितों) के साथ इंसाफ नहीं है। क्योंकि ये गांधी जी के 'अंतिम जन' पिछले 24 सालों से जेल में मौत के साये में जी रहे हैं और राष्ट्रपति के दया के बावजूद भी ये 'हरि के जन' अपने अंतिम सास तक कारागार में कैद रहेंगे। इसी केस में टाडा न्यायालय, गया द्वारा व्यास कहार और बुगल मोची को फांसी की सजा सुनायी थी, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने 2013 में उम्र कैद में बदल दिया था। परन्तु कोर्ट ने उम्र कैद की व्याख्या 14-20 वर्ष नहीं बल्कि बाकी की सारी जिंदगी जेल में ही सड़ते हुए गुजारनी होगी, किया है। मौत के बाद ही ये लोग शायद जेल से बाहर आ पायें। साफ है बिहार की काराएं अब कब्रिस्तान में तब्दील हो गयी है।

बारा घटना का कथित प्राथमिकी दर्ज कराने वाला सत्येन्द्र शर्मा रणवीर सेना का कमाण्डर था। वह कई जनसंहारों का वांटेड फरार अपराधी था। उसने उपरोक्त दोनों ट्रायल के

बारा घटना में फांसी की सजा प्राप्त लोगों का परिचयः

क्र.सं.	नाम	पिता	ग्राम	थाना	जिला	जाति	वर्ग	शिक्षा	उम्र
1.	कृष्णा मोची	स्व. बुकुचेतु रविदास	बारा भटविगहा	अलीपुर (टिकारी)	गया	चमार	भूमिहीन	अनपढ़	65 वर्ष
2.	नन्हे लाल मोची	स्व. महादेव मोची	,,	,,	,,	,,	,,	,,	75 वर्ष
3.	वीरकुंअर पासवान		खुंटवर	,,	,,	पासवान	,,	,,	70 वर्ष
4.	धर्मेन्द्र सिंह उर्फ धारू सिंह	स्व. विदेशी सिंह	डिहुरा	,,	,,	राजपूत	मध्यम किसान	मैट्रिक पास	52 वर्ष
5.	बुगल मोची	स्व. महादेव रविदास	बारा भटविगहा	,,	,,	चमार	भूमिहीन	अनपढ़	57 वर्ष
6.	व्यास कहार	अक्षयवट राम	नेनी	,,	,,	कहार	,,	,,	60 वर्ष

समय न्यायालय में अपने ब्यान में कहा कि मैंने कोई प्राथमिकी दर्ज नहीं करवायी है और न ही मैंने किसी का नाम पुलिस के समक्ष बताया है। तब यह शीशे की तरह एकदम साफ है कि पुलिस ने जो एफआईआर दर्ज की है, वह फर्जी एवं मनगढ़ंत है। दूसरी बात यह है कि कथित प्राथमिकी दर्ज कराने वाले व्यक्ति (सत्येन्द्र शर्मा) का कोर्ट में बयान लिये बिना 6 लोगों को फांसी की सजा सुना दी गयी। इसलिए स्पष्ट है कि बारा घटना में सजा, न्यायालय का न्याय नहीं अन्याय है। उधर सत्येन्द्र शर्मा जेल से रिहा हो चुका है।

दलेलचक बघौरा घटना

17-18 अप्रैल, 1987 की रात्रि 11 बजे से 1 बजे के बीच ग्राम छेछानी-रामडीहा पर सामंतों के निजी सेना- सनलाइट सेना और सत्येन्द्र सेना (पूर्व मुख्यमंत्री बिहार के नाम पर), जो राजपूत जाति के जमीन्दारों की सेना है, के द्वारा हमला किया गया। इस घटना में एक माह का बच्चा समेत कुल 19 स्त्री-पुरूष मारे गये थे। इस जनसंहार से आक्रोशित क्रांतिकारी जनता ने 19 मई, 1987

दलेलचक बघौरा घटना में फांसी की सजा प्राप्त लोगों का परिचयः

क्र. सं.	नाम	पिता	ग्राम	थाना	जिला	जाति	वर्ग	उम्र	शिक्षा
1.	दीपु यादव	स्व. जटू यादव	बघौरा	मदनपुर	औरंगाबाद	यादव	गरीब किसान	35 वर्ष	साक्षर
2.	बाबूराम यादव	,,	,,	,,	,,	,,	,,	40 वर्ष	,,
3.	जगनारायण यादव	,,	,,	,,	,,	,,	,,	45 वर्ष	,,
4.	रामप्रवेश यादव	स्व. नारायण यादव	,,	,,	,,	,,	धनी किसान	70 वर्ष	मैट्रिक पास
5.	केश्वर यादव	,,	,,	,,	,,	,,	,,	65 वर्ष	सातवां पास
6.	ब्रह्मदेव यादव	स्व. मोहरी यादव	,,	,,	,,	,,	गरीब किसान	50 वर्ष	स्नातक
7.	राजाराम यादव	स्व. चितामन यादव	,,	,,	,,	,,	,,	45 वर्ष	साक्षर
8.	चितावन यादव	स्व. विलास यादव	,,	,,	,,	,,	,,	75 वर्ष	अनपढ़

को दलेलचक-बघौरा गांव पर हमला बोला, जिसमें 52 लोग मारे गये थे। इस घटना के पीछे जमीन का विवाद था और था जंगल के महुआ के पेड़ का, जिस पर आजन गांव के बड़े भूपतियों (राजपूत जाति के) का कब्जा था। महुआ फूल और फल को लेकर भूमिहीन किसानों ने क्रांतिकारी किसान कमेटी के नेतृत्व में 'जंगल हमारा है, फूल-फल-पत्ती अमानत हमारा है' के नारे पर जंगल के सारे महुआ पेड़ पर कब्जा कर लिया। 'कब्जा करो' संघर्ष के दौरान सत्येन्द्र सेना से झड़प हुई, जिसमें आजन गांव का सरगना केदार सिंह मारा गया। छेछानी-रामडीहा पर हमला का एक कारण केदार सिंह का मारा जाना भी था क्योंकि उस वक्त क्रांतिकारी किसान आन्दोलन का एक केन्द्र के रूप में छेछानी चर्चित हो चुका था। दलेलचक-बघौरा में आठ किसानों को फांसी की सजा हुई, जबकि छेछनी-रामडीहा हत्याकांड में कुछ लोगों को आजीवन कारावास।

रंग-बिरंग की सरकार उनकी

बिहार में जनसंहारों की शुरूआत कांग्रेसी राज में कांग्रेसियों द्वारा शुरू की गई थी, जो लालू प्रसाद यादव के राज तक बदस्तूर जारी रहा। बिहार में सबसे ज्यादा विभत्स व क्रूर जनसंहारों के लिए रणवीर सेना को जिम्मेवार ठहराया जाता है, जिसका तार कई राजनेताओं, नौकरशाहों, न्यायाधीशों एवं कई खुफिया एजेंसियों से जुड़े थे। इनके संबंधों की जांच के लिए अमीरदास आयोग का गठन किया गया था, जिसको नीतीश कुमार (मुख्यमंत्री) ने भंग करवाकर उन तमाम लोगों को बचाने का काम किया जो रणवीर सेना के पीछे खड़े थे। लालू व नीतीश कुमार सरकार की पुलिस ने दलितों एवं शोषितों द्वारा दायर किए गए मुकदमों को कमजोर कर जनसंहारियों को बचाने का काम किया है। इसके उलट जहां उच्च जाति व वर्ग के लोग मारे गए थे, उन सभी घटनाओं के केसों में झूठे साक्ष्य जुटाकर तथा नकली गवाहों को प्रोत्साहित व प्रोटेक्शन देकर केस को मजबूती प्रदान किया और कोर्ट में उपस्थापना करवाकर व गवाह दिलवाकर शोषित-उत्पीड़ित जनता को सजा दिलवाने का काम किया। 250 नरमुंडों का माला पहनने वाले रणवीर सेना के सुप्रीमो बरमेश्वर मुखिया के मारे जाने पर नीतीश कुमार के तत्कालीन मंत्री व भाजपा नेता गिरिराज सिंह ने उसे 'महात्मा' की संज्ञा दी और शहीद कहकर महिमामंडित किया। सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि नीतीश सरकार के पुलिस प्रमुख (डीजीपी) अभयानंद, जो भूमिहार जाति से आते हैं, उस जनसंहारी को राजकीय सुरक्षा एवं सम्मान प्रदान कर यह साफ कर दिया था कि नीतीश सरकार सामंतों, पूंजीपतियों, गुण्डों, मवालियों, बाहुबलियों, अपराधियों, निजी सेना के सरगनाओं व जनसंहारियों की संरक्षक है। लालू प्रसाद ने भी अपने शासन काल में रणवीर सेना के सुप्रीमो की रक्षा की थी। ज्ञात हो कि बरमेश्वर सिंह के माथे पर जब खतरा मंडराने लगा, तब लालू प्रसाद ने उसे सरेण्डर का नाटक करवाकर सुरक्षा प्रदान की थी, जिसे नीतीश कुमार ने बाद में जेल से 'बाइज्जत रिहा' करवा दिया था।

यह बिल्कुल स्पष्ट हो चुका है कि बिहार में जनसंहारों और जनसंहारियों को बचाने के लिए मुख्य रूप से कांग्रेस, राजद, जद(यू) एवं भाजपा का नेताशाही जिम्मेवार है और जिम्मेवार है कथित पिछड़ों, दलितों एवं अकलियतों की सामाजिक न्याय का ढिंढोरा पीटने वाली सरकारें और उसकी नौकरशाही व न्यायतंत्र। वहीं गरीबों, दलितों, पिछड़ों व शोषित-उत्पीड़ित जनगणों को फांसी पर लटकवाने में भी इन्हीं वर्गों, दलों और कथित लोकतंत्र के चारों स्तम्भों की प्रधान भूमिका है। ऊपर के इन वृतांत से यह साफ हो चुका है कि सरकारें सामंतों व पूंजीपतियों के प्रबंधक का काम करती है। शोषकों और लूटेरों के नौकरों से सदाचारी होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

जज और जल्लाद तक उनके

वर्ग विभाजित समाज में कोई भी व्यक्ति, संस्था एवं संगठन वर्ग निरपेक्ष न हो सकता है और न रह सकता है। सभी अपने-अपने वर्ग की सेवा करते हैं। कुछ लोग न्यायपालिका को निष्पक्ष एवं तटस्थ मानते हैं, जबकि यह एक भ्रम है या उनका भोलापन नहीं तो फिर षड़यंत्र। भारत में आईपीसी और सीआरपीसी का निर्माण अंग्रेजों ने अपनी राज एवं साम्राज्यवादी सत्ता को बचाने और टिकाये रखने के लिए किया था। यहां का न्यायालय भी उन्हीं का बनाया हुआ है। कथित आजादी के बाद भी पूरी की पूरी आईपीसी एवं सीआरपीसी आज भी मौजूद है। न्यायाधीश के पद पर भी बस गोरे अंग्रेजों के जगह काले अंग्रेज बैठे हैं। अंग्रेजों के जाने के बाद सत्ता हस्तांतरित होकर भारत के सामंतों और दलाल पूंजीपतियों के हाथों में आयी। सो भारतीय राजसत्ता का सभी अंग इन्हीं शोषक-शासक वर्ग की सेवा एवं संरक्षण में मुस्तैद है।

आज निचली अदालत से लेकर उपरी अदालत तक में न्याय की कुर्सी पर अधिकांशतः उंची जाति व उंचे वर्ग के लोग विराजमान हैं। वंशवाद वहां भी खुब फल-फूल रहा है और भ्रष्टाचार भी। निचली अदालत से लेकर उपरी अदालत तक में 'सेटिंग बेल' का धंधा बदस्तूर जारी है। पैसे वालों को बड़े ही आसानी से जमानत और रिहाई मिल जा रही है। गरीब जेलों में सड़ रहे हैं। इनके लिए जेल धरती का नरक है। जन संघर्ष, जन आंदोलन व जन प्रतिरोध के प्रति न्यायालय का रूख प्रगतिशील नहीं है, जिसे हम कामरेड किस्टा गौड़ और भूमैया के फांसी से लेकर दलेलचक-बघोरा, बारा एवं सेनारी घटना में घटित होते हुए देख रहे हैं। ब्रिटिश न्यायपालिका के पाखण्ड को उजागर करते हुए जार्ज बर्नाड शॉ कहते हैं- कानून हम सभी लोगों के लिए बराबर है, परंतु कानून के सामने हम सभी लोग बराबर नहीं हैं। (The law is equal for

all of us but we are not all equal before the law) भारतीय न्याय विभाग ब्रिटिश न्यायपालिका का ही कार्बन कॉपी है, इसलिए यहां भी वही हाल है। फ्रांसीसी क्रांति के नेता रूसो ने कानून को जनता के विरूद्ध दूसरा फरेब बताया है। उनके अनुसार पहला फरेब निजी संपत्ति का उदय है। भारतीय कानून सचमुच में फरेब है। इसका जीता-जागता उदाहरण उपरोक्त घटनाओं में फांसी की सजा और बथानीटोला, मियांपुर, लक्ष्मणपुर-बाथे, शंकर विगहा एवं नारायणपुर के जनसंहारियों की रिहाई है।

कामरेड लेनिन कहते हैं- पुलिस, मिलिट्री, कानून, न्यायालय और जेलखाना राजसत्ता का असली दांत है और यही राजसत्ता का मुख्य दमन यंत्र भी है। ये दमन यंत्र शोषित-उत्पीड़ित जनता के किसी भी तरह के प्रतिवाद एवं प्रतिरोध को कुचलने में आगे रहते हैं, जिसे आज हम भारत में चहुंओर देख सकते हैं, कश्मीर से पूर्वोत्तर एवं मध्य भारत तक में। इसलिए राजसत्ता के किसी भी अंग से विशेष राहत और रियायत की हमें उम्मीद नहीं करनी चाहिए। अगर कभी राहत व रियायत होता हुआ दिखता है, तब वह उसका अपना अंतरविरोध है। कभी-कभी जनता के बीच भ्रम पैदा करने के लिए या अपनी व्यवस्था में जनता का विश्वास जगाए रखने के लिए न्यायपालिका उदार व राहत-रिलीफ देते हुए दिखता है, जो उसका चरित्र नहीं ढकोसला है। वस्तुतः शोषित और श्रमिक जनता के लिए ये दमन यंत्र ही है।

ब्रेख्त अपनी एक कविता में रेखांकित करते हैं-

कानूनी किताबें उनकी

जज और जेलर उनके।

लाल चिनगारी संपादकमण्डल के नाम एक पाठक का खत व जवाब

प्रिय लाल चिनगारी संपादकमण्डल,

लाल सलाम!

अपने मुखपत्र के हरेक अंकों में देश-विदेश सहित एक-एक क्षेत्र के ताजा हालात अथवा आए दिन आर्थिक-राजनीतिक-सामरिक और सामाजिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में हो रहे उथल-पुथल या हलचल के चित्र का चित्रण करते आए हैं और आगे भी करते रहेंगे ताकि लोग देश-दुनिया की परिस्थिति से वाकिफ हों और अपने क्रांतिकारी कार्यभार को सौ गुना उत्साह के साथ कर सकें। सिर्फ और सिर्फ ये ही नहीं वरन हमारे पार्टी के अन्दर राजनीतिक-सांगठनिक और व्यवहारिक पहलुओं पर विभिन्न समय में जो भी कमी कमजोरियां परिलक्षित हुई हैं, उसे रेखांकित करते हुए उससे छुटकारा पाने के लिए हमारे सर्वोच्च कमेटी द्वारा सरकूलर दिया जाता रहा है, अर्थात सिद्धांत को व्यवहार के साथ समन्वय करते हुए राजनीतिक कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के प्रक्रिया-पद्धति व दिशा-निर्देशन पेश किया जाता रहा है, ताकि क्रांतिकारियों को कर्त्तव्य कर गुजरने में कोई झिझक महसूस न हो। अधीनस्थ पार्टी कतारों, जन मुक्ति छापामार सेना के सभी स्तरों, क्रांतिकारी जन संगठनों सहित और-और क्रांतिकारी समूहों के परिवर्तनकारी भावना को ऊपर उठाने के लिए सही लाइन व नीति एवं कम्युनिस्ट नैतिकता पर मार्गदर्शन मिलते रहा है और आगे भी मिलते रहेगा। निश्चय ही लाल चिनगारी में प्रकाशित लेख, आलेख, कविताएं और इलाकागत रिपोर्ट हम सभी के लिए ज्ञानवर्धक है। अतः लाल चिनगारी संपादकमण्डल से अपील है कि जिस तरह से अपने मुखपत्र लाल चिनगारी के वर्ष-13, अंक-33 में हमारी पार्टी के अग्रणी नेता कामरेड चारू मजुमदार के सुप्रसिद्ध आठ दस्तावेज में से आठवां दस्तावेज प्रकाशित किया गया है, उसी तरह से सभी दस्तावेज यानी एक के बाद और एक दस्तावेज प्रकाशित किए जाएं। इसी कड़ी में हमारी पार्टी के अग्रणी नेता कामरेड कन्हाई चटर्जी के दस्तावेज भी प्रकाशित किए जाएं। अब एक अशुद्धि पर गौर फरमाएंगे- अंक-33 के पृष्ठ 72 में छपे बीआरसी में दुश्मन के हमले की रिपोर्ट के तृतीय पैराग्राफ में दिनांक 26 अक्टूबर, 2017 को बुढ़ा पहाड़ स्थित..... ... बताया गया है और दिनांक 28 अक्टूबर, 2016 को पलटवार हमला किया..... कहा गया है। यहां तिथि में काफी अंतर है। जबकि मुखपत्र अप्रैल-जून 2017 में प्रकाशित हुआ है तथा 26 अक्टूबर 2017 का आगमन बाकी है। अतः ऐसा फर्क न हो ये गुजारिश है।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ

12/8/17

बंधु

प्रिय कामरेड बंधु,

गरमजोशी भरा कामरेडाना लाल सलाम!

आपने अपने खत के द्वारा हमारा उत्साहवर्द्धन किया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके खत में सुझाए गए सुझावों को हम जरूर अमल में लाने की कोशिश करेंगे और आपके द्वारा दिखाई गई गलती को भी हम सुधारने की भरपूर कोशिश करेंगे। 26 अक्टूबर, 2017 के जगह 26 अक्टूबर, 2016 ही होगा, गलती के लिए हम अपनी आत्म-आलोचना करते हैं।

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,

संपादकमंडल, लाल चिनगारी

कहानी

एक पालतू वफादार कुत्ता

वह अपने काम के प्रति एकदम ईमानदार है और वह मुंह नहीं खोलेगा, यह वह जान गया था। उसने अपनी पुलिसी टोपी सीधी की और उसकी ओर मुस्कराकर कहा- ''तुम्हारी ईमानदारी देखकर मुझे अच्छा लगा। तुम्हारे जैसे ईमानदार लोग मुझे पसंद हैं। अगर तुम यहां इस रिश्ते से नहीं लाए गये होते, तो तुमसे मिलकर मुझे खुशी होती। मैं तुमसे हाथ मिलाता, पर जैसे तुम अपने काम के प्रति ईमानदार हो, वैसे मैं भी अपने काम के प्रति ईमानदार हूं।''

उसके इतना कहते ही, विनय ने पूछ लिया- ''कैसे काम के प्रति ईमानदार हो? मैं तो जनता के हित का काम करता हूं। जनता की अपनी पार्टी का सदस्य हूं और इसलिए पार्टी के प्रति ईमानदार हूं। तुम किसके प्रति ईमानदार हो? लूटेरी सरकार के प्रति, जिनके साथ मिल-बांट कर खाने में तुम्हे आनंद आता है।''

''तुम मुझे गलत समझ रहे हो। माना कि इस व्यवस्था में बेइमान अफसरों की कमी नहीं है और नेता तो सभी भ्रष्ट ही है, लेकिन ईमानदार का मिलना इतना भी मुश्किल नहीं। हर कोई पैसे के लिए काम नहीं करता। कुछ लोग इस वर्दी की इज्जत करते हैं, इससे जुड़े लक्ष्य के प्रति ईमानदार होते हैं यानी देश की रक्षा व जनता की रक्षा के प्रति ईमानदार। तुम अपनी नजर में जनता के प्रति ईमानदार हो, मैं अपनी नजर में। मैं इस देश का रक्षक हूं। मेरे जैसे लोग बचपन से देश की रक्षा की कसम खाते हैं और बड़े होकर एक ईमानदार पुलिस ऑफिसर बनते हैं। बागी नहीं बनते, उपद्रवी नहीं बनते, उग्रवादी नहीं बनते। बंदुक की गोली के बजाय हम शांत व्यवस्था पर विश्वास करते हैं। मैं किसी के साथ नहीं खाता-पीता। मैं अपने देश व अपने कानून की इज्जत करता हूं, उसका रखवाला हूं और इस काम के प्रति मैं इमानदार हूं।'' -उसने तर्क रखा। ये सुनकर विनय को हंसी आ गयी।

''अच्छा! हम बंदुक पर विश्वास करते हैं और तुम शांत व्यवस्था पर, तो यह जो तुम लेकर घूमते हो, कमर में बांध कर उससे क्या निकलती है?''

''वह जनता की रक्षा के लिए है।''

''उसी जनता की रक्षा के लिए हमने भी बंदुक उठाया, तो वह उग्रता और तुमने उठाया, तो वह रक्षा! यह कैसी परिभाषा है?''-विनय जो हर बात सपाट कहता था, बिना रूके व थमे कहे जा रहा था।

''मुझे सच में अफसोस होता है, तुम्हारे जैसे ईमानदार व समझदार लोग जो मेरे दोस्त होने चाहिए थे, आज मेरे दुश्मन हैं और मुझे उसे प्रताड़ित करने का जिम्मा सौंपा गया है। पर मैं अपने कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध हूं, वरना तुम्हें कुछ नहीं करता।''-उसने फिर कहा।

विनय ने कहा- ''मैं तो वाकई में इस देश का एक सच्चा रक्षक हूं। लूटेरों के हाथों से देश को बचाने की लड़ाई लड़ रहा हूं। पर तुम्हारी ईमानदारी की बात जंचती नहीं, क्योंकि तुम देश व जनता के गद्दार हो, रक्षक नहीं।

उसका चेहरा तमतमा उठा, जैसे किसी ने जोरदार थप्पड़ जड़ दिया हो। गुस्से के मारे उसके हाथ पैर थरथरा रहे थे। एक पल को लगा, वह उग्र हो गया, मगर अगले ही पल उसने संयम बरता और अपने गुस्से को शांत करते हुए बोला- ''अगर तुम मेरी कस्टडी में नहीं होते। तो इस गुस्ताखी के लिए तुम्हें अच्छा इनाम मिलता। पर मैं डंडे की भाषा पर विश्वास नहीं करता, जो काम बात कर सकती है, वह डंडा नहीं कर सकता। पर तुमने बात बहुत गलत कही है।''

उसके चेहरे पर गुस्से से पसीना आ गया था। दो-चार वर्दीधारी, जो उसके आस-पास उसकी सहायता के लिए खड़े थे, ने मुट्ठी कस ली थी, पर उसने सबको शांत किया। शायद उसे विश्वास था कि अपने सॉफ्ट रवैये से वह एक पेशेवर क्रांतिकारी का विश्वास जीत लेगा।

आज सुबह की ही तो यह घटना थी। वैसे इसका असली कनेक्शन दो दिन पहले की घटना से थी, जब संगठन और पुलिस वाले के मुठभेड़ में चार पुलिस वाले मारे गये थे। लेकिन अपना एक साथी पकड़ा गया था, संगठन की यह अधूरी सफलता थी। इधर कुछ दिनों से ऑपरेशनों की बाढ़ सी लग गयी थी और पुलिस प्रशासन पूरी मुस्तैदी के साथ सफाया अभियान चला रहे थे। सरेंडर पॉलिसी के तहत कुछ कमजोर किस्म के लोगों ने सरेंडर कर दिया था और कुछ लड़ाकू योद्धा को वे पकड़कर सरेंडर करवाना चाहते थे, उनसे पूरे संगठन की जानकारी लेना चाहते थे। उस दिन पकड़े गये साथी ने बाद में सरेंडर कर दिया था और कुछ खुफिया जानकारी पुलिस प्रशासन को पार्टी के बारे में दे दी थी। जब जनयुद्ध छिड़ता है, तो यह सब तो होना ही होता है।

आज सुबह जब विनय किसी जरूरी काम से जंगल से बाहर निकला था, तो उसकी गिरफ्तारी हुई थी। इसलिए विनय को टॉर्चर करने वाले ऑफिसर के हाथों सौंपने के बजाय उस ऑफिसर के हाथों में सौंपा गया था, जो बातचीत के जरिए उससे जानकारी निकाल सके। इसलिए अभी तक विनय के साथ कोई प्रताड़ना शुरू नहीं हुई थी।

''तुम्हें लगता होगा कि मैं तुम्हें गाली दे रहा हूं और तुम्हारी ईमानदारी पर सवाल उठा रहा हूं'' -विनय ने आगे

बोलना शुरू किया- ''पर सच मानो तुम और तुम्हारे जैसे इस कानून के बहुत से रक्षक हैं, जो खुद को देश व समाज का असली रक्षक मानते हैं, पर सही मायने में वे देश और समाज के गद्दार हैं।''

''मैंने तुम्हारी ईमानदार पर सवाल नहीं उठाया, लेकिन तुम मेरी ईमानदारी पर सवाल उठाते हो।'' -उसने तमतमाए हुए कहा- ''हम एक तरह के लोग हैं, हमारे विचार और रास्ते अलग हैं, बस यही अंतर है न?''

''नहीं, बहुत बड़ा अंतर है। एक ही देश के लिए दो अलग-अलग विपरीत राह पर चलने वाले देश के रक्षक नहीं हो सकते हैं। तुम ईमानदार जरूर हो और रक्षक भी हो, मगर सिर्फ अपने स्वामी के एक पालतू कुत्ते की तरह। माफ करना मैं कुत्ते की संज्ञा तुम्हें इसलिए दे रहा हूं क्योंकि कुत्ते से ज्यादा वफादार कोई जीव नहीं होता। तुम एक मालिक के उस पालतू कुत्ते की तरह हो, जो अपने हित के लिए एक सीध -सादे इंसान को जब पीटता है, तो कुत्ता मालिक की ओर से भौंकना शुरू कर देता है और उससे भी ज्यादा वफादार हो, तो उस बेचारे निर्दोष आदमी को काटने भी दौड़ जाता है। कुत्ता समझता है कि वह बड़ा ईमानदार है और मालिक के दुश्मन को मारकर बड़ा नेक काम कर रहा है, पर वह वास्तव में एक बूरे इंसान का साथी होकर सताये लोगों को सताने का काम करता है। तुम लोगों की स्थिति उसी कुत्ते सी है। तुम लोग भी सीधे-सादे निर्दोष इंसान को तंग करने वाले समाज के बूरे तत्वों, जिनके हाथ में सत्ता की बागडोर है, जिन्होंने अपनी सुविधा के अनुसार कानून बना रखे हैं और उसमें फेर-बदल करते रहते हैं, जिनकी नीतियां आम जनता को त्रस्त करती है और उनका शोषण करने के लिए ही जिन्होंने लम्बा-चौड़ा शासन व्यवस्था, नियम-कानून व पुलिस-प्रशासन बना रखा है, तुम लोग उनके बनाए कानून की रक्षा यानी उनकी रक्षा के लिए हमेशा उस पालतू वफादार कुत्ते की तरह तैनात रहते हो और जब वो इशारा करे, जैसे कुत्ता निर्दोष पर झपट्टा मारता है, तुम हमारे जैसे देश व समाज को बदलने वाले लोगों पर झपट्टा मारते हो और उसी कुत्ते की तरह खुश रहते हो कि तुमने इस देश के कानून की रक्षा की है यानी देश की रक्षा की है। बिना यह सोचे कि देश में जब बूरे तत्वों का कब्जा है, तो उस देश के कानून भला लोगों के हित के कैसे होंगे? वे भी तो उन बूरे तत्वों के हित के होंगे, जो आम जनता के अहित में होगें। देश उन चंद लोगों से नहीं व्यापक जनता से बनती है, इसलिए देश की रक्षा उस जनता के हित की रक्षा से होगी, जो हम लोग कर रहे हैं और देश के गद्दार वे लोग होंगे, जो व्यापक जनता के दुश्मनों के बनाए कानून की रक्षा कर रहे होंगे, जो तुम लोग हो। तुम लोगों की वफादारी पर ही उनकी सत्ता भी टिकी है, इसलिए जनता के अहित व शोषण करने का दोष तुमलोगों के उपर ही है। तुम जैसे वफादार उनके न रहे, तो वे पल में मिट जाएं। ऐसे गद्दार होकर तुम इस खुशफहमी में हो कि तुम भी हमारी तरह ईमानदार हो और अपना फर्ज निभा रहे हो। ईमानदार हो और फर्ज निभाना है, तो फेंक दो यह पट्टा, जो तुम्हारे शरीर में उस सत्ता रूढ़ सरकार ने देश की रक्षा का झूठा नाम देकर पहना रखा है। असलियत में आओ। यदि ईमानदार हो, तो सही रक्षक बनो व जनता की लड़ाई के पक्ष में खड़े हो जाओ। जनता भी गले लगाएगी और मेरे जैसे लोग भी। नहीं तो ये अच्छाई का नकाब उतारकर वही करो, जो तुम्हारे जैसे इनाम के लालची ऑफिसर हमारे जैसे नक्सली को पकड़कर करते हैं। सच में तुम जितना कड़ा रूख अपनाओगे, मुझे उतनी ही खुशी होगी कि हमारा प्रभाव इतना ज्यादा है कि तुम उसे दबाने के लिए इस हद तक पहुंच गए हो। तुम जितना प्रताड़ित करोगे, मुझे अपनी ताकत की मजबूती का उतना ही एहसास होगा और उतनी ही खुशी मिलेगी। क्योंकि सच है न, ज्यादा दमन तो उनका ही होता है, जो प्रभावकारी होते हैं। तो क्या करना है ऑफिसर? तय कर लो। मैं एक ईमानदार का स्वागत करने के लिए भी तैयार हूं और एक पालतू पागल कुत्ते से खुद को कटवाने के लिए भी। मेरे पास तो वक्त की कमी नहीं, पर तुम्हारे पास हो सकती है। बुरा न मानना, मैंने फिर कुत्ते का उदाहरण दिया।'' -इतना कहकर विनय हंस पड़ा। विनय की निर्भिकता देखकर वे दंग थे। विनय के चेहरे पर जरा भी सिकन नहीं थी। उसके चेहरे की दमक से उसे कस्टडी में लेनेवाले सभी पस्त हो गये थे, सब के चेहरे पर पसीना था क्योंकि उनकी हार में भी हार थी और जीत में भी हार।

★

★ केंद्र व राज्य सरकार द्वारा घोषित 'मिशन-2017' को विफल करने हेतु जारी जनयुद्ध को तेज करें!

★ माओवादियों के सफाया के नाम पर फर्जी मुठभेड़ में निर्दोष आदिवासियों की हत्या करना बंद करो!

कविताएं

नव-जनवाद के योद्धा

किसी देश की जमीन पर
जब नव-जनवाद की आवाज उठती है
तो फिर वो रूकती नहीं।

न किसी दमन से, न किसी ऑपरेशन से
न बंदुक से, न जेल की सलाखों से
न बम से, न बारूद से,
क्योंकि नव-जनवाद की लड़ाई
एक क्षेत्र विशेष की लड़ाई नहीं।

नव-जनवाद के लड़ाकू
कहीं योद्धा बनकर
लड़ते हैं प्रतिक्रियावादी ताकतों से
बंदुक और हथियार के सहारे
जंगल पहाड़, गर्मी-वर्षा
आंधी तूफान, जाड़ा-ओला
सारे कष्टों को झेलते
लड़ते हैं उनसे जी-जान से।

तो कहीं नव-जनवाद के योद्धा लड़ते हैं
जनता के बीच शिक्षा के सही
प्रचार-प्रसार के रूप में।
बताते हैं नव-जनवाद और
नव-जनवाद की ताकत के बारे में।

बताते हैं इतिहास रूस और चीन का,
कैसे लेनिन देश-विदेश भटकते हुए भी
रूस की जनता का करते रहे नेतृत्व,
एक दिन रूस की सत्ता
जनता के हाथों में लाने के लिए।
कैसे माओ जंगल-पहाड़ों से गुजरकर
अपनी लाल सेना के साथ
लड़ते रहें प्रतिक्रियावादी ताकतों से।

नव-जनवाद के योद्धा कहीं लड़ते हैं
गांवों में जागरूकता लानेवानी
टीम के रूप में
कभी प्रतिबंधित संगठन के तहत
तो कभी सत्ता की नजरों से छुप-छुपाकर।

नव-जनवाद के योद्धा लड़ते हैं
शहरों में गलत नीतियों के खिलाफ भी
संगठित होकर, आह्वान कर
खुले संगठन बनाकर।

नव-जनवाद के योद्धा
प्रतिक्रिवादी सरकार के कानून के खिलाफ
यदि गैर-कानूनी रूप से करते है युद्ध
तो नव-जनवाद के योद्धा
उसी सरकार के झूठे कानूनी दायरों के
अंदर रहकर भी
खोलते हैं उनके पोल
क्योंकि जनता को छलने के लिए भी
जो हल्के कानून जनहित में उन्होंने बना रखे हैं
वे उसे भी नहीं निभा पाते अपने स्वार्थ में।
उनके ही कानून के तहत उनका
मुखौटा उतारना भी है दिलचस्प।

नव-जनवाद के योद्धा कहीं चुप नहीं बैठते
इसलिए यह सोचना कि
ऑपरेशनों से नव-जनवाद के योद्धाओं का
हो जाएगा सफाया
एक मिथ्या सच है।
क्योंकि यदि सेना की कतार रोकेगी रास्ता
नव-जनवाद के गुरिल्ला योद्धाओं का
तो तेज कर लेंगे अपनी लड़ाई
नव-जनवाद के दूसरे क्षेत्र के योद्धा
यदि रोकेगी प्रतिक्रियावादी सरकार
दूसरे क्षेत्र के योद्धाओं को

तो जनवाद के तीसरे क्षेत्र के
योद्धा हो जाएंगे सक्रिय
कर देंगे उनके नाक में दम।
क्योंकि उनकी आडम्बरी व्यवस्था
इतनी खोखली है
कि कहीं से भी उस पर
की जा सकती है चोट
और नव-जनवाद के योद्धा
तो असली योद्धा होते हैं।

इसलिए, रूकेंगे नहीं नव-जनवाद के योद्धा
देते रहेंगे उन्हें टक्कर
और सोचते-सोचते थक जाएंगे वे
कि कर देंगे एक दिन
नव-जनवाद के योद्धा का सफाया।।

नक्सलबाड़ी

कदम-कदम पर
आग का दरिया है
कदम-कदम पर शहादतें है
फिर भी चारू मजुमदार
तुम्हारे द्वारा उठाये कदम को
हमने रूकने नहीं दिया है।
जिसकी ठोकरों से तुमने
ढहा दिया था पहाड़ को
रास्ता दिया था
सदियों से भटकती नदियों को
पानी दिया था खेतों को
जिसमें फसलें तो
बोई जाती थी
पर, वो बड़ी नहीं होती थी
आग दिया था बीज को
जो पकने से पहले ही
मिट्टी में गिर जाती थी।

आज तुम्हारा त्याग और बलिदान
रंग ला रहा है पूरे देश में
क्रांति की फसल लहलहाती रही है
तुम्हारा आह्वान आज भी
छात्रों और नौजवानों को
बुला रहा है
जिसकी एक आवाज पर
एक पूरी की पूरी पीढ़ी ने
अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया
आज तुम्हारे साथ ही
उनको याद करने का दिन है
उनके नफरत और गुस्से पर
जी-भर कर बात करने का दिन है
जो फूटा था
सामंतों और पूंजीपतियों पर
टूटा था गांधी और नेहरू पर।

पर मैं सबसे पहले याद करूंगा
नक्सलबाड़ी गांव के उन
महिलाओं और बच्चों को
जो हमारे-तुम्हारे लिए
शहीद हो गये
उन किसानों को
जिन्होंने अपने हक के लिए
हथियार उठाया
अपने हल और कुदाल से
बनाया मुक्ति का रास्ता
जो दिल्ली से नहीं
नक्सलबाड़ी के खेतों से
होकर जाता है।

खेत जो शोषण के केंद्र थे
मुक्ति के केंद्र में बदलने लगे
किसान जो बहुत कुछ सहते थे
विद्रोही बनने लगे
और जमींदार जमीन छोड़कर भागने लगे
यह सब दर्ज है इतिहास में
फिर भी मैं कविता में दर्ज कर रहा हूं
महान नक्सलबाड़ी की बात
एक बार फिर कर रहा हूं
उनके लिए जो इसे

इतिहास में घटित सिर्फ
एक घटना के रूप में देखते हैं
उनके लिए भी
जिनके लिए यह आज भी है
एकमात्र आशा और विश्वास।

सुनो, सुनो, सुनो
नक्सलबाड़ी एक आग है
जो बुझा नहीं है
नक्सलबाड़ी एक विश्वास है
जो टूटा नहीं है
नक्सलबाड़ी एक मशाल है
जो 50 सालों से जल रहा है
जिसकी रोशनी में
मुक्तिकामी जनता आगे बढ़ रही है
यह सूर्य है, चंद्र है
भारतीय अतीत में घटित
उल्का पिंड है
जिसने इस देश की दशा और दिशा
दोनों बदल दिया है
बिना इस पर बात किये
आज मुक्ति पर बात नहीं की जा सकती
बिना इसके साथ खड़े
आज जनता के साथ खड़ा
नहीं हुआ जा सकता है।

यह मैं नहीं
बस्तर कह रहा है
जो भारतीय क्रांति में नये-नये
अध्याय जोड़ रहा है
जहां नवजनवादी क्रांति का शिशु
बड़ा हो रहा है
जिसकी किलकारियों से
इंद्रावती झूम रही है
जिसके खून में
भगत सिंह का खून
दौड़ रहा है।

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी
वहाँ से बहुत कुछ देखा है
देखा है हत्यारों की माँद
देखा है संसद के नीचे जमा होते
किसानों के खून के तालाब
देखा है देश के सबसे बड़े
व्यापारी की टकसाल
देखा है खबरें, तस्वीरें और शब्द।

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी
वहाँ एक आदमी लटक रहा है
छत की धत्री से बँधी रस्सी के
फन्दे को गले में डाले
बिलख रहे कुछ औरतें और बच्चे
भावहीन आँखों से ताक रहे हैं पड़ोसी
अब भी बाकी है
लेनदार बैकों और सरकारी एजेन्सियों की
धमकियों की धमक।

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी
वहाँ दूर से सुनायी दे रही है
हाँक लगाने वालों की आवाजें
धीरे-धीरे नजदीक आती हुई
पिट रही है डुगडुगी, भौंक रहे हैं कुत्ते।

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी
भागदौड़ मची हुई है आदिवासियों में,
संगीनें तान कर वर्दियों में सजे ये जल्लाद
चारों तरफ फैली हुई है रात
खौफ की तरह
सर्वदा वर्ग संघर्ष से ही चारों तरफ प्रकाश होगा
चीखते-चिंघाड़ते निशाचरी दानव हैं
शिकारी कुत्तों की गश्त है
बिच्छुओं का पहरा है
कोबरा ताक लगाये बैठे हैं।

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ
वहाँ एक सुगबुगाहट है
आग का राग गुनगुना रहा है कोई
बन्दूक को साफ करते हुए,
जूते की डोर कसते हुए,
पीठ पर बाँधने से पहले
पिट्ठू में चीजें हिफाजत से रखते हुए
लम्बे सफर पर जाने से पहले
उस सब को देखते हुए
जो नहीं रह जाने वाला है ज्यों-के-त्यों
उसके लौटने तक या न लौटने तक
इसी के लिए तो वह जा रहा है
अनिश्चित भविष्य को भरे अपनी मैगजीन में
पूरे निश्चय के साथ।

जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी
जल उठा है एक आदिवासी का अलाव
अँधेरे के खिलाफ
जहाँ मैं पड़ाव डाल रहा हूँ अभी।

पार्टी स्थापना की 13वीं वर्षगांठ के अवसर पर लिखित कविताएं

01.

भारत देश की मिट्टी में फसल उगाने हेतु
सिंचाई के लिए बूंद-बूंद कर पानी पड़ता रहा
जब बारिश तेज होती गयी
तो बन गयी नदी-नदियां
जब नदी-नदियां की पानी
तेज गति से बहते-बहते
परिमाण में गुणात्मक परिवर्तन हो गया
तब बन गया समुंदर
दो समुंदर मिलकर बन गया महासागर।

सारे देश की जनता जागने लगी देखकर
मुक्ति की आशा की किरण
शोषक-शासक वर्ग ने सुन लिया कि
दोनों समुंदर का हो गया विलय
तो उसके दिल का धड़कन हो गया तेज
नींद हो गयी हराम।

जब अत्याचारी सैनिकों के साथ
मुकाबला करने के लिए
पीजीए और पीएलजीए का भी
विलय होकर बन गया पीएलजीए
दोनों सेनाओं के विलय के बाद
अपने फॉरमेशनों को उन्नत करते हुए
बन गया कंपनी-बटालियन।

तब दुश्मनों ने खोज किया नया जालिम कानून
और तेज किया असफल दमन-अभियान
कांग्रेस सरकार के मनमोहन सिंह ने बोला
देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए
सबसे बड़ा खतरा है भाकपा (माओवादी)।

फिर मोदी सरकार आने से
खूंखार रूप से शुरू किया गया दमन
माओवादियों को खत्म करने के लिए
ऐलान किया मिशन-2017 ।

माओवादी कोई अलग पार्टी नहीं है
यह देश की जनता की पार्टी है
जनता के लिए लड़ रही है
इसे शोषक वर्ग कभी खत्म नहीं कर सकता है।।

02.

मा-ले-मा द्वारा संचालित
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का
पूरा हुआ तेरह साल।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद का
वैज्ञानिक दर्शन पूर्ण रूप से
द्वंद्वात्मक-भौतिकवाद और वस्तुवाद
पर ही आधारित और प्रमाणित भी है
यानी वस्तु से चिंतन होता है
चिंतन से वस्तु नहीं होती

हम क्रांतिकारियों को इसे
हमेशा-2 के लिए अपने मन में बैठा लेना चाहिए।

रूस और चीन के सर्वहारा वर्ग ने
रच दिया था विश्व में कीर्तिमान
शोषक वर्गों को सत्ता से बेदखल कर
बढ़ाया था अपना मान-सम्मान।

रूस और चीन के सर्वहारा वर्ग की तरह
हम भी करते रहेंगे मा-ले-मा का सही प्रयोग
शोषक वर्ग के हाथों से सत्ता छीनकर
हम भी स्थापित करेंगे भारत में समाजवाद
और जब तक पूरे विश्व में
साम्यवाद की न हो जाती है स्थापना
दो वर्गों के बीच के संघर्ष को
हम लगातर जारी रखेंगे।

03.

मई, 1967 में उठा एक तूफान
जिसने जन्म दिया क्रांतिकारी विद्रोह को
उन आंदोलनों और संगठनों को
जन्म दिया उन सच्चे क्रांतिकारियों को।
जिसने मालेमा के सिद्धांत से लैस होकर
ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान विद्रोह का
परचम लहरा रहे हैं
लहरा रहे हैं गांव-शहरों में
भारत के हर कोने-कोने में।

जिसने कर दिया है ऐलान
दीर्घकालीन जनयुद्ध के जरिये
राजसत्ता दखल करने की
और नव जनवाद, समाजवाद स्थापित करने की।

इसी कारणवश बन गयी है
शोषक-शासकों के सामने एक बड़ी चुनौती
और वे कर दिये घोषित
हमेशा-हमेशा के लिए हमें खत्म करने की।

पर, यह संघर्ष कभी नहीं होगी खत्म
बिना रूके, बिना झुके निरंतर चलती रहेगी
और जलती रहेगी नक्सलबाड़ी की लाल आग
यह आग तब तक जलेगी
जब तक न हो जाती है वर्गों का खात्मा!

पाठकों से अपील

आप सभी भली-भांति जानते हैं कि लाल चिनगारी के प्रकाशन में कई तरह के दिक्कतों के बावजूद नियमित रूप से इसे प्रकाशित किया जा रहा है।

अतः आप सभी लाल चिनगारी पाठकों को सूचित किया जाता है कि प्रत्येक दिन हमारे इलाके में बर्बर ऑपरेशन ग्रीन हंट के तीसरे चरण में 'मिशन 2017' के तहत घट रहे घटनाओं जैसे-बर्बर पुलिसिया जुल्म-अत्याचार, पुलिस, प्रतिक्रियावादी और वर्ग दुश्मनों द्वारा गठित विभिन्न नामों के सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोह के द्वारा मार-पीट, हत्या, बलात्कार करने से लेकर विभिन्न तरह की घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है। इसके अलावे हमारी पार्टी के द्वारा संचालित जनमुक्ति छापामार सेना के द्वारा कई शानदार कार्रवाइयों समेत जनता के द्वारा कई जनांदोलन किये गए हैं एवं किये जा रहे हैं। इस कार्रवाइयों के दौरान हमारे पीएलजीए के योद्धा बहादूरी के साथ संघर्ष करते हुए शहादत दे रहे हैं। फिर पुलिस व सशस्त्र खुफिया गुण्डा गिरोहों के मिलीभगत से हमारे नेता, कार्यकर्त्ता व समर्थक जनता की फर्जी मुठभेड़ में हत्याएं कर रहे हैं।

अतः सभी लाल चिनगारी पाठकों से अपील किया जाता है कि ऐसे तमाम घटनाओं का रिपोर्ट आप नियमित रूप से लाल चिनगारी संपादकमंडल को भेजें। साथ ही साथ विभिन्न मुद्दों पर लेख-आलेख, खासकर शहीदों की जीवनी फोटो के साथ नियमित रूप से भेजते रहें और लाल चिनगारी में प्रकाशित लेखों पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेजें ताकि लाल चिनगारी को और भी समृद्ध किया जा सके।

-सम्पादकमंडल, लाल चिनगारी

बीजे सैक द्वारा जारी बुकलेट

सेना, अर्द्ध-सैनिक बल और पुलिस जवानों के पास आह्वान

देशभक्ति के ढोंग को समझें और सच्चा देशभक्त बनें!

देश के 90 प्रतिशत मेहनत करने वाले लोग लूट-शोषण, भूख-भय और भ्रष्टाचार से आज त्रस्त हैं। जनवादी अधिकार नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है। भारत-पाकिस्तान और कश्मीर के मुद्दे को भी ये शोषक वर्ग हल करना नहीं चाहते हैं। क्योंकि देश में जब भी लोग शोषण और लूट के खिलाफ आवाज उठाते हैं, तब शोषक वर्ग कश्मीर में और भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव पैदा कर देता है और देशभक्ति का राग अलापने लगता है। इसके बाद जवानों का मरने और मारने का सिलसिला शुरू हो जाता है, जबकि मरने वाले सब के सब शोषित वर्ग के ही लोग होते हैं। इसलिए आप शोषक वर्ग के साजिश को समझें और उनके हित के लिए नहीं, बल्कि अपने वर्ग हित के लिए सोचें तभी हम सभी शोषित-उत्पीड़ित वर्ग की समस्या हल होगी।

प्रिय सेना, अर्द्ध-सैनिक बल और पुलिस जवानो,

आज पूरा विश्व पूँजीवाद-साम्राज्यवाद की गिरफ्त में है। साम्राज्यवाद का अर्थ ही है युद्ध। इसलिए अपनी लूट-खसोट और शोषण को जारी रखने के लिए साम्राज्यवादियों द्वारा विश्व पटल पर युद्ध जैसी ही स्थिति उत्पन्न कर दी गयी है। हमारे देश में भी यहां के प्राकृतिक संसाधनों की लूट-खसोट और साम्राज्यवादी शोषण जारी है, इसके खिलाफ भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में मेहनतकश जनता संघर्ष कर रही है। जिसके कारण शासक वर्ग द्वारा मेहनतकश जनता के ऊपर युद्ध थोप दिया गया है और हमारे संघर्ष के इलाके में लाखों की संख्या में उन जवानों को उतार दिया गया है, जो शोषित-उत्पीड़ित वर्ग से आकर शासक वर्गों के सैन्य बलों में भर्ती हुए हैं। इस तरह से शासक वर्ग हम शोषित-उत्पीड़ित वर्ग के शोषण-जुल्म के खिलाफ हक की आवाज व न्यायपूर्ण क्रांतिकारी आंदोलन को दमन करने के लिए पुलिस व सैन्य बलों को एक यंत्र के रूप में इस्तेमाल करता है तथा इस ताकत व हथियार के बल पर ही अपना लूट-शोषण को बरकरार रखा है। देशभक्ति का मतलब होता है अपने देश को देशी-विदेशी पूँजीपतियों (लूटेरों) की लूट से बचाना तथा देश की सच्ची स्वाधीनता, साम्राज्यवाद-सामंतवाद-दलाल नौकरशाह पूँजीपति वर्ग के लूट-शोषण व जुल्म-अत्याचार से मेहनतकश जनता की मुक्ति, सच्ची आजादी, आर्थिक-राजनीतिक अधि कार हासिल करने हेतु लड़ना और 90 प्रतिशत मेहनतकश जनता की समस्या को हल करना। शोषक वर्गों की सेना में जितने भी सिपाही हैं वे सब के सब शोषित-उत्पीड़ित वर्ग से आये हैं। ऐसे जवानों को सुरक्षा और अनुशासन के नाम पर अनुत्पादक और उबाऊ कामों में लगाया जाता है, और कठोर नियंत्रण में बैरकों के भीतर आम जनता से अलग रखा जाता है, उनकी सोचने-समझने की क्षमता को कुंद करके राज्य-व्यवस्था का एक बेजान उत्पीड़क रोबोटनुमा औजार व हुक्म का गुलाम बनाकर रखा गया है। आइए, शोषक वर्गों की साजिश को समझें और संघर्षरत जनता के साथ एकरूप हो जाएं, देशभक्ति की सच्ची गरिमा को समझें और सच्चा देशभक्त बनें।

किसानों की व्यथा पर एक नजर: हमारा देश कृषि प्रधान देश है, लेकिन इस देश में आज तक 90 प्रतिशत मेहनतकश किसान-मजदूर के हित में एक भी कानून नहीं है। फलत: मेहनत करने वाले लोग हाड़तोड़ परिश्रम के बाद भी अपना परिवार का भरण-पोषण नहीं कर पा रहे हैं। किसानों के ऊपर लगातार कर्ज का बोझ बढ़ता ही जा रहा है। पिछले दो दशकों में कर्ज के बोझ के कारण तीन लाख से भी ज्यादा किसान आत्महत्या कर चुके हैं। आत्महत्या का सिलसिला आज भी न केवल बदस्तूर जारी है, बल्कि झारखंड, बिहार और पश्चिम-बंग जैसे राज्यों में भी होने लगी है। एस.ए.एस. एफ के आंकड़ों के अनुसार किसानों के ऊपर 112 हजार करोड़ रुपये का कर्ज है। देश की सरकारें केवल पूँजीपतियों और कॉरपोरेट घरानों की सेवा करने में लगी हुई हैं। अपनी परिश्रम का उचित मूल्य मांग कर रहे किसानों को कैसे गोलियों से उड़ा दिया जा रहा है, उसका ताजा मिसाल मध्यप्रदेश के मंदसौर में 9 जून, 2017 की घटना है, जिसमें 6 निर्दोष किसानों को गोलियों से छलनी कर दिया गया।

हमारे देश में मेहनत करने वाले मुख्य वर्ग के रूप में किसान है, साथ-ही खेत मजदूर, संगठित और असंगठित क्षेत्र के औद्योगिक मजदूर, घर और बाहर में काम करने वाले, ठेला-खोमचा लगाकर अपना जीवन यापन करने वाले लोग भी हैं। यही मेहनतकश वर्ग समाज के सभी जरूरतों को पूरा कर रहा है। नेता-नौकरशाह, उसकी पुलिस-फौज और न्यायालयों जैसे परजीवी संस्थाओं और समूहों का भार अपनी पीठ पर ढो रहा है। आज इन्हीं के परिश्रम से देशी-विदेशी पूँजीपतियों और सामंतों की मुनाफा लगातार बढ़ रहा है। लेकिन मेहनत करने वाले इन वर्गों की हालत आज कैसा है? आज देश के 80 प्रतिशत जनता मात्र 20 रुपये रोज की आमदनी पर जीने-मरने को विवश क्यों है? आखिर किसका विकास किया जा रहा है?

हमारे देश का एक बड़ा हिस्सा प्राकृतिक संसाधनों से भरा पड़ा है, जहां की आबादी का अधिकांश हिस्सा आदिवासी-मूलवासी और दलितों का है। यह आबादी नदी, जंगल और पहाड़ों से अपनी जीविका के साधन जुटाते रहे हैं। लेकिन खुद को देशभक्त कहने वाली दलाल सरकारें प्राकृतिक

संसाधनों से समृद्ध इस धरती को लूटने के लिए देशी-विदेशी बड़ी-बड़ी कम्पनियों के साथ हजारों करार (एमओयू) कर चुकी है। साथ-ही भूमि अधिग्रहण कानून के जरिये किसानों की जमीन छीनकर देशी-विदेशी पूँजीपतियों और भू-माफियाओं को दी जा रही है। जमीन की इस लूट से ग्रामीण इलाके की एक बड़ी आबादी बेरोजगार व विस्थापित हो गयी है।

देश में मजदूरों की दशा: यह जगजाहिर है कि दुनिया भर की सारी दौलत दुनिया के मजदूर वर्ग ने अपने श्रम से पैदा की है, लेकिन आज उस श्रम/दौलत पर मालिकाना हक पूँजीपतियों का है। उदाहरण के लिए देखें तो वर्ष 2016 में दुनिया भर के कुल दौलत 255.7 खरब डालर थी, जिसका 99.98 प्रतिशत हिस्सा मात्र 20 प्रतिशत अमीरों के पास था। श्रमिकों की मेहनत से पैदा होने वाली पूँजी को लगातर बढ़ाते जाने और उस पर एकाधिकार बनाते जाने की नीति ने मजदूरों की मुश्किलें और बढ़ा दी है। उनके उत्पीड़न अमानवीय और क्रूर होते जा रहे हैं। एक अनुमान के मुताबिक ऑटो कारखाने में आठ घंटा काम करने वाला मजदूर अपने पहले घंटे में ही अपनी मजदूरी निकाल लेता है। बाकी सात घंटे में उसके द्वारा किया गया श्रम अतिरिक्त मूल्य कहलाता है, जिसे पूँजीपति हड़प लेता है। इसके विरोध में बोलने पर मजदूरों पर भी लाठियां और गोलियां बरसायी जाती है और फिर जेलों में ठूंस दिया जाता है। इसका ताजा मिसाल 02 जुलाई, 2012 की घटना है, जिसमें गुड़गांव के मानसेर में मारूती-सुजूकी प्लांट में मजदूरों द्वारा प्रतिरोध के दौरान हुई आगजनी में एक मैनेजर की मौत हो गयी थी। इस मामले में 148 मजदूरों को अभियुक्त बनाया गया। आखिरकार मई 2017 में 13 मजदूरों को आजीवन कारावास, 18 को विभिन्न अवधि तक की कारावास मिली और बाकी को रिहा कर दिया गया।

जवानों की व्यथा भी देखें: जनवरी 2017 में जम्मू-कश्मीर में तैनात सीमा सुरक्षा बल के जवान तेज बहादूर यादव ने जवानों को मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता पर सवाल उठाते हुए फेसबुक पर विडियो डाल कर बवाल मचा दिया। इस वीडियो से बीएसएफ के आलाधिकारियों की नींद हराम हो गयी। देखें तेज बहादूर ने वीडियो में क्या कहा: *''नमस्कार! अभी मैं आपको दिखाता हूँ, ये देखो दाल। सिर्फ हल्दी, नमक और कुछ नहीं इसके सिवाय। दस घंटे ड्यूटी करने के बाद ये जली हुई रोटियां मिल रही है। अब आप ही बताइए कि यह खाना खाकर जवान दस घंटा ड्यूटी कर सकता है? ... जय हिन्द!''* फिर, 13 जनवरी, 2017 को भारतीय सेना में 15 वर्षों से कार्यरत लान्स नायक यज्ञ प्रताप सिंह ने फेसबुक पर विडियो के जरिए सेना के अधिकारियों पर शोषण का आरोप लगाया। है। उसने कहा है, *''सैनिकों से अधिकारियों के कपड़े धुलवाना, बुट पॉलिस करवाना, कुत्ते घुमवाना, झाड़ू-पोछा लगवाना आदि कामों को करवाकर हीनताबोध कराया जाता है।''* वहीं, 7 मार्च, 2017 को एक और वीडियो वायरल होने लगा जो मोदी के गृहराज्य से जवान सिंधवा योगीराज द्वारा किया गया था। उस जवान का कहना था, *''हमें सिर्फ जिंदा रहने के लिए खाना दिया जाता है, जो सबसे घटिया होता है। सेना के कुछ अफसरों ने जवानों को गुलाम समझ रखा है। जवानों को सबकुछ मजबूरी में करना पड़ता है, जो अपना हक के लिए मुंह खोलता है वह मारा जाता है।''* पिछले वर्ष 15 मई, 2016 को अरुणाचल प्रदेश के किवतु हलयुलियांग में भारतीय सेना की एक इनफेंट्री यूनिट में रुटिन अभ्यास के दौरान एक जवान की मौत हो गयी। खबर के अनुसार बेस कैम्प से 10 किलोमीटर पैदल मार्च के बाद उक्त जवान ने सीने में दर्द की शिकायत की थी, लेकिन मेडिकल अफसर ने फिट बताया और फिर मार्च करते वक्त वह गिर गया और कुछ ही घंटों बाद मर गया। इसके विरोध में आक्रोशित कुछ जवानों ने प्रदर्शन किया और मौके पर पहुंचे सेना के कमाण्डर समेत कुछ अन्य अफसरों के साथ हाथापाई भी हुई। मामले की जांच चलने लगी है, फैसला किसके पक्ष में जायेगा वह पहले से ही तय है। अधिकारियों के दूर्व्यवहार से परेशान जवानों द्वारा 11मई, 2012 को लद्दाख के न्योमा में तैनात 226 फील्ड रेजिमेंट के अफसरों के साथ मारपीट की घटना सामने आयी थी। गुस्साये जवानों ने यूनिट के शस्त्रागार को कब्जे में लेने का प्रयास किया। बाद में उन जवानों को एक अफसर के पत्नी के साथ छेड़खानी करने का आरोप लगाकर फर्जी मुकदमों में फंसा दिया गया। उसमें 168 जवानों को अनुशासनहीनता का आरोप लगाकर कई मामलों में फंसाकर कोर्ट मार्शल किया गया, इस मामले में कई जवानों की जेल हुई और बाकी को घर भेज दिया गया। ये जवान सिर्फ अपने अधिकारों के लिए बोले थे, इसे भी यह व्यवस्था सहन नहीं कर पायी। ऐसे ही अपमानित व घुटन भरी जीवन जी कर जवान शोषक वर्गों की सेवा और रक्षा कर रहे हैं।

सैन्य बलों में लगातर बढ़ते असंतोष के कारण जवान ले रहे हैं स्वैच्छिक अवकाश: उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार सेना में बढ़ते असंतोष के कारण इस भयानक बेरोजगारी में भी नौकरियां छोड़ने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। वर्ष 2009 में 7249; वर्ष 2010 में 7494; वर्ष 2011 में 10315; वर्ष 2012 में 9951 और वर्ष 2013 में 10201 जवानों ने वीआरएस ली है। जबकि अर्द्ध-सैनिक बलों के 16459 जवानों ने तीन साल के भीतर स्वैच्छिक सेवा निवृति ली है। जो अतीत के मुकाबले 400 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है। 5289 जवान 2014-15 में; 2105 जवान 2015-16 में; 9065 जवान 2016-17 में नौकरी छोड़ी है। इनमें 4275 बीएसएफ के; 3280 सीआरपीएफ के और 765 सीआईएसएफ के जवान हैं। केंद्रीय गृह-राज्यमंत्री किरण रिजीजू ने एक सवाल के लिखित जवाब में यह जानकारी दी थी। उच्च अधिकारियों द्वारा किया जाने वाला

भेदभाव तथा गलत व्यवहार के कारण अधिकांश जवानों ने नौकरी छोड़ी है।

सैन्य बलों में आत्महत्या की दरों में भी बढ़ोतरी: प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्ष 2012 में थलसेना, नौसेना व वायुसेना के क्रमश: 95, 15 व 5 जवानों ने आत्महत्या की। 2013 में क्रमश: 86, 11 व 15 जवानों ने आत्महत्या की। वर्ष 2014 में क्रमश: 84, 11 व 13 जवानों ने खुदकुशी की। वहीं, 2015 में 69, 11 व 13 जवानों ने खुदकुशी की थी। अभी हाल ही में झारखंड में तीन जवानों ने खुदकुशी कर लिये। वहीं, 10/09/2017 को सीआईएसएफ जवान सतीश आर (तमिलनाडु-वेल्लोर) ने तनावग्रस्त होकर अपनी सर्विस रिवाल्वर से आत्महत्या कर लिया। किसानों और जवानों की व्यथा भी एक जैसी ही है, क्योंकि जवान भी तो किसान परिवार का ही है। बीएसएफ जवान तेज बहादूर यादव ने तो सिर्फ घटिया भोजन दिये जाने की शिकायत की थी, इतना में ही उसे नौकरी से निकाल दिया गया। ऐसी घटना केवल तेज बहादूर यादव के साथ नहीं, बल्कि उन सारे जवानों के साथ हो रही है जो शोषित-उत्पीड़ित वर्ग से आकर शोषक वर्गों की सेवा और रक्षा कर रहे हैं। यह एक व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि पूरे मेहनतकश वर्ग की समस्या है।

भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े बच्चे: उत्तरप्रदेश में गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में इंसफ्लाइटिस से पीड़ित बच्चों की ऑक्सिजन की कमी से बड़ी तादाद में मौत का मामला सामने आया है। भ्रष्ट व्यवस्था के कारण अस्पताल में पर्याप्त मात्रा में ऑक्सिजन उपलब्ध नहीं था, फलत: यहां केवल अगस्त माह में ही 325 बच्चों की इंसफ्लाइटिस से मौत हो चुकी है, वहीं 01 सितंबर, 2016 को भी 13 बच्चों की मौत हो गयी। जबकि इस वर्ष अगस्त 2017 तक 1300 बच्चों की मृत्यु हो चुकी है। साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने और अपनी नाकामी को छुपाने के लिए उत्तरप्रदेश सरकार ने इसी मामले में 02 सितंबर, 2017 को डॉ. कफील खान को मुख्य आरोपी के रूप में गिरफ्तार कर लिया, जबकि यहां के प्राचार्य और उसकी पत्नी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका था। इसी मामले में उनके ऊपर मुकदमा चलायी जा रही है।

नोटबंदी का परिणाम: पिछले साल 8 नवम्बर, 2016 को फासीवादी नरेंद्र मोदी के तानाशाही फरमान के बाद 1000 और 500 रुपये की नोटों की वैधता समाप्त हो गयी। तब मोदी ने कहा था, ''नोटबंदी से कालाधन समाप्त हो जायेगा, यह कालाधन पर सर्जिकल स्ट्राइक है, गरीबों को इससे फायदा होगा।'' लेकिन बेकार पड़े 99 प्रतिशत नोट बैंकिंग सिस्टम में वापस आ चुके हैं। रिजर्व बैंक ने 30 अगस्त, 2017 को बताया कि सिर्फ 1.4 प्रतिशत नोट वापस नहीं आए हैं। मोदी सरकार के दावों से अब सवाल उठने लगी है कि आखिर कालाधन गया कहां? विकास की रफ्तार 6 प्रतिशत से कम क्यों हो गयी? रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष 2016-17 में नये नोटों की प्रिंट करने की लागत दोगुना बढ़कर 7,965 करोड़ रुपये हो गयी है, जो उससे पिछले साल 3,421 थी। इसका बोझ भी मेहनतकश जनता पर ही आएगा। नोटबंदी के दौरान अपने रुपये बदलने की आपाधापी में पूरा देश कतारों में लगा रहा लोगों को काफी परेशानियां हुई, पुलिस की लाठियां भी खानी पड़ी और 100 से अधिक लोगों की जानें भी गयी है। इससे बिलकुल स्पष्ट हो गया है कि यह कालाधन पर सर्जिकल स्ट्राइक नहीं, बल्कि देश के आम नागरिकों के जिंदगी के ऊपर सर्जिकल स्ट्राइक किया गया था। सर्जिकल स्ट्राइक करके देश के नागरिकों की जान लेने का अधिकार किसी को नहीं है। क्या इस मामले में मोदी और उसके सरकार के मंत्रियों के ऊपर हत्या का मुकदमा नहीं चलाया जाना चाहिए था? क्योंकि वे मौतें भी तो मोदी सरकार के सर्जिकल स्ट्राइक के कारण हुई हैं। अस्पताल के डॉक्टरों के ऊपर हत्या का मुकदमा चल सकता है तो मोदी सरकार के मंत्रियों के ऊपर क्यों नहीं?

प्रिय वर्ग दोस्तों, आप सभी भलीभांति जानते हैं कि वर्ष 2014 में लोकसभा चुनाव के समय नरेंद्र मोदी कहा करता था, ''मैं आम आदमी हूँ, मैं बचपन में चाय बेचा करता था, इसलिए मैं गरीबों की जिंदगी के बारे में अच्छी तरह से जानता हूँ।'' लेकिन कुछ महीनों के बाद ही जब 15 अगस्त, 2014 को लाल किला में तिरंगा फहरा रहा था और भाषण दे रहा था तब वही आदमी 12 लाख रुपये का कोट पहन रखा था। इतना ही नहीं अब तो वह काजू के आटे की रोटियां खाने लगा। क्या कोई साधारण आदमी 12 लाख का कोट पहन सकता है और काजू से बने आटे की रोटियां खा सकता है? नहीं! पहनना और खाना तो दूर की बात है, वह ऐसा सोच भी नहीं सकता है।

हमारा देश का संविधान कहता है कि मंत्री हो या अफसर या फिर मजदूर हो या किसान सभी के लिए समान कानून है। लेकिन क्या धरातल में हकीकत ऐसा दिखता है? नहीं! यानी व्यवहारों में बिलकुल उल्टा ही दिखता है। आम नागरिकों के लिए अलग कानून है, तो मंत्रियों और नौकरशाहों के लिए अलग। सेना, अर्द्ध-सैनिक बल और पुलिस विभाग भी इससे अछूता नहीं है। यहां भी आम जवानों के लिए अलग कानून है और अधिकारियों के लिए अलग। अभिव्यक्ति की आजादी भी आज छीनी जा रही है, क्या यही लोकतंत्र है? मंदसौर में किसानों ने तो केवल अपने परिश्रम का उचित मूल्य ही मांगा था, इतने में ही उनकी हत्या कर दी गयी। सेना में भी कुछ जवानों ने सिर्फ अपना अधिकार की बात कही थी, उन्हें भी निकाल दिया गया। कहां गया जनवादी अधिकार?

कश्मीर में व्यर्थ के मारे जा रहे हैं जवान: ज्ञात हो कि

कश्मीर एक स्वतंत्र राष्ट्र था। ब्रिटिश लूटेरों ने भारत के साथ-साथ उसे भी अपना गुलाम बना लिया था। जब 1947 में ब्रिटिश लुटेरों ने अपने दलालों के हाथों में सत्ता सौंपा तो भारत के साथ-साथ कश्मीर भी स्वतंत्र हुआ। तथाकथित आजादी के बाद 26 अक्टूबर, 1947 को राजा हरि सिंह, शेख अब्दुल्ला, जवाहर लाल नेहरू और माउंटबेटन के बीच एक मीटिंग हुई, जिसमें निर्णय लिया गया कि कश्मीर में प्रधानमंत्री होगा, मुख्यमंत्री नहीं; यहां का संविधान और राष्ट्रीय झण्डा भी अलग होगा। लेकिन भारत के शासक वर्ग की विस्तारवादी नीति के चलते उस निर्णय में बाद में कुछ संशोधन लाकर कश्मीर को फिर से भारत में एक राज्य के रूप में बलपूर्वक शामिल कर लिया गया, तभी से वहां के जनता आत्मनिर्णय के अधिकार की जायज मांग कर रहे हैं। लेकिन भारत सैन्य ताकत के बल पर उसे अपना अधीन रखना चाहता है। इसी के विरोध में कश्मीरी जनता संघर्ष कर रही हैं। इस संघर्ष को भारत सरकार द्वारा कुचलने के लिए पुलिस-मिलिट्री के जरिए व्यापक दमनचक्र चलाये जाने के कारण कश्मीरी जनता तो मारे ही जा रहे हैं, पर शोषित-उत्पीड़ित वर्ग से आये हजारों जवानों को भी व्यर्थ में जानों की कुर्बानी के लिए मजबूर कर दिये हैं। बुरहान वाणी की हत्या के बाद से कश्मीर फिर से सुलग उठा है। इस संघर्ष में महिला-पुरुष, युवक-युवतियां, छात्र-छात्राएं सभी उतर पड़े हैं। एक साल के भीतर ही सैंकड़ों की संख्या में जनता और जवान मारे जा चुके हैं। साथ-ही पैलेट गन के छर्रों से हजारों लोगों को अपंग और दृष्टिविहीन बना दिया गया है, इसमें सैंकड़ों की संख्या में युवक-युवतियां और छात्र-छात्राएं भी शामिल हैं। कश्मीर पर भारत और पाकिस्तान दोनों ही अपनी-अपनी दावेदारी करते रहे हैं। इसी मुद्दे को उकसा-उकसा कर जवानों को मरवाया जा रहा है। जब सीमा पर दोनों देशों के जवान मर रहे होते हैं, तब दोनों देशों के प्रधानमंत्री एक-दूसरे से गले मिल रहे होते हैं, जो जवानों की कुर्बानी के साथ भद्दा मजाक के सिवाय कुछ नहीं है। हमें शोषक वर्गों की साजिश को समझना होगा।

हमारा कर्त्तव्य: उपरोक्त तथ्यों से पूरी तरह से प्रमाणित हो चुकी है कि हमारे देश में परिश्रम करने वाले लोग, यानी मेहनतकश वर्गों के लिए कोई आजादी नहीं है। ब्राह्मणीय हिन्दुत्ववादी आरएसएस व भाजपा के मोदी सरकार का चरम तानाशाही-फासीवादी शासन जारी है। मेहनतकश वर्ग आज सभी जगहों पर लूट-शोषण और भ्रष्टाचार का शिकार हो रहे हैं, यानी लोग हमारे देश में लूट-शोषण और भ्रष्टाचार से त्रस्त हैं। हमें अपना हक और इज्जत-अधिकार हासिल करने के लिए अभी भी काफी संघर्ष करने की जरूरत है। इस स्थिति में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी शोषित-उत्पीड़ित वर्ग से आये तमाम जवानों से आह्वान करती है कि शोषण और ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के विरूद्ध संघर्ष का हमारा देश का गौरवपूर्ण इतिहास है, जैसाकि सिद्धू-कान्हू, तिलका मांझी, वीर बिरसा मुण्डा, भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद तथा सेना में मंगल पाण्डे और 1946 में नौसेना की ब्रिटिश शासकों के खिलाफ लड़ी गयी बहादूराना संघर्षों से शिक्षा लेकर उनके दिखाये रास्ते पर आगे बढ़ें। क्योंकि आज भी हमारे देश में अनेक साम्राज्यवादियों का अप्रत्यक्ष शोषण-शासन व लूट जारी है तथा साम्राज्यवाद के खिदमतगार सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूँजीपतियों का लूट-शोषण जारी है। इसलिए पुलिस व सैन्यबलों से हमारा आह्वान है कि आपलोग मेहनतकश मजदूर-किसानों के साथ एकजुट हो जाएं और चंद शोषक-शासकों के स्वार्थ सिद्धि के लिए काम न करें। बल्कि, भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी जल-जंगल-जमीन-इज्जत सहित तमाम तरह के अधिकारों के लिए आंदोलन और मेहनतकश वर्गों के न्यायपूर्ण क्रांतिकारी आंदोलन तथा आंदोलनकारी नेताओं, कार्यकताओं व समर्थक जनता के ऊपर बर्बर जुल्म न ढाकर यथासंभव उनका साथ दें, वक्त आने पर आप शोषक वर्गों की चाकरी छोड़ कर 90 प्रतिशत शोषित-उत्पीड़ित वर्गों (यानी अपना वर्ग) के दुश्मन की ओर अपना बंदूक को घुमा दें और जारी सशस्त्र कृषि-क्रांतिकारी संघर्ष में कूद पड़ें। साथ-ही जनमुक्ति छापामार सेना में भारी से भारी संख्या में शामिल होकर नि:स्वार्थ भावना से 90 प्रतिशत मेहनतकश जनता की सेवा करें और नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लक्ष्य से संघर्षरत जनता के ऊपर जारी बर्बर सैनिक युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को परास्त करें और मौजूदा तथाकथित लोकतांत्रिक सत्ता-संरचना (व्यवस्था) को ध्वस्त करें। फिर, समाजवादी समाज की स्थापना करने में अपने योगदान को बढ़ावें। पुन: फिर आगे चलकर एक वर्गविहीन समाज यानी साम्यवाद की स्थापना करें। यही एकमात्र शोषण से मुक्ति का रास्ता है।

★

★ जिस आक्रोश के साथ सीएनटी-एसपीटी एक्ट संशोधन के खिलाफ जनप्रतिरोध आंदोलन चलाये, उसी तरह जनविरोधी भूमि अधिग्रहण कानून व धर्मांतरण कानून के खिलाफ जनप्रतिरोध आंदोलन को तेज करें!

पीएलजीए की महत्वपूर्ण कार्रवाइयों की रिपोर्ट

15 अगस्त, 2017 को 'झूठी आजादी दिवस' मनाया गया

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 15 अगस्त को बीजे-सैक अंतर्गत तमाम कमेटियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में व्यापक रूप से 'झूठी आजादी दिवस' मनाया गया।

मालूम हो कि 15 अगस्त, 1947 को ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद यानी अंग्रेजों की औपनिवेशिक गुलामी से प्रत्यक्ष तौर पर भारत को मुक्ति मिली थी, लेकिन यहां से जाते वक्त अंग्रेजों ने अपने विश्वस्त भारतीय दलालों को भारत की सत्ता सौंप दी। फलस्वरूप, अंग्रेजों के यहां से चले जाने के बाद भी आम भारतीय जनता गुलामी की जंजीरों में ही जकड़ी रही। हां, अब शोषक की चमड़ी गोरी से भूरी जरूर हो गई। इसीलिए इसे हमारी पार्टी अंग्रेजों से भारतीय शासक वर्ग के हाथों 'सत्ता हस्तांतरण' कहती है और प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को 'झूठी आजादी दिवस' मनाती है।

इस वर्ष भी 14 अगस्त की रात्रि में ही बीजे-सैक अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के विद्यालयों में हमारे पीएलजीए द्वारा काला झंडा फहरा दिया गया एवं झूठी आजादी का भंडाफोड़ करते हुए कई बैनर व पोस्टर को लगाया गया, सुबह में 15 अगस्त को विद्यालयों में जब शिक्षक सरकारी आदेशानुसार तिरंगा झंडा फहराने आया, तो काला झंडा फहरता देख व बैनर-पोस्टरों के माध्यम से हमारी बातों को पढ़ा, तो काला झंडा उतारकर तिरंगा फहराने की उनकी हिम्मत नहीं हुई। कई जगहों पर 15 अगस्त को दिन-भर काला झंडा फहरता रहा, तो कई जगह सीआरपीएफ के द्वारा 15 अगस्त की शाम में काला झंडा उतारकर तिरंगा फहराया गया। इस वर्ष हमारी पीएलजीए ने कई छोटे शहरों, मुख्य सड़कों व राष्ट्रीय राजमार्गों पर भी काला झंडा फहराया व बैनर-पोस्टरों के माध्यम से झूठी आजादी का भंडाफोड़ किया, जिसे कई समाचारपत्रों ने भी प्रमुखता से छापा।

पार्टी की 13वीं वर्षगांठ 21 से 27 सितंबर, 2017 तक मनाया गया

पार्टी की 13वीं वर्षगांठ पूरे हर्षोल्लास के साथ 21 से 27 सितंबर, 2017 तक बीजे-सैक के अंतर्गत तमाम कमेटियों के द्वारा मनाया गया। इस मौके पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की इआरबी द्वारा निकाले गये बुकलेट का व्यापक रूप से वितरण किया गया (बुकलेट पिछले अंक यानी अंक-34 में संपादकीय के बतौर दिया गया है) और वर्त्तमान समय में जारी जनयुद्ध को और तेज करने का संकल्प लिया गया। पार्टी स्थापना दिवस विभिन्न छापामार कैम्पों के अलावा छापामार क्षेत्र के कई गांवों में भी मनाया गया, जिसमें एक-एक कार्यक्रमों में 200 से लेकर 2500 जनता ने भी शिरकत किया। इस मौके पर सप्ताह भर छापामार क्षेत्र से सटे छोटे शहरों, मुख्य मार्गों व राष्ट्रीय राजमार्गों को बैनर-पोस्टरों से पाट दिया गया, जिससे समाचारपत्रों को भी सप्ताह भर स्थापना दिवस की खबरें छापनी पड़ी। इस बार डी-जोन में जनता के साथ मिलकर पीएलजीए द्वारा स्थापना दिवस मनाने की तस्वीर भी अखबारों में छपी।

बीजे-सैक में पार्टी स्थापना की 13वीं वर्षगांठ पर दुश्मन का घेराव-दमन व कई ऑपरेशन चल रहा था, लेकिन पीएलजीए व जनता की ताकत के सामने दुश्मन की एक न चली। व्यापक तौर पर स्थापना दिवस मनाने की खबरें सुनकर जनता में खुशी की लहर दौड़ पड़ी।

यू-जोन की रिपोर्ट

एसपीओ कालीचरण महतो का सफाया

बोकारो जिला के गोमिया थाना अन्तर्गत तिसकोपी गांव के कालीचरण महतो बहुत दिनों यानी 1993-94 से ही हमारी पार्टी का सफाया करने के लिए पुलिस के मिलकर काम करता था। उस समय जब हमारी पार्टी कमजोर थी, तो पार्टी को बदनाम करने के लिए हमारी पार्टी के नाम से डकैती भी करता था। फिर, हमारे बहुत सारे समर्थक जनता को मुखबिरी करके गिरफ्तार करवाया था। हमारे एक जन संगठन के कार्यकर्ता कामरेड भीम महतो की हत्या में भी इसका हाथ था। उसी समय ही जनता की राय के अनुसार, इसका सफाया करने का निर्णय लिया गया था। जब हमारा संगठन कुछ शक्तिशाली हुआ और ये समझ गया कि पार्टी हमको सफाया करेगा, तो गांव छोड़कर बहुत दिनों तक भाग गया। फिर जब हम कुछ कमजोर हुए और जब अगल-बगल पुलिस कैम्प व थाना बन गया, तो थाना से 500 मीटर की दूरी पर मकान बनाकर रहने लगा और पहले से और ज्यादा ही पुलिस के लिए काम करने लगा।

कई बार इनको इनके संबंधियों द्वारा समझाने का प्रयास किया गया कि पुलिस के लिए काम न करे। लेकिन उल्टे ध मकी देता था कि पार्टी तो खत्म हो गया है। दो-चार आदमी बचे हैं, ये लोग भी खत्म हो जाएंगे। इलाके के बहुत सारे एसपीओ ने जनता व पार्टी के सामने समर्पण किया, लेकिन ये अड़ा रहा और पुलिस के लिए काम करते रहा। इसलिए मौका पाकर पीएलजीए व जन मिलिशिया दल के साथियों ने 26.5.2017 को कालीचरण महतो का सफाया कर दिया।

एसपीओ राकेश महतो का सफाया

बोकारो जिला के महुआटांड़ थाना अन्तर्गत पुटकाडीह गांव निवासी राकेश महतो (उम्र-40 वर्ष) पार्टी समर्थक के रूप में पार्टी का काम-काज करते थे। पर, बाद के दिनों में यानी 2015 से पार्टी विरोधी गद्दार उदय महतो के सम्पर्क

में आकर करके एसपीओ का काम करने लगा और इस तरह से गद्दार उदय महतो के बहकावे में तथा रूपए पैसे के लोभ-लालच में पार्टी विरोधी तथा एसपीओ का काम करने लगे। पार्टी को खत्म करने के बूरे नीयत से पार्टी की गतिविधि के बारे में पता करना कि पार्टी वाले किधर और कहां रहते हैं, इसकी जानकारी हासिल कर पुलिसवालों को सूचना देने के लिए लुगू जेंलगा क्षेत्र का जिम्मा भी लिया यानी हर समय निगरानी रखना तथा पार्टी की गतिविधि का पता लगते न लगते तुरन्त पुलिस को खबर देने के मुखबिरी के काम में संलिप्त हो गया। कई बार इसके सूचना के अनुसार पुलिस द्वारा इलाके में आकर आमजनों पर जुल्म-अत्याचार ढाने की रिपोर्ट प्रकाश में आयी। कई बार तो दस्ता के साथियों को पुलिस द्वारा एम्बुश भी करवाया था, लेकिन साथी लोग सतर्क रहने के चलते बाल-बाल बच गये। फिर, पार्टी के नाम से लेवी भी उठाता था। जांच-पड़ताल के बाद राकेश महतो को दोषी पाने से हमारे पीएलजीए ने 24.8.2017 को ललपनिया के हीरक रोड में ले जाकर उसका सफाया कर दिया।

साथियों को जहर खिलाने वाले एसपीओ का घर ध्वस्त

बोकारो जिला के गोमिया प्रखण्ड के महुआटांड़ थाना अंतर्गत बलथरवा गांव के जयलाल महतो, जो पारा शिक्षक भी था और बहुत दिनों से एसपीओ का काम भी करता था। जयलाल एसपीओ का काम करता है, यह बात साथी लोग नहीं समझ पाये थे, क्योंकि उस गांव व अगल-बगल में जाने से वह बहुत सक्रिय रूप से काम करता था। उसके गांव में साथी लोग रहने से खाना-पीना वगैरह का वही व्यवस्था करता था। साथी लोगों का इतना विश्वासी बन गया था कि बाजार से भी इसी से सामान मंगाने का काम किया जाता था।

यह अपने नेतृत्व में एक टीम बनाकर पार्टी के नाम से लोगों को बुलाकर अपहरण कर लेता था और फिरौती लेकर छोड़ता था। पार्टी को इस बात का जब पता चला, तो जन मिलिशिया के साथियों को इन लोगों को पकड़ने के लिए सतर्क कर दिया। जब ये लोग एक आदमी से फिरौती का पैसा लेने के लिए गया, तो इनके टीम के एक सदस्य को जन मिलिशिया के साथियों ने पकड़ लिया। तब जाकर इनके टीम के सदस्यों का पता चला। इस टीम के सभी सदस्यों को जन अदालत लगाकर सुधरने का मौका देकर छोड़ दिया गया। लेकिन सुधरने के बजाय और बढ़-चढ़ कर पुलिस के लिए काम करने लगा। एक बार तो पुलिस बुलाकर साथियों को एम्बुश में फंसाया भी था। जिसमें एक साथी कामरेड देवलाल बेसरा शहीद भी हुए थे। इसके अलावे भी कई बार साथी लोग उधर जाने से पुलिस को खबर कर देता था, लेकिन इतना गुप्त रूप से ये सब काम करता था कि साथी लोग समझ नहीं पाये।

एक दिन जब साथी लोग उनके गांव में ठहरे हुए थे, तो पहले के जैसा ही साथी लोग जयलाल को ही खाना व्यवस्था करने के लिए जिम्मा दिये। जयलाल ने भी बोला कि तुरंत खाना लेकर आ रहे हैं। उधर खाना बनाने के लिए घर गया और झुमरा पुलिस कैम्प को भी खबर कर दिया। खाना लाकर साथियों को दिया, उसी में जहर भी मिला दिया था। साथी लोग भूखा रहने के चलते सभी कोई एक साथ ही खाने लगे। खाना खाने के बाद साथियों का हाथ-पैर काम कहीं करने लगा, तो साथी लोग समझ गये कि खाना में जहर मिला हुआ था। इसके बाद जब साथियों ने जयलाल से पूछा कि खाना में कुछ मिलाया है क्या? तो जयलाल वहां से भाग कर सीधे पुलिस के पास चला गया। साथी लोग किसी तरह से वहां से 2-3 सौ मीटर की दूरी पर चले गये। साथी लोग यहां से जैसे ही दूसरे जगह में गये, तुरंत ही पुलिस वहां आ गई। लेकिन साथी लोगों के कुछ दूर हट जाने के चलते पुलिस इन लोगों को नहीं खोज पायी। सुबह तक साथी लोगों का तबीयत ठीक हो गया। जब जयलाल ने देखा कि साथियों को कुछ नहीं हुआ, तो उसी समय से गांव छोड़कर भागा हुआ है। जयलाल के इस कुकर्म को जनता के बीच ले जाया गया। जनता व पार्टी के निर्णयानुसार उनके घर को 13.3.2017 को पीएलजीए के साथियों ने उड़ा दिया और उनके पूरे परिवार को तीन साल के लिए गांव से बहिष्कृत कर दिया।

बीजे सैक द्वारा ऐतिहससिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान विद्रोह की 50वीं वर्षगांठ पर सीएनटी-एसपीटी एक्ट में संशोधन के खिलाफ 23 मई से 27 मई तक घोषित विरोध सप्ताह व एक दिवसीय बंदी के दौरान संघर्ष की रिपोर्ट

1. 26 मई, 2017 बोकारो जिले के चतरोचट्टी थाना से महज दो सौ मीटर की दूरी पर स्थित तिसकोपी गांव में माओवादी आन्दोलन का दमन करने के उद्देश्य से केन्द्र सरकार के योजना के तहत माओवादी प्रभावित क्षेत्र घोषित कर मोबाइल टावर, रोड एवं पुल-पुलिया का व्यापक रूप से निर्माण की योजना चला रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल टावर लगाकर दुश्मन अपना नेटवर्क मजबूत कर रहा है। इसी नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए पीएलजीए योद्धाओं ने भी समय-समय पर मोबाइल टावर ध्वस्त करते हुए जनता की जनवादी सत्ता का निर्माण करने की ओर बढ़ रही है।

बीजे सैक द्वारा 23 मई से 27 मई, 2017 तक ऐतिहससिक नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान विद्रोह की 50वीं वर्षगांठ पर सीएनटी-एसपीटी एक्ट के खिलाफ घोषित विरोध सप्ताह के दरमियान पीएलजीए योद्धाओं ने बीजे सैक द्वारा दिये गये कार्यभार का पालन करते हुए तिसकोपी गांव में निर्मित बीएसएनएल के मोबाइल टावर को जलाकर राख कर

शेष पृष्ठ संख्या 44 पर

एक छापामार कैम्प में आयोजित पार्टी स्थापना की 13वीं वर्षगांठ समारोह की तस्वीरें

महान रूसी समाजवादी क्रांति के महान नेता
कामरेड लेनिन व कामरेड स्तालिन

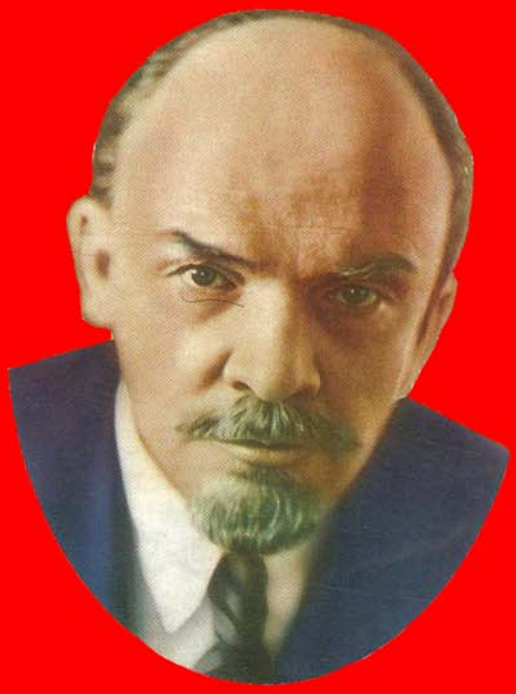

महान रूसी समाजवादी क्रांति की सौवीं वर्षगांठ
7 से 13 नवम्बर, 2017 तक हर्षोल्लास के साथ मनाएं!

हमारे देश भारत में जारी सशस्त्र कृषि क्रांति तथा दीर्घकालीन लोकयुद्ध को तेज करते हुए दुश्मनों के 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तहत चलाए जा रहे 'मिशन–2017' अभियान को परास्त करें!